
हदYOसव
मनोज Paण्डेय

हृदयोत्सव

प्रस्तुति

मनोज पाण्डेय

हृदयोत्सव

<u>प्रस्तावना</u>

दुनिया में जो सबसे सुन्दर परमेश्वर की कृती हैं वह स्त्रि और पुरुष हैं इनको ही पुरुष और प्रकृत कहते हैं और इनमें ही अद्भूत आकर्षण हैं जिसके कारण यह एक दूसरें को मरते दम तक आकर्षित करते हैं। इस अद्भुत आकर्षण को ही प्रेम के नाम से जानते है यह अद्भूत और अलौकिक है क्योंकि यह प्रेम ही है जो आपको एक ऐसे लोक में ले कर जाता है जिसकी आपने कल्पना नहीं कर सकते है। रहते तो आप संसार में हैं लेकिन आपको अनुभव किसी स्वर्ग में रहने के समान होता है। यह स्वर्ग का द्वार है इस प्रेम से हो कर लोगों ने अपने अन्तःकरण में विद्यमान परमेश्वर रूप देवी देवता कि यात्रा करते है यह मान व अस्तित्व को शुद्ध निर्मल और पवित्र बनाता है। यह सद्गुणों की खान है इसके आने से ही आपके जीवन में सत्य, दया, करुणा, मुदिता, आनंद की अनुभूती होती है, ऐसा इस लिए है क्योंकि यह प्रेम सिर्फ़ पवित्र और निर्मल हृदय में ही एक फुल की तरह से खिलता है। प्रेम कोई वासना नहीं है प्रेम शुद्ध हमारी आत्मा की खुशबु है, जबकी आज के समय में जिसको प्रेम के रूप में प्रचारित किया गया है। या किया जा रहा है वह मात्र शरीर के आकर्षण के कुछ भी नहीं यह प्रेम मुर्दा है इसमें आत्मा नहीं है, जिस प्रेंम में आत्मा होती हैं कुछ ऐसे ही प्रेमी प्रेमिकाओं के प्रेम की खुशबु से आपको सराबोर करने का इरादा मैं रखता हुं। यह हमारी प्राचिन आत्मा का विसद सागर है जिसमें गोते लगाने से सायद आपको भी अपने हृदय में विद्यमान अपने आत्मा का स्वाद मिल जाये। क्योंकि यह आत्मा के संगीत का प्रथम श्रोत हैं।

प्रेम सिर्फ़ इंसान या जीव मात्र के बीच नहीं होता बल्कि पानी की संगीतमय छल-छलाहट, हवा के लयबद्ध स्पंदन, दरख्तों की झूमती हुई डालियों, पत्तियों की मासूम मरमराहट, झरनों के फेनिल दूधिया

जल प्रपात और पुष्प के खिलने के रोमांच में भी प्रेम ही है। ये सब क्रियाएँ प्रकृति का अपने होने के एहसास और धरती पर प्रेम के अस्तित्व का मौन प्रस्तुतीकरण है। प्रेम एक एहसास है, प्रकृति के द्वारा जीव मात्र को दिया गया धरती का सबसे बड़ा वरदान। तमाम अनसुलझे सवालों का एकमात्र जवाब है प्रेम। विशुद्ध प्रेम वासना रहित होता है। प्रेम और हिंसा एक साथ नहीं रह सकते।

प्रेम उतना ही सरल उतना ही जटिल और उतना ही रहस्यमय है जितना जीवन और मृत्यु का तिलिस्म। प्रेम को किसी परिभाषा या शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। ना ही किसी उम्र, वर्ग, जाति, धर्म में इसे बांटा जा सकता है। ये तो मनुष्य मात्र के अपने दंभ और अवसाद हैं।

चित्रकला, नाटक, कहानियाँ, कविताएँ-प्रेम की अनुभूति, यात्रा और निष्कर्ष तो पेश कर सकती हैं लेकिन प्रेम का मर्म नहीं। प्रेम वही है जो सहज और सर्व स्वीकार्य है, हमारे यहाँ प्रेम और हिंसा साथ चलते हैं, लैला मजनू, शीरी फरहाद, अनारकली सलीम, शकुंतला दुष्यंत जैसे उदाहरणों में स्त्री-पुरुष प्रेम की पराकाष्ठा है। लेकिन उनके विरोधियों का व्यवधान इस प्रेम को हिंसक बनाता है। विरोधाभासी प्रेम की परिणति दुखद ही होती है, जबकि प्रेम तो सिर्फ़ शुरुआत है जिसकी कोई परिणति कोई अंत होता ही नहीं हैं। अंत सिर्फ़ देह का होता है प्रेम का नहीं होता है। प्रेम की ऐसी ही अद्भुत मिसालें यहाँ भरी पड़ी हैं जिनकी देह खो चुकी है पर प्रेम ज़िंदा हैं।

आचार्य मनोज पाण्डेय

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (हर.)

भूमिका

जीवन ज्ञान से बन रहा है, और यह जीवन एक सागर की तरह से है, जिसके दो किनारे हैं। एक अज्ञान है और दूसरा ज्ञान है, और यह जीवन रूपी सागर बहुत गहरा है। प्रायः संसार सागर में ऐसे लोगों की संख्या अधिक होती है, जो जीवन रूपी सागर की गहाराई में गोता लगाने कि तुलना में जीवन सागर की सतह पर तैरने में ही आस्था और विश्वास रखते हैं। इसके पिछे मुख्य कारण है कि लोगों को इसके लिए ही तैयार किया जाता है, इसी को संस्कार और शिक्षा कहा जाता है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो जीवन के विशाल शागर में गोता लगाते हैं, और इस कला में महारत हाशिल करते हैं। जो जीवन सागर के सतह पर ही तैरते हैं वह बहुत प्रकार कि लौकिक समृद्धि को उपलब्ध करने में समर्थ होते है। दूसरें जो जीवन रूपी सागर गोता लगाते है, उनको आंतरिक और बाहरी अर्थात लौकिक और पारलौकिक दोनो प्रकार की समृद्धि प्राप्त होती है। जो उनकी एक पिढ़ी से दूसरी पिढ़ी में हस्तारंतरित होती है। जिसमें से एक तरह के दैवता और दूसरें दैत्य किस्म के होते हैं। अब आप स्वयं निर्णय किजियें कि आप किसकी संतान हैं देवता कि हैं या फिर दैत्य की हैं । जैसा कि हम सब जानते हैं कि इस संसार रूपी भवसागर में दैत्यों की संख्या सबसे अधिक है। और उनकी संताने भी बहुत अधिक है और उनके

पास भौतिक समृद्धि भी अधिक है, जबकि इसके विपरित देवता की संख्या बहुत कम है। और उनके पास उतनी समृद्धि भी नहीं होती है। क्योंकि वह पारलौकि समृद्धि के विस्तार पर विशेष ध्यान देते हैं और वह आंतरिक तृप्त और संतोष प्रिय होते है, वह अपने आनंद के श्रोत अपनी आत्मा से जुणे होते हैं। यहां संसार में हम सभी लोग देवता बनने का प्रयत्न करने के लिए ही उपस्थित हुए हैं। और यह तभी संभव होगा जब हमें जीवन की बहुमुल्यता का ज्ञान होगा। और जीवन की बहुमुल्यता है? इसके लिए हम कह सकते है, कि वह जीवन की खुशबु जिसे धर्म कहते हैं, धर्म का मतलब किसी हिंदु, मुस्लिम, सिख, इसाई, या बौद्ध से नहीं है। धर्म का मतलब है कि जिसे आत्मा धारण करती है, अर्थात जो आत्मा के होने के लक्षण है जिसके द्वारा ही हमें ज्ञान होता है कि देवता कौन है और कौन दैत्य है? धर्म के दश गुण बतायें गये है जिसमें धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, धी, विद्या, सत्या अक्रोध हैं। और जो इनके धारण करते हैं वह देवता कि कोटी में आते हैं, और जिसमें इसके विपरित गुण आता है जैसे अधैर्य, अक्षमा, अदम, स्तेय, इन्द्रियस्वच्छंदता, मुर्खता, अविद्या, असत्य, क्रोधादि गुण हैं वह दैत्य की श्रेणी में आता हैं। जो देवता होते हैं और धर्मात्मा किस्म के होते हैं उनमें ही इन शुभ अर्थात सद् गुणों के फल स्वरुप ही प्रेम, दया, करुणा, उपासना, उपेक्षा, मुदिता जो आनंद के प्रमुख श्रोत हैं वह फलित होते हैं। इसके विपरित जो दैत्य कोटी के होते हैं उनमें अप्रेम, धोखा, छल, कपट, राग, द्वेष विद्वेश इर्श्या आदि गुण सृजित होते हैं। जो जीवन को और जीवन सागर को खतरनाक और प्रदूषित करते हैं, जिससे संसार सागर में जो अनंत जीवन हैं उनके उपर संकट आजाता हैं और उनका जीवन अत्यंत दुःख मय बन जाता है। इस लिए हम सब का धर्म हैं कि मानवता के उत्थान के लिए जीवन सागर को प्रदुषित होने से बचाने का निरंतर यथा शक्ती पुरुषार्थ करना चाहिए। और इसमें जो सबसे अचुक साधन रूप हैं जो एक दूसरें के ह्दय को रोकने वाला है वह प्रेम ही है । क्योंकि इसके अतिरिक्त कल्याण का कोई दूसरा मार्ग नहीं है और यही जीवन की बहुमुल्यता है।

इस तरह से हम अपने जीवन के बहुमूल्य समय को ऐसे ही बीना प्रेम के क्यों खराब कर रहे हैं? जब कि यह जानते हो कि हमारा समय ठिक नहीं चल रहा हैं। (मतलब जिस संसार में दुःख पिड़ा और राग द्वेश है) इसलिए आपको इसके लिए सावधान रहने की ज़रूरत है। आज के आधुनिक जगत में समय के किमत को कैसे नकार सकते हैं? मैं आपको सलाह दे रहाँ हूँ कि आप कुछ रचानात्मक कार्यो को कीजिये, जिससे आप अपने जीवन का जो कुछ समय बचा है। उससे इस नस्वर संसार में स्वयं को कुछ समय के लिए यादगार बना सको और आपके किये हुए कार्य से इस संसार में कुछ लोगों का कुछ फायदा हो सके, और इससे ही आपके जीवन की सर्थकता सिद्ध होगी। मेरी बात को आप अच्छी तरह से समझ रहे हैं ना, मैं ऐसा समझ सकता हूँ। क्योंकि यह जगत परमेंश्वर कृत है और इस परमेश्वर के जगत में आपको इसलिए उत्पन्न किया गया है कि आप इसमें सहयोग अपने कुछ शुभ कर्मो के द्वारा कर के, अपने और इस जगत के लिए कुछ कर सके, अर्थात अपने योगदान से संसार के ऋण से उऋण हो सकते हैं। अंयथा इस कर्ज को उतारने के लिए इस मृत्युलोक में आना ही होगा।

हमें सफलता क्यों नहीं मिलती है किसी कार्य में, क्योंकि हम हमेंसा सरल और आसानि के मार्ग पर बिना परिश्रम के ही सफलता को प्राप्त करना चाहते हैं। इसलिए ही हमे अपने जीवन में बार-बार

असफलता का मुंह देखना पड़ता है। हम बार-बार असफल होते हैं और फिर भी अपनी गलती को नहीं सुधराते है!

संसार में सफल होने के कुछ आसान तरिके सर्वप्रथम आपको लोगों से हट कर कार्य करना होगा, जिस कार्य को या जिस विषय पर लोग पहले से ही बहुत कुछ बोल चुके हैं उसी विषय पर बोलते हैं, तो वह कोई असाधरण बात नहीं होगी। आप को वह कार्य करना होगा, जिसको कोई दूसरा नहीं करता है। जो दूसरों से कुछ अलग और नया हो, जिसकी तरफ दुनिया अपने आप बहुत जल्दी आकर्षित होगी और जिससे आपको बहुत जल्दी समाज में किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। सबसे पहले आपको यह देखना होगा कि आपकी रुची किस तरफ सबसे अधिक है और उस क्षेत्र में देखिये कि लोग क्या-क्या और किस प्रकार से कर रहें हैं? उदाहरण के लिए जैसे आप चिकित्सा के क्षेत्र में हैं और लोग उसी पुराने तरिके से इलाज कर रहें हैं। वहीं आपरेशन करना और सुई लगाना, टैबलेट खिलाना या पानी चढ़ाना, तो आपको इनसे हट कर कुछ ऐसा करना होगा, जैसे लोगो को आपरेशन कराने की ज़रूरुत ना पड़ें और ना ही गोली खानी पड़े, या फिर ना हि बोतल ही चढाना पड़ें। फिर भी आपको इलाज करना होगा बिना इसके वह कैसे संभव हैं? उसके लिए आप प्राकृतिक चिकित्सा का सहारा ले सकते हैं और इसमें कुछ क्रांतिकारी परिवर्तन कर सकते हैं।

जहाँ तक मैं समझता हु इस संसार की प्रत्येक बीमारी का इलाज है और सारी बीमारी का इलाज केवल एक है वह परमेंश्वर के प्रेम की घुंटी जिसको पीने मात्र से मानव जीवन में हर प्रकार का असाध्य से असाध्य रोग भी ऐसे लुप्त हो जाता है जैसे गर्म तावे पर पानी की बुदें वास्प बन कर आकाश में प्रस्थान कर जाती हैं। या फिर जैसे सूर्य के प्रकाश होने से अँधेरा गायब हो जाता है, या फिर जिस प्रकार से जब हमें ज्ञान होजाता है तो हमारा अज्ञान हमारें जीवन से दूर भाग जाता है। हमें ज्ञान के ज़रूरत हैं और ज्ञान के लिए जीवन से प्रेम होना आवश्यक है, जीवन में ज्ञान है जब जीवन में प्रेम के प्रति समर्पण होता है तो ज्ञान का उदय होता है। जहाँ तक मेरा इस संसार और इस संसार में सम्बंध का अनुभव हैं जिसमें प्रेम नाम मात्र का भी नहीं है। लोग भयंकर असाध्या काम कि वासना की बिमारी से ग्रस्त हैं। जिसको ही प्रेम के नाम से प्रस्तुत करते हैं, लोगों की समझ में सिवाय भौतिक पदार्थों की चमक-दमक के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखाई देता है। जिसके कारण ही यह जीवन जो स्वर्ग के समान है और लोग ने इसे नरक में तब्दिल कर लिया हैं। और दूसरों के लिए भी नरक के बिस्तार में महत्त्वपूर्ण भुमिका निभा रहें है। यहाँ दो तरह के लोग हैं एक भौतिक सुख सुविधा समपन्न हैं जो आंतरिक रूप से कंगाल और खोखले हैं जैसे कहावत “खाली चना बाजे घना”, और दूसरे वह है जो भौतिक शुख सुविधा से शुन्य हैं वह भी कंगाल ही है यह दोनो अपना कंगाली को दूर करने के लिए संसार में पागलों की तरह से भ्रमण कर रहें है। एक तीसरे तरह के भी लोग है जो मध्यवर्गिय हैं जिसनकी संख्या भारत में सबसे अधिक है। वह ना तो भौतिक सुख सुविधा से पूर्णतः समपन्न हैं, और ना पूर्ण रुपेण कंगाल ही है यह लोग अपने अहंकार के कारण भयंकर अज्ञान ग्रस्त है। और तरह-तरह के पाखंड को जीवन में सामिल कर लिया हैं जिसके कारण इनके आँखों के सामने अँधेरा छा चुका है। जिससे यह किसी प्रकार का निर्णय करने में असमर्थ है।

मैं एक ऐसे व्यक्ति को बारें में जानता हुं जो अपने जीवन में अत्यधिक अतृप्त और अशांत रहता था जिसके कारण वह स्वार्थी बन गया और उसने अपने और अपने परिवार को लग-भग बर्बाद कर दिया, और स्वयं पागल और विक्षिप्त का जीवन जी रहा है। जिसके दो पुत्र थे जिससे वह कभी तृप्य नहीं रहा उनसे सदा अशांत रहता था, जिसके कारण वह उन्हें तरह-तरह से प्रताड़ित करता रहा जिसके कारण ही उनका विकास नहीं हो सका। क्योंकि उसके समान उसके पुत्र भी समाज की धार से नहीं जुड़ सके और अपने जीवन को युं ही व्यर्थ और निर्थक व्यतित कर रहें हैं।रोज मर-मर कर जी रहें हैं, उनके जीवन में बहुत भयानक अतृप्त और निराशा ने घर कर लिया है। वह अपने शरीर से ही परेशान रहते है, तो इस तरह से इस एक व्यक्ती ने अपने साथ अपने पुत्रों के जीवन को भी लग-भग बर्बाद और नष्ट कर दिया। दूसरी तरफ इसी आदमी का बड़ा भाई है जिसका जीवन सुख मय और हर प्रकार की खुशियों से भरा है उसका कारण मैं समझता हुं कि उनके जीवन में समझ और प्रेम था अपने परिवार के प्रति इमानदारी और सहानुभुती थी जो भी उनके पास था उसमें ही उनको संतोष था, जिसके कारण उनका जीवन सुख और ऐश्वर्य पूर्ण गुजर रहा है।

तो इस प्रकार से जीवन को जीना एक कला है इसको सब नहीं जी पाते है जिस प्रकार से एक बैर का पेड़ होता है उसके दो पुत्र होते है एक कांटा होता है जो सभी को चुभता है, दूसरा स्वयं बैर का फल होता है जो सबको प्रिय होता है। हमें भी ऐसा प्रयाश करना चाहिय कि हम स्वयं के लिए और दूसरों के लिए भी मिठे और स्वादिष्ट फलों की तरह से बन पायें, जहाँ तक मेरा अनुभव हैं मैंने संसार से बहुत अधिक नफरत को पाया है। जिसके कारण ही मुझको प्रेम अधिक रस आता हैं और वह मुझे आकर्षति करता हैं, जिसके कारण ही मैंने बहुत धोखे और विश्वासघात को भी प्राप्त किया हैं, लेकिन इसको मैंने सकारात्मक लिया और स्वयं के उत्थान के लिए उपयोग किया और अपने विरोधी ताकतो को परास्थ कर के अपने स्वयं के दम पर स्वयं को स्थित कर लिया हैं जहां पर किसी से ना किसी प्रकार कि आशा हौ और ना हि किसी से किसी प्रकार की निरासा ही हैं। क्योंकि मुझको इसमें कुछ सुकुन मिलता है और मैं चाहता हुं कि लोग भी अपने जीवन में कुछ सकुन के पलों के जीये। संसार की मारा मारी तो सनातन हैं यह जीवन के अंत तक नहीं समाप्त होगी, यहाँ तो बदला और प्रतिसोध की भावन का सागर बह रहा है। जिसमें घुंट-घुंट कर आदमी का दम निकलता है। क्योंकि हर आदमी यही समझता है कि उसके साथ समाज में अन्याय हो रहा है या परिवार में अन्याय हो रहा है, या फिर परिवार के द्वारा माता पिता के साथ अन्याय किया गया है। जिसके कारण ही हमारें जीवन में दुःख पिड़ा और संताप के साथ क्लेश है। जो भी है सत्य यह है कि आप है और आप अपने आप से प्रेम करने के लिए स्वतंत्र है इसके लिए आपको कोई भी नहीं रोक सकता है, ज़रूरी नहीं हैं कि प्रेम किसी स्त्री से और पुरुष के साथ किया जाता है। वास्तव में प्रेम एक गुण है जो आत्मा से हमारी शरीर में पुस्पित होता है प्रेम को सृजित होने के लिए हमारी शरीर को पृथ्वी के समान बनना होगा। जिस प्रकार से बंजर और उसर जमिन में कोई बीज अंकुरित नहीं होता है। उसी प्रकार से एक अहंकारी पुरुष या स्त्री के शरीर में प्रेम का सर्जन नहीं होता है, वह जिस वस्तु को अपने जीवन में प्रेम को समझते हैं वह वासना और मोह के अतिरिक्त कुछ नहीं है। जहाँ तक मैं समझता हुं कि मोह और माया और अज्ञान एक दूसरे के पुरक है। यद्यपि प्रेम, प्रतिज्ञा, समर्पण और ज्ञान एक दूसरें के पुरक हैं। यह ज्ञान शास्वत ज्ञान हैं जो आत्मा से सिधा-सिधा प्रकाशित होता है। इसको हर कोई समझने में समर्थ नहीं होता है कुछ ही लोग इसको समझने में

समर्थ होते हैं उनकी ही यह प्रेम कथा है। जिस प्रकार से हम सब इस ब्रह्माण्ड में एक गुरुत्वाकर्षण को देखते और पाते हैं जिनके कारण ही सभी ग्रह, नक्षत्र और तारों के साथ आकाश गंगा और कई ब्रह्मम्ड अपने नियत मार्ग पर गति करते हैं जिसके कारण ही वह सब एक दूसरें से कभी टकरातें नहीं है यद्यपि एक दूसरें के सहयोग के साथ अपने जीवन चक्र को पुरा करते हैं। उसी प्रकार हम सब का भी जीवन हैं और हम सब भी ग्रह, तारें, नक्षत्र, और ब्रह्माण्ड के समान हैं और हम सब को भी एक साथ बंधने वाला जो गुण है जिसे हम सब प्रेम कहते हैं वह गुरुत्वाकर्षण की तरह से काम करता है।

सभी जानते हैं कि मुमताज़ अपनी संतान को जन्म देने के दौरान असमय चल बसी थी और बेहद मुहब्बत करने वाले शाहजहाँ ने अपनी महबूबा अपनी बीवी की याद में विश्व प्रसिद्ध ताजमहल बनवाया था ताकि ये मुहब्बत की मिसाल बन सके, कहा जाता है कि लाजवाब ताजमहल बनाने के बाद कारीगरों के हाथ काट दिये गए थे, ताकि वह दुबारा ऐसी अनमोल कृति नहीं बना सकें, शाहजहाँ नहीं चाहता था कि उसने अपनी मुहब्बत का जो स्मारक अपने अहसासों और अपनी महबूबा के खो जाने की पीड़ाओं के साथ बनावाया है। उस प्रेम की कोई अश्लील नकल कर सके, लेकिन शाहजहाँ मुमताज़ की कहानी यहीं खत्म नहीं होती है। गौरतलब है कि उसके बेटे औरंगजेब ने अपने वृद्ध पिता शाहजहाँ को कैद में डाल दिया था और जिस कोठरी में शाहजहाँ को कैद किया था वह ठीक उसकी बीवी मुमताज़ की कब्र के सामने थी जहाँ खिड़की से देखकर अपनी बीवी मुमताज़ की याद में वह डूबा रहता था। वहाँ उसकी देखभाल करने के लिए सिर्फ़ एक बूढ़ा और पुराना नौकर था जो शाहजहाँ को देख-देख कर दुखी होता था। एक दिन शाहजहाँ ने नौकर से ज़हर मांगा कि अब वह जीना नहीं चाहता तब उस स्वामीभक्त और एकमात्र साथी ने एक तरकीब निकाली, वह अपने बादशाह को रोज़ सुबह शाम उसके और बीवी मुमताज़ के मुहब्बत के किस्से सुनाता, उन खुशनुमा दिनों की याद को तरोताज़ा करता जिससे शाहजहाँ यादों में डूब जाता था और उसका दुःख हल्का हो जाता था प्रेम की ताकत का इतना खूबसूरत उदाहरण कम देखने को मिलता है।

आज के सामाजिक वातावरण में जब रिश्ते नितांत औपचारिक और अविश्वसनीय होकर रह गए हैं, आये दिन एक आम दंपत्ति से लेकर ख़ास तबके तक में तलाक की घटनाएँ सुनने को मिलती हैं, वृद्ध माता-पिता की दुर्गति और रिश्तों में आई खटास देखने को मिलती है, वहीं प्रेम की कुछ अद्भुत मिसालें कड़ी धूप में ठंडी बौछारों की भांति निर्मल शीतलता की उम्मीद जगाती हैं।

विश्व प्रसिद्द लेखक नेरूदा माल्तीदा और मार्कस्वाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स व् जेनी मार्क्स ने भरपूर समर्पण के साथ जीवन व्यतीत किया तो महान लेखक चेखव और लीडिया एविलोव का प्रेम असफल रहा।

कार्ल मार्क्स जिनकी नीतियों और विचार का एक सम्पूर्ण युग की तरह स्मरण व अनुसरण किया जाता है उन महान और क्रांतिकारी व्यक्ति के जीवन के सबसे कमज़ोर लम्हे वह थे जब १८८० में मार्क्स की पत्नी जेनी को जिगर का कैंसर हो गया था। जब वह जीर्णकाय हो गईं व बिस्तर से उठने लायक नहीं रह गयीं थी। तभी मार्क्स को प्लूराईतास व निमोनियाँ हो गया। मार्क्स के लिए सम्बसे भयंकर यातना ये थी कि उनकी प्रेयसी उनकी पत्नी जेनी उनके बगल के कमरे में अंतिम साँसें गिन रही थी। मार्क्स की बेटी एलेओनोरो ने अपने संस्मरण में लिखा ' वह सुबह मैं कभी नहीं भूलूंगी जब पिताजी के

शरीर में इतनी ताकत आई कि वह उठकर माँ के कमरे में जा सकें। दोनों मिलकर फिर से जवान हो गए, संग-संग जीवन में पदार्पण कर रहे प्रेमी युवक-युवती ही थे वे, न कि रोग से टूटा वृद्ध औए मरणासन्न वृद्धा, जो सदा के लिए एक दूसरे से विदा ले रहे थे। "

अपने नाटक 'एक्सीडेंटल डेथ ऑफ एन एनार्किस्ट' पर नोबेल पुरस्कार पाने वाले दारियो फ़ो और उनकी पत्नी सोशल एक्टीविस्ट और नाटककार फ्रांका रामे का प्रेम भी एक अद्‌भुत मिसाल है। उल्लेखनीय है कि १९७३ में फासीवादियों द्वारा डेरियों फो की पत्नी रामे का अपहरण कर लिया गया था और खून में लथपथ सड़क पर फेंक दिया गया था। इसके बावजूद पति पत्नी ने हार नहीं मानी और वे नाटकों को लिखने व मंचित करने में जुटे रहे थे। तमाम राजनितिक विरोधों, पीड़ाओं व दुर्घटनाओं के बावजूद उन दोनों ने एक दूसरे का साथ कभी नहीं छोड़ा। सन २०१३ में रामे का निधन हो गया था। न सिर्फ़ एक सार्थक लेखन करने और नोबेल पुरस्कार तक पहुँचने के लिए बल्कि एक दूसरे के लिए समर्पित दंपत्ति के उस अद्‌भुत प्रेम के लिए भी इन्हें याद किया जाएगा।

अलौकिक प्रेम की कहानियाँ कृष्ण मीरा की तरह हिन्दुस्तान में ही नहीं बल्कि इससे भी अनोखी दास्तान इतिहास में मिलती है। जैसे वॉर एंड पीस और अन्ना केरेनीना जैसी महान कृतियों के लेखक टोलसटॉय और द लास्ट सपर, मैडोना ऑफ़ द रोक्स और विश्व प्रसिद्द रचना मोनालिसा के अद्‌भुत कलाकार लियोनार्दो दा विन्सी का प्रेम यद्यपि एक लेखक है और दूसरा कलाकार लेकिन दोनो में एक अद्‌भुत समानता हैं। दोनों ने ही अपनी स्वयं गढ़ी गयी कृतियों से इस क़दर प्रेम किया कि ताउम्र उतना प्रेम किसी जीवंत स्त्री को नहीं कर पाए. टालस्टॉय इस उपन्यास के दौरान अपनी नायिका अन्ना के प्रेम में डूब गए थे। एक विवाहित स्त्री के प्रेम से कहानी निर्लिप्त भाव से शुरू होती है लेकिन धीरे-धीरे ये महसूस होने लगता है कि अन्ना के प्रति उनके हृदय में कोई कोमलता है, जो आहिस्ता-आहिस्ता विवशता और अवसाद में बदलती जाती है। सामाजिक, पारिवारिक, ममत्व आदि की विसंगतियाँ व असुरक्षा का मिला-जुला भाव और अंततः वह आत्महत्या कर लेती है।

अन्ना' कोई जीवंत चरित्र नहीं, उसे लेखक टोलस्टोय ने अपनी कल्पना से गढ़ा था लेकिन उनकी ये काल्पनिक प्रेमिका का अंत में आत्महत्या कर लेना लेखक के अवसाद को दर्शाता है। वहीं विन्सी के बारे में कहा जाता है कि उनकी अनेक कृतियाँ यहाँ वहाँ पडी रहती थीं लेकिन अपनी विश्व प्रसिद्ध और चर्चित मोनालिसा की कलाकृति को ताउम्र (२ मई १५१९ तक) उन्होंने अपने से अलग नहीं किया उसके प्रेम में डूबे रहे, वह जहाँ गए उसे अपने साथ लेकर गए, उस कृति से उन्होंने मृत्यु पर्यंत अटूट प्रेम किया। विश्व प्रसिद्ध लेखक मार्खेज़ के बारे में भी कहा जाता है कि अपने एक उपन्यास की नायिका की मृत्यु के बाद वह फूट-फूट कर रोये, मीरा और कृष्ण के प्रेम को इस दृष्टि से देखा जा सकता है लेकिन कृष्ण की छवि मीरा के मन में पहले से थी और इन महान रचयिताओं ने अपना प्रेम खुद गढ़ा और जीवन पर्यंत उससे लिप्त रहे।

सुप्रसिद्ध अस्तित्ववादी, दार्शनिक, उपन्यासकर, नाटककर, ज्याँ पाल सात्र और स्त्री मुक्ति आंदोलन की प्रणेता सिमोन द बोउआर का प्रेम भी एक अद्‌भुत मिसाल है, ज्याँ पाल सात्र एक मनमौजी और आज़ाद ख्याल इंसान थे। शराब के बेहद शौकीन सात्र के अनेक स्त्रियों से सम्बंध रहे

लेकिन भावनात्मक रूप से वे एक ही स्त्री के साथ जुड़े, वे थीं सिमोन-सिमोन को भी उनके अन्यत्र रिश्तों से कोई आपत्ति नहीं रही। उनके स्वयं के अनेक पुरुष मित्र थे। सन १९२९ के बाद सिमोन और सात्र जीवन पर्यंत एकसाथ रहे लेकिन उन्होने विवाह नहीं किया। जीवन के आखिरी दिनों में नशे के वे अभ्यस्त हो गए और चौबीसों घंटे नशे में रहते। १९ मार्च १९८० को उन्हें सांस में तकलीफ हुई और उन्हें अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। मृत्यु से दो दिन पहले सिमोन ने डॉक्टर से रोकर कहा 'डॉक्टर, वादा करिए कि सात्र को अंतिम समय तक ये महसूस नहीं होने दोगे कि वे मर रहे हैं। उन्हें किसी भी प्रकार की मानसिक तकलीफ या शारीरिक पीड़ा नहीं होने दोगे। मृत्यु से कुछ घंटे पहले सात्र ने सिमोन को अपने पास बुलाया और हाथ थामकर कहा' मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ'। उन्होंने सिमोन को अपने निकट बुलाकर उसे चूमा, जब सात्र नहीं रहे तब सिमोन उनकी मृत देह के पास कुछ देर लेटी रहीं।

६२ वर्षीय ओपरा का जन्म मिसीसिपी अमेरिका में हुआ। पांच वर्ष की आयु में ही माता-पिता में तलाक हो गया और दौनों ने ही ओपरा को त्याग दिया। तब उस पांच वर्ष की बच्ची का पालन पोषण उसके दादी-दादी ने किया। युवा होने पर उनकी माँ उन्हें अपने साथ ले गईं लेकिन वहाँ उन्हीं के ख़ास रिश्तेदारों ने उनका यौन शोषण किया। तब वहाँ से भागकर वह अपने पिता के पास चली गईं। पिता को उन की इस स्थिति को देखकर बेहद दुःख हुआ। वह अनुशासन प्रिय और मितभाषी थे। उन्होंने ओपरा को बहुत समझाने की चेष्टा की लेकिन स्थिति तब तक काफी खराब हो चुकी थी। ओपरा की कुंठाओं और नाजायज़ रूप से गर्भधारण करने के अवसाद ने उनका जीवन छिन्न भिन्न कर दिया। उनके असंतुलित और अराजक बचपन जिसे वह भूल नहीं पाई और जिसकी बदौलत वे मादक पदार्थों के सेवन की आदी हो गईं, विद्रोह और क्रोध उनके स्वभाव में आ गए. पिता के लिए उनकी बेटी का ये स्वभाव व आदतें असहनीय और तकलीफदेह थीं। तब उन्होंने ओपरा को बहुत प्यार से पढ़ाई के लिए समझाया और कॉलेज में दाखिला दिलवाया। उन्हें भरपूर स्नेह दिया। स्नातक की डिग्री मिलने के बाद वे पत्रकारिता में रूचि लेने लगीं। इस नाजुक मोड़ पर पिता उनके भावनात्मक सम्बल बने। नतीजतन ओपरा का ध्यान कुछ सार्थक और सकारातमक दिशा की और मुड़ने लगा। वे मीडिया से जुड़ गईं और १९ वर्ष की आयु में अमरीका में टीवी पर काम करने वाली पहली अश्वेत महिला बनी। उनकी प्रसिद्धि शिकागो के एक टीवी शो एम् शिकागो नामक कार्यक्रम से हुई. ये शो टीवी के इतिहास के सफलतम तथा उत्कृष्ट टॉक शो में शुमार हुआ। इस शो की खासियत ये थी कि इसमें ओपरा अपने दिल की बात करती हैं और लोगों को परामर्श देती हैं। उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। वे सफल अभिनेत्री और द ओपरा मैगजीन की संस्थापक और पत्रकार हुईं। सामाजिक कार्यकर्ता और लोगों के जीवन को दिशा देने सम्बंधी कार्यों के लिए उन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाज़ा गया, सम्मान दिए गए. फ़ोर्ब्स के सबसे धनी व्यक्तियों की सूची में उनका नाम भी है। ओपरा के इस जीवन चक्र में कुछ ख़ास बातें हैं जैसे उनकी माँ जो स्त्री और माँ होते हुए भी फिर कभी उनकी ज़िंदगी में वापस नहीं आईं। ओपरा की इन तमाम उपलब्धियों की मूल वजह उनके पिता थे जो इसी सार्वभौमिक पित्रसत्ता की पैदाइश थे। पिता के अंतिम शब्द थे 'मैं इस दुनिया का सबसे दुर्भाग्यशाली पिता होता यदि अपनी पुत्री को सही राह पर लाने में असफल रहता।' वहीं ओपरा ने अपने भाषण में कहा 'मैं आज जो भी कुछ हूँ सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने पिता के प्रेम के कारण हूँ।' इस जीवनी से सिद्ध यही होता है कि ऐसे प्रकरण अपवाद कतई नहीं होते हैं।

हृदयोत्सव

न सिर्फ़ मनुष्य-मनुष्य के बीच प्रेम का अस्तित्व है बल्कि जानवर भी प्रेम की भाषा समझते पहचानते हैं मनुष्य की भले ही ना समझें। जानवरों के प्रेम अद्‌भुत होते हैं। बहुत पहले अंग्रेज़ी की एक कहानी पढ़ी थी जिसमे एक गाय का बछड़ा एक गहरी खाई में गिर जाता है। गाय बहुत देर तक उसके आसपास के टीलों, मैदान में भागती रहती है, बार-बार वह खाई में झाँककर देखती है जहाँ उसका बछड़ा मर चुका है और अंत में वह खुद खाई में छलांग लगा देती है। माँ-माँ होती है, रिश्ते खांचों में नहीं बाँट सकते।

प्रेम न मनुष्य और पशु में भेद करता है ना ही सरहदों में यकीन करता है। बल्कि भौगोलिक, जाति, धर्म की सब सीमाओं को अतिक्रमित कर वह अनवरत और बिना रुके बहता रहता है। दिल से दिल तक आत्मा से आत्मा तक। प्रेम के विषय में यही कहा जा सकता है कि प्रेम स्वच्छंद दुनिया है उसे शब्दों, सरहदों और जीव विशेषों में टुकड़े-टुकड़े नहीं किया जा सकता।

आचार्य मनोज पाण्डेय

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर (हर.) भारत

प्रेमकथा नम्बर १

सूर्य कि पहली किरण का प्रकाश

जो हम सब प्रणियों को संसार के सभी प्रकार के संकटों से मुक्त करने वाले त्रिकालदर्शि भगवान शिव हैं, जिनको हमारा बारंबार नमस्कार हो, जो हम सबके हृदय के अन्तर्यामी हैं और जो हमारें बारें में सब कुछ जानने वाले हैं। हमसें स्वयं अपने आप को जानने में कुछ भूल हो सकती हैं, लेकिन वह सब कुछ देखते हैं, उनसे संसार का कुछ भी नहीं छुपा हैं वह तीनो कालों को एक साथ देखने में समर्थ हैं। जिसके कारण ही दूसरें देवता भी उनसे अतिसय प्रेम करते हैं। वह अपनी आखों कि शक्ति से सभी प्रकार के अंधाकर, अज्ञान और दुस्कर्म को भष्म करने वाले हैं। जिनको कभी विषय को समझने में किसी प्रकार के भ्रम नहीं होता है। इन्ही सब गुणों को जानकर फुलों के समान ब्रह्माण्ड सुन्दरी पार्वती हमेशा उनके प्रेम में समर्पित रहती हैं। इन दोनो को मैं हमेंशा अपने हृदय के आसन पर विराजमान करके अपने दोनो हाथो से जोड़कर उनके चरणों में बारंबार बंदन करता हूँ।

कुछ समय पहले कि बात हैं, भारत के एक राज्य में एक मुर्ख किस्म का राजा था, जिसके पास दो प्रकार के संसाधन थे जिससे वह बहुत अधिक प्रेम करता था। पहली वस्तु उसके पास अपनी एक तलवार थी जिसको वह हमेशा अपने साथ ही रखता था, यहाँ तक अपने साथ अपने विस्तर पर भी रख कर ही सोता था। इसके अतिरिक्त उसका शत्रु उससे अधिक ताकतवर था, इसके साथ उसकी स्वयं

की एक अत्यधिक सुन्दर पुत्री थी जो बहुत ही अधिक चालक थी। जैसा कि हम सब जानते हैं कि उसका शत्रु उससे बहुत अधिक ताकतवर अर्थात मजबुत था। और उसकी पुत्री उसके राज्य में बहुत अधिक चालाक औरतों में से एक थी। इसके अतिरिक्त राजा का शत्रु अभी काफी युवा था और मुर्ख राजा की चालाक पुत्री अभी तक अविवाहित थी। अपने विस्तर पर पड़े-पड़े मुर्ख राजा चिंचन कर रहाँ था कि इन दोनो का क्या किया जाये? क्योंकि उसको इन दोनों से बहुत अधिक मानसिक भय था जो उसको रात में सोने नहीं देता था। ऐसा ही काफी समय से चल रहा था। काफ़ी अपना दिमाग दौड़ाने के बाद राजा के दिमाग में इस समस्या का एक समाधान समझ में आया। अंत में एक रात को राजा अपने निद से उठ कर अपने विस्तर पर बैठ गया और बड़े जोर से चिल्लाते हुए कहने लागा कि आज मैं समझ गया कि मुझको क्या करना चाहिए? मैं जहर को अमृत में मिला दुंगा, अर्थात अपनी पुत्री की सुंदरता के समन्दर के जल को अपने शत्रु के क्रोध की दहकति हुई ज्वाला के उपर उड़ेल दुंगा, जिससे उसके अंदर जो हमारे प्रति क्रोध की अग्नि जल रहीं है, वह बुझ जायोगी। इस तरह से मेरी दोनो समस्या का समाधन हो जायेगा और मैं अपने राज्य को अपने दोनो शत्रुओं से बचा लुंगा, अर्थात एक तीर से दो निसाने लग जायेगे, मतलब एक पंथ दो काज हो जायेगा। शत्रु मित्र बन जायेगा और चालाक पुत्री जो हमारें राज्य को हमसे छिन सकती हैं वह भी हमारें राज्य से बाहर हमसें शक्तीशाली राजा की पत्नी बन जायेगी। इस प्रकार से हमारे राज्य की रक्षा तो होगी ही हमारे पुत्री को उसका पति भी मिल जायेगा और मैं अपनी सारी समस्यायों से मुक्ती पा जाउंगा। और चैन कि बंशी बजाता हुआ अपने आगे की जींदगी को व्यतित करुगां। इस प्रकार से इस नविन विचार ने मुर्ख राजा को अंदर से बाहर तक रोमंचित कर दिया, इसलिए वह बड़े जोर-जोर से चिल्लाने लगा, जिसकी आवाज को सुनकर राजा के महल के जो उसके अंग रक्षक या महल के सुरक्षा अधिकारी थे उन्होंने ने समझा कि राजा पर कोई विपत्ती रात्री के समय आगई है। जिसके कारण राजा रात्री में चिल्ला रहा हैं। इसलिए वह सब अंगरक्षक अपने हथियार और हाथों में मशाल लेकर राजा के शयन कक्ष की तरफ एक साथ दौड़े, जब वह सब राजा के शयन कक्ष में पहुंचे तो उन्होने देखा कि राजा अर्धनग्रा अवस्था में अपने हाथ को जोड़ कर कमरें में इधर उधर बड़ी वेचैनी के साथ एक बछड़े की तरह से घुम रहा था। जैसे वह अपने कमरे को छोड़ कर भागना चाहता हो, और मुह से बड़-बड़ाये जा रहा था, हाँ मेरा शत्रु, हाँ मेरी पुत्री। इस लिए उन अंग रक्षक और दूसरे सुरक्षा अधिकारियों ने कहाँ कि यह मंद वुद्धि राजा अपने अंत की तरफ बढ़ रहा है। इसलिए अब यह पागल जैसा व्यवहार कर रहा है। लेकिन राजा कुछ देर में शांत हो गया और उसने अपने दरबार के सब संगित कारों को बुलाने के लिए कहा, और जब संगित कार आ गये, तो वह उनसे मधुर संगित बजाने के लिए कहा, और बड़ी व्यग्रता के साथ उनके संगित का आनंद लेते हुए, सुबह होने का इंतजार करने लगा।

सुबह होने पर राज ने अपने कुछ समझदार और वुद्धिमान संदेशवाहक को अपने पास बुलाया, और उनसे कहा कि तुम मेरे शत्रु के पास मेरा संदेश लेकर जाओ, और उनसे मेरा संदेश कहो कि चलिए हम दोनो मित्र बन जाते हैं। और शांती के साथ हम दोनो संपूर्ण पृथ्वी पर राज्य करते हैं। और मैं अपनी पुत्री का विवाह भी तुम्हारें साथ कर दुंगा। और इसके बदले में मैं तुमसे कुछ भी नहीं चाहता हुं, और इसके साथ बहुत सारे उपहार तुमको हमारें द्वारा दियें जायेगे। जिसके बारें में तुम अंदाजा भी नहीं लगा सकते हो, जब यह सब तुम्हारें पहुंच जायेगे, तभी तुमको इनके बारें में पता चल पायेगा। जिसके

बारें में मैं बताना चाहता हुं, उपहारों की किमत और उसके गुणों को बताना शब्दों में असंभव हैं। उसके बारें में आखों से देख कर भी अंदाजा नहीं लगा सकते, क्योकि उसको देख कर आंखें भी धोखा खा जाती हैं।

तो इस प्रकार से राजा का संदेश लेकर संदेशवाहक राजा के शत्रु के पास गया, लेकिन राजा की पुत्री ने इस संदेश के बारें में अपने गुप्तचरों से सुचना प्राप्त कर लिया, जिसके कारण उसने राजा से छुपा कर अपने एक संदेश वाहक को भी राजा के शत्रु के पास भेजा, जिसके बारें में उसने अपने पिता से कुछ भी नहीं कहा, क्योकि वह यह जाननी चाहति थी की उसका होने वाला पति किस स्वभाव का है। और उसके शौक किस प्रकार के हैं और उसके कार्य करने का तरिका कैसा हैं?

इस तरह से संदेशवाहक गयें काफी दिन बित गये और राजा के पास किसी प्रकार की सुचना अपने शत्रु राजा की तरफ से नहीं आई, जिसके कारण राजा काफी की अप्रसन्नता और असहनिय निराश अवस्था में अपने जीवन को व्यतित कर रहा था। लेकिन अंत में एक दिन जैसा कि अक्सर अपनी पुत्री के साथ राजा अपने दरबार में बैठा करता था, उसी प्रकार से आज भी बैठा हुआ था। तभी उसके पास एक उसका दरवान आया और उसने उसके चरणों में झुक कर कहा कि वह संदेशवाहक वापिस आचुका है। और राजा का क्या आदेश है? और राजा ने तत्काल कहा कि वह संदेशवाहक हमारें लिए औषधि को लेकर आया तुरंत उसको दरबार में हाजिर किया जाये। इस प्रकार से बिना किसी देरी किये उस संदेशवाहक को तुरंत राजा के सामने पेश किया गया, जैसा कि वह अभी तत्काल अपने सफर से आया था उसके कपड़े धुल-धुसरित थे उसको देखने से हि लग रहा था कि वह किसी लंबी यात्रा कर के आ रहा है। क्योंकि वह काफी थका हारा हुआ दिखाई दे रहा था। जो राजा के सामने आकर खड़ा था और राजा ने उसको अपनी क्रोध से भरी हुई लाल-लाल आंखों से देखते हुए कहा कि तुम अपने राजा के लिए कौन-सा संदेश लेकर आये हो? इतने अधिक समय में जिसके इंतजार में मेरे काले बाल पहले मटमैले हुए फिर सफेद होगयें हैं?

संदेशवाहक ने अपने हाथ को जोड़ कर कहा हे राजा आप क्रोध को त्याग दिजिए, मुझ निर्दोष पर इस प्रकार का आप का क्रोध करना ठीक नहीं है। मेरी तरफ से इसमें किसी प्रकार की कोई देर नहीं कि गई मैं किसी भी यात्री से तीब्र गति से गया, बारिस, गर्मि और सर्दि कि परवाह किया बगैर, आपके होने वाले दामाद की पहली पत्नी के पास और यह सारी देरी आपके होने वाले दामद के पागलपन उसकी प्रसन्ता के कारण ही कारण हुई है। क्योंकि कुछ समय पहले ऐसा हुआ कि वह अपनी सेना के साथ युद्ध से वापिस आने के बाद, अपने आदमियों को चकमा देने के लिए और शांती पुर्वक अकेला कुछ समय बिताने के लिए, वह अपने महल के गुप्त कक्ष में चला गया। जहाँ पर उससे कोई भी नहीं मिल सकता था शिवाय उसकी पत्नी के, क्योकि सिर्फ़ उसकी पत्नी के कोई भी दूसरा उस राज्य के अधिकारयों और वहाँ के किसी आदमियों से वह बात नहीं करता था। क्योंकि वह राजा वहाँ के महल में औरतों के विच में स्वयं औरतों के कपड़ें पहन कर रहता था। जब इसके बारें में और दूसरी महल की औरतों को पता चला, तो महल के अंदर इस प्रकार के मायवी राजा को देखने पर एक प्रकार का भुचाल आगया और सभी औरतें भयभित होगई, क्योंकि राजा की गुप्त जानाकारी वहाँ होने कि उसकी

पत्नी के द्वारा ही किसी तरह से दूसरी औरतो को लग गया था, जिसके कारण राजा भी अपनी पत्नी पर बहुत अधिक क्रोधित हुआ, लेकिन उसने अपनी पत्नी की हत्या ना करके यद्यपि उस महल को ही त्याग कर दिया। और अपने राज्या के ऐश्वर्य, के साथ भोग विलाश सभी प्रकार की वस्तुओं का त्याग उसी प्रकार से कर दिया, जिस प्रकार से सांप अपने शरीर से अपने पुरानी चमड़ी को छोड़ता है। और वहाँ से भयानक खतरनाक जंगल के एक उजड़ें भगवान शिव के मंदिर में चला गया, और मंदिर के अंदर जाकर उसने अपने आप को बंद कर लिया। वह मंदिर उसके राजधानी से बाहर एक विहड़ जंगल में स्थित है, जहाँ पर एक पवित्र और निर्मल कमल पुस्पो से आच्छादित झील भी विद्यमान है। और वह वहाँ पर वह एक साधु की तरह से रहता है, अपने सभी आदमियों से किसी प्रकार का कोई संपर्क या वार्तालाप नहीं करता है। इस तरह से उसके राज्य को चलाने वाला उसका मंत्री, गुप्त रूप से किसी विशेष कार्य के लिये, कभी कभार राज्य के कार्य के लिए विचार विमर्श करने के लिए वहाँ जंगल में राजा के पास जाता है। और इस प्रकार से मुझको बहुत अधिक समय लग गया वहाँ राजा से मिलने का प्रबंध करने में कि मैं वहाँ पर उनसे मिलने के लिए आया हु और मेरे पास उनके लिए आपका प्रस्ताव है।

और अंत में राजा को जब मेरा वहाँ होने के बारें में पता चला और उसने जाना की मैं उसके लिए आपका गुप्त विशेष प्रस्ताव लेकर उसके राज्य में आया हूँ, अपने मुख्य प्रधान मंत्री के द्वारा। तब वह अपने राजा की आज्ञा पाकर एक दिन सुबह मुझे अपने साथ लेकर उस उजड़े शिव मदिर के पास जंगल में ले गये, और जैसा कि मैं वहाँ पर उस मंदिर और कमल के तालाब पास खड़ा होकर राजा का इंतजार करहा था, अचानक मैने देखा झील के सारें कमल पुस्प एक-एक कर के बारी-बारी से सूर्य के प्रकाश कि किरणों को पाकर खिल रहे थे। और तत्काल इसी समय युवा राजा मंदिर के सामने प्रकट हुआ, और वह उन सिढ़ियों के उपर खड़ा होगया जो कमल पुस्पों से आच्छादित झिल के अंदर प्रवेश कर रही थी। उन्होंने अपने शरीर पर लाल वृक्ष की छाल को वस्त्र की तरह से पहन रखा था। और वह ऐसा दिख रहा था मानो वह कोई बहुमुल्य रत्न से जणित मणि हो, जो सूर्य के प्रकाश में और अधिक प्रज्वलित हो रहा था। इस आश्चर्यमय दृश्य को देख कर मैं कुछ देर के लिए अपनी चेतना से शून्य होगया। वह ऐसा प्रतित हो रहे थे जैसे राजाओं का भी राजा हो और उन्होंने मुझसे कहा बहुत गंभिर भाव से कि तुम अपने मालिक के पास वापिस जाओ और उनसे कहो कि जो मेरे और उनके सामराज्य के कल्याण के लिए उन्होंने हमारें पास प्रस्ताव भेजा है। वह मुझे स्विकार है और इस प्रकार से हमारें और उनके मध्य में शांती पूर्ण मित्रता होनी चाहिए, और हमारी मित्रता को मजबुती प्रदान करने के लिए उपहार में जो अपनी पुत्री को हमें देने का वादा किया है, वह उसी प्रकार से कार्य करेगी जैसे सिंमेंट दिवाल कि इटों को जोड़ कर उनको उन्हें शक्तीशाली बनाती हैं। उनकी पूत्री को मैं शाही महल में एक रानी की तरह से रखुंगा और उसके लिए हर प्रकार के भोग विलास के संसाधन को उपलब्ध करा दूंगा। लेकिन मैं उसको अपनी पत्नी की तरह से नहीं रखुंगा। इसके बाद हम दोनो अपने हृदय की अग्नी को लेकर अपने-अपने स्थान पर अपने जीवन को व्यतित करेगे। और इस प्रकार से समझेंगे जैसे हमारा कोई नहीं है या फिर हम एक दूसरें के लिए जीवीत नहीं हैं। लेकिन जब संदेशवाहकअपने राजा को शिव मंदिर में रहने वाले राजा की कहानी को सुना रहा था, तभी उस राजा ने अपने सेवक को बिच में

ही चिल्ला कर रोकते हुए क्रोध में कहा क्या! उसने इस प्रकार के उत्तर मेरे लिए भेजा है। उसने मेरे प्रस्वाव को ठुकरा दिया और मेरा और मेरी पुत्री का अपमान किया है। ऐसा कहने कि उसकी हिम्मत कैसे हुइ? राजा के पास ही उसकी बेटी भी बैठी हुई थी। उसने भी सब कुछ सुना और वह इसको सुन कर हंसते हुए कहा मेरे प्रिय पिता यह आप क्या कह रहें हैं? आपके बाल सफेद होगये और आप अब तक संसार के किसी औरत को और ना ही पुरुष को समझने में समर्थ हो सके हैं। और इसके अतिरिक्त ना राजनिती को समझते हैं ना ही आप मुझको समझ पायें हैं। फिर राजा ने कहाँ मेरी पुत्री तुम्हारें इन शब्दों का क्या मतलब है? और तुमने क्या समझा मनुष्य कि नितियों के बारें में, अथवा तुमने औरतो को कैसे समझ लिया? जबकि तुम स्वयं अभी २१ साल कि ही है। फिर राज कि पुत्री ने राजा से कहा जहाँ तक इस मामले कि बात है इसमें सब कुछ अच्छा ही हो रहा है, जैसा कि यह होना चाहिए और आपको बिल्कुल वैसा ही करना चाहिए जैसा कि उस राजा ने कहा है और फिर भी आप मेरे पति के प्रस्ताव को खारिज करके, अपने क्षेत्र में सभी फायदों को अपने से दुर करने के लिए तैयार हैं, फिर राजा ने अपनी पुत्री से कहा कि यह किस प्रकार से ठीक है। और किस प्रकार से यह बुरा नहीं हैं, इसके बारें में मुझे समझाओ, और फिर मुझको इस विषय में क्या करना चाहिए? और ऐसा पति तुमको कैसे प्राप्त करेगा, जो आपको अपनी पत्नी के रूप में नहीं मानने का प्रस्ताव करता है? और यह बेतुकापन क्या है जो तुम बोल रही हो?

तब उसकी बेटी उठकर उसके सामने खड़ी हो गयी और उसने अपने हाथों को जोड़ कर एक साथ ताली को बजाती रही कि जब तक की उसकी चुड़िया भी नहीं बजने लगी, और इसके साथ उसने अपने पैरे को जमिन पर पटकना प्रारंभ कर दिया, जिसके कारण उसकी एड़िया जख्मी होगई, और उसमें से खुन निकलने लगे और उके पैरे के लाल-लाल निसान जमिन के फर्श पर पड़ने लगे, और उसका मुंह इस प्रकार से मुड़ने लगा जैसे वह काम से पिड़ित हो गई हो। और उसके शब्द तीर के समान घृड़ित वार करने के लिए व्याकुल होरहे थे, और उसने चिल्लाते हुए कहा क्या आप उसकी निती को समझते हैं, यद्यपि आपका चितंन अपने व्यक्तिगत फायदे के लिये है। उस तरफ ध्यान नहीं रहे है, जिससे सामुहिक रूप से जन कल्यण होने वाला है, क्या आप नहीं जानते है, जैसा कि संदेसवाहक ने कहा कि वह आदमी मेरा होने वाला पति है और वह मनुष्य के मध्य में हाथी के समान हैं। और वह मेरे लिए बहुमुल्य हैं, क्या आप औरत को समझते हैं, सायद आप नहीं जानते हैं, जिसने औरत के सम्बंध से मिलने वाले अमृत का स्वाद एक बार लिया है, वह उसको बार-बार प्राप्त करने के लिए व्याकुल रहता है। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो अपने संपूर्ण जीवन को युं ही व्यतित कर देते हैं बिना औरत के सम्बंध से होने वाले मधुर मिठास का स्वाद लिए ही, यद्यपि देवताओं और राक्षस भी औरत के रास्ते को रोकने के लिए खड़े नहीं हो पाते हैं। और क्या आप मुझको समझते हैं, सायद नहीं जानते हैं, यह निश्चित हैं कि वह मेरा पति होगा और मैं उसको अपना पति बना लुंगी। चाहे कुछ भी हो जाये, किसी भी सर्त पर वह मेरा ही हो कर रहेगा, जिस प्रकार से बिन को बजाने वाला सपेंरा अपनी धुन पर सांप को नचाता है। उसी प्रकार से मैं अपने इसारे पर अपने पति को नचाउंगी। मैं उसको अपने चालाकि भरे मिठे बचनो से रीझाते हुये उसके सामने नाचती रहुंगी, जब तक की वह मुझ पर प्रसन्न हो कर मेरी इच्छा के अनुकुल

नहीं हो जायेगा। मेरे छल और स्त्रैण प्रपंच से वह किसी भी प्रकार से नहीं बच सकता है। राजा ने तब अपनी पुत्री के यह विश्वास भरे पांडित्य बचनो को सुन कर कहा मेरी पुत्री बिना संदेह के निश्चित ही तुम पांडित्य की कला से परिपूर्ण हो चुकी हो। और इस सुन्दर मस्तिस्क में बहुत से अद्भूत दिव्य और बहुमुल्य वैज्ञानिक विचार से भरे हैं। मुझे यह जान कर आश्चर्य हो रहा हैं कि इतनी छोटे-सी उम्र में तुमने यह सब कैसे प्राप्त कर लिया? यह सब शिवाय परमेश्वर के कौन तुमको बता सकता हैं? तुम्हारे समान कोइ नहीं हैं और पति के मामले में उसको अपने चापलुसि से बश में करने की व्यवस्था के बारें में तुम्हारा अद्भुत ज्ञान है, यद्यपि अभी भाषा के साथ उसकी तुकबंदी और व्याकरण को तुम सिख रही हो। यह सब सुनने के बाद राजा की पुत्री हंस पड़ी और कहा कि ओ मेरे प्रिय पिता क्या आप नहीं जातने हैं कि वास्तव में सभी प्रकार की कला हमें हमारें पिता से मिलती है, आप स्वयं विचार कर सकते हैं कि औरतों को उनके व्यापार कला का ज्ञान उनको उनके उम्र के साथ जीवन के अनुभव से मिलता है। जिसमें से कुछ औरते उसको अपने जिवन में धारण करती हैं, दूसरी औरते उसका परित्याग कर देती हैं, जिस प्रकार से श्रृष्टि का रचैता मकड़ी को उसका जाल बनाना सिखाता है, जिस प्रकार से मधुमक्खियें को मधु बनाना सिखा देता है, जैसे कमल के फुलों को खिलना सिखा देता है। इसी प्रकार से वह हाथी को उसके अनुकूल वुद्धि भी देता है, इस प्रकार से वह औरत को कैसे छोड़ सकता है? उनके उम्र के साथ उपयुक्त स्वभाव को देने से, अर्थात औरतो को उनके उम्र के साथ स्वभाव में भी परिवर्तन आजाता है। इस प्रकार से वह सभी समस्याओं के भार को अपने कंधे पर उठाने में समर्थ होजाती हैं, उसी प्रकार से आप भी मुझ मेरी समस्या का भार को मेरे कंधें पर डल दिजिये जिसके वहन के लिए मैं बिल्कुल तैयार हो चुकी हुं। इसलिए इस कारण की सफलता के लिए और मेरे पति और मेरे स्वयं के लिए, आप संदेशवाहक भेज दिजीयें और उनके प्रस्ताव को स्विकार कर लिजिये, और मुझको भी संदेश के साथ ही उनके पास भेज दिजिये, जितना जल्दी से जल्दी हो सके। और इस सम्बंध में मैं स्वयं अपने एक संदेशवाहक आदमी के मुह से अपनी तरफ से संदेश भेज दुंगी।

इस तरह से राजा ने अपनी मुर्खता को स्विकार कर के, वही किया जैसा कि उसकी पुत्री ने उससे कहा था। क्योंकि उसका अपने पुत्री के प्रति अगाध स्नेह भी था, जिसके कारण उसकी बातों को अस्विकार करने का साहस उसमें नहीं था। इसलिए उसने अपने पुत्री के अनुसार एक संदेशवाहक को अपने दामाद के पास भेजने के लिए तैयार होगया। कि मैंने आपके प्रस्तावित सर्त को स्विकार कर लिया है और इसके साथ मैं अपनी पुत्री को भी भेज रहा हुं, जिसके रूप में एक नया चांद आपके महल में उदित होने वाला हैं और मैं ऐसी आशा करता हूँ कि इसके साथ आप के जीवन में अच्छे शौभाग्य का उदय होगा। जिससे आपके स्वभाव में परिवर्तन आजायेगा। और जब संदेशवाहक लगभग जाने वाला था तभी राजा कि पुत्री ने उससे कहा कि तुम इन शब्दों को मेरी तरफ से मेरे पति से सवधानी के साथ कहना कि आप उन्हें जोड़ दें या एक को हटा दें आपकी स्त्रि दासी आपको नए चंद्रमा के साथ मिल रही है। और उसने अपने सभी स्वामी के आदेशों को ध्यान में रखा है। और उसके आने का समय वह मध्यस्थ के मुंह से समझ लेगी, परन्तु उसकी आँख उसकी उपस्थिति या उसके कान से उसकी वार्ता से नाराज नहीं होगी, जब तक कि वह स्वयं उसे अपने ही काम के लिए न बुलायेगा।

इस तरह से संदेशवाहक अपने साथ राजा के संदेश को लेकर उसके दामाद के पास गया और जब उस युवा राजा को अपने होने वाले स्वसुर का यह संदेश मिला, और उसके साथ भविष्य के होने वाली अपनी रानी का संदेश भी, तो उसने विचार किया की उसके शब्द बहुत अधिक मधुर और मोहित करने वाले हैं। और जिनसे अत्यधिक वुद्धिमत्ता की खुशबु भी आ रही है, और कानो के लिये वह श्रृंगार रस के समान हैं। लेकिन फिर भी वह एक औरत है, ध्यान रखना पड़ेगा कि उसकी छाया भी हमारें इर्द-गिर्द ना पड़ने पाये। इसलिए वह राजा स्वयं को उसी उजड़े शीव मंदिर में पहले के समान रहता रहा, जिसमें वह अपने जिवन को नष्ट कर देना चाहता था। क्योंकि वह ऐसी आशा करता था कि उसकी आने वाली रानी उसके लिए ज्वलंत अग्निकुण्ड के समान होगी जिसमें वह उसको भष्म करने का सामर्थ रखती हैं।

इसके कुछ समय के बाद, अंधेरे पखवाड़े का अंतिम दिन आने पर और नए चंद्रमा की पूर्व संध्या पर; अपने अनुचरों के साथ राजा की बेटी आयी, राजा के नगर में जाने के बजाय उसने शहर के बाहर अपना शिविर लगाया, जो जंगल के नजदीक था जहाँ से उजड़ा हुआ मंदिर दिखाई दे रहा था, क्योंकि वहाँ पर स्वयं राजा ने अपने पत्नी को अपना निवास बनाने के लिए आज्ञा दि थी।

एक नये चंद्रमा के प्रकाश विस्तार

अगले दिन सुबह प्रातः काल में पिछले दिन के रात्री का प्रकाश अभी आकाश में व्याप्त हो ही रहा था, युवा राजा सूर्य के उदय से पहले ही अपनी निद्रा से जाग गया और मंदिर के बाहर घुमते हुए आ गया। और मंदिर कि सिढ़ियों पर पर चलता हुआ कमल पुस्पों के झिल के पास पहुंच गया। और उसने देखा कि झिल के कमल पुस्प उसके प्रेमी के स्वागत कि तैयारी कर रहें थे और जैसे ही उसकी दृष्टि अपने पिछे पूर्व कि तरफ पर्वतों की चोटियों पर पड़ी जहाँ से सूर्य अपने उदय होने कि तैयारी में व्यस्त था। और उसने फिर अपनी आँखों से वृक्षों के मध्य में देखा, जिसमें अचानक उसको दिखाई दिया एक चमकता पैर उसकी तरफ आते हुए, पैर झिल के किनारें-किनारें चलते हुए धिरे-धिरे उसके पास आरहे थे, उसकी चेतना का चेहरा अपने विलासता पूर्ण ऐश्वर्य के साथ खिल रहा था जैसे वह द्विज का चन्द्रमा हो और उसने गहरें निले वस्त्रों को धारण कर रखा था। और उसने अपने हाथों में आम के पुस्पों को ले रखा था, जैसे उसने चन्द्रमा के सोलह कला को धारण किया हो। और जब राजा उसकी तरफ से मुड़ गया आश्चर्य और अप्रसन्नता पूर्ण आने वाले विनाश को विचार करके, वह राजा के पास आई। और राजा से कुछ दूरी पर खड़ी होगई, और कहा हे राजा मेरी मालकिन आ चुकी हैं। और उन्होंने मुझको आपके पास भेजा है, आपको सुझाव देने के लिए, जैसा कि उन्होंने आपसे वादा किया है कि वह क्षमा प्रार्थि हैं कि वह आपके पास अपने संदेशवाहक के रूप में किसी औरत को ही भेजेगी। किसी वुद्दिमान पुरुष के बजाय, क्योंकि उनको किसी पुरुष पर विश्वास या श्रद्धा नहीं है। इसलिए उन्होंने अपने स्वामी के लिए इन मूल्यहिन हाथों के द्वारा इस फुल को भेजा है। यदि आपकी निद्रा मिठी बीती होगी, तो यह उनके लिये अच्छा होगा।

फिर राजा ने चेतना से कहा उनके फुल और संदेश के लिए मेरा आभार अपनी मालकिन के लिए ले जाओ, और उनसे कहना कि निद केवल उनके लिए है, जो स्वयं से प्रेम करते हैं, और संसार से किसी प्रकार के सम्बंध नहीं रखते हैं, लेकिन एक बीमार आदमी के लिए रात्री पहले से तैयार एक अंधकार है। जिसमें बिना निद्रा के ही प्रातःकाल की भोर बेला को प्राप्त करता है। तब चेतना ने कहा यद्यपि यह एक धोखा देने की कला है, इससे कुछ अच्छी दूसरी वस्तु पहले बनी बनाई गई है। मैं दोनो प्रकार कि बिमारियों के इलाज के बारें में अच्छि प्रकार से जानती हुं। इस पर राजा ने उसको बड़े आश्चर्य के साथ देखा और कहा किसोर युवती यदि तुम जानती हो तो तुम आगे बताओ। आपका इस तरह का व्यवहार करने का तरीका, और आपका पुरुष होना है। फिर चेतना ने कहा हा! राजा क्या आप वास्तव में मेरे शरीर के बारे में सब कुछ जानते हैं, और फिर भी आपने इस अकेले पुराने मंदिर में अपने आप को कैदी बना दिया है, इतनी कमजोर और अपरिहार्य है, एक महिला के रूप का आकर्षण और उसकी चंचलता जिसके कारण आप उससे स्वयं को बचाना चाहते हैं। आप जानते हैं कि आपके समान एक बार एक युवा राजा था और संसार में जिने के तरिके से विल्कुल अनुभवहिन था, वह एक पत्नी को चाहता था जिससे वह बहुत अधिक प्रेम करता था। लेकिन वह मर गई, जिसके बाद उस युवा राजा ने सासांरिक व्यापारिक क्रिया कलाप और संसार की भोग विलास को आपकी तरह से त्याग कर दिया। और बहुत दूर एकांत जंगल में चला गया। और स्वयं के लिए जीने लगा, जैसा कि आप करते हैं, इस तरह के एक और पुराने उजड़े जंगली मंदिर में, निराशा के साथ जो अपने दिल-दिल में जल रहा था। और जब कोई भी उसके राज्य का आदमी या अधिकारी उसके राज्य के प्रति दाइत्व और जिम्मेंदारीयों, कर्तव्यों को समाझाने में या उसके इरादे को बदलने में या उसको जंगल से ले जाने में और उसके बैराग्य के भाव के त्याने के लिये तैयार नही सका। तब अंत में वहाँ पर उस राजा को देखने के लिए, वह मेरी तरह कोई एक युवा और बेवकूफ नौकरानी नहीं थी। बल्की झुर्रियों वाले एक वृद्ध ऋषि, जो उसके परिवार के आध्यात्मिक गुरु थे वह आये, और जब वह राजा के पास आये, जिन्होंने वृक्ष के छाल के वस्त्रों को बहुत कलाकारी के साथ पहन रखा था। और वह उस राजा के सामने आकर खड़े हो गए, किसी प्रकार के शब्द के उच्चारण किये वगैर। इस तरह से वह एक साथ शांत होकर खड़े रहे, अचानक वहां एक बांस के कोठी से एक उसका पत्ता जमिन पर निचे गिरा और वहाँ तत्काल पिला बांस का पत्ता इधर-उधर उड़ता हुआ झिल के शांत पानी में चला गया। औ वहाँ पानी के उपर तैरने लगा और तत्काल पत्ते को गिरते हुए देख कर वृद्ध आध्यात्मिक गुरु के हृदय में दुःख का सागर उमड़ आया। और वह जमिन असहाय हो कर जमिन पर गया और अपने कपड़ों को फाड़ने के साथ अपने बाल को पागलों कि तरह से नोचने लगा, और मिट्टी के साथ धुल को अपने दोनो हाथों से अपने सर पर फेंकने लगा। इसको देखर राजा ने कहा पिता ऐसा क्या आपके साथ अचानक होगया? जिससे आप इतने अधिक दुःखी और पागलों कि तरह से व्यवहार करने लगे हैं, वृद्ध ऋषि ने ओ-ओ कहा क्या तुमने ध्यान से नहीं देखा कि एक बांस के वृक्ष से पत्ता निचे जमिन पर गिर गया है? राजा को यह सुन कर आश्चर्य हुआ जिसके कारण उसने कहा पवित्र आत्मा निश्चित रूप से अब तुम्हारी मुर्खता आज तुम्हारें उपर हाबीं हो चुकी है। जिसके कारण ही तुम इस तरह से व्यवहार कर रहें हो। यह असाधारण दुःख मात्र एक साधरण पत्ते के लिए जो वृक्ष से गिर गया है। फिर वृद्ध ऋषि ने उस राजा से कहा हे राजा

तुम्हारें लिये यह मुर्खता हैं, क्या आप इस मुर्खता के लिए मुझको दोषी मानते हैं? कि मैं पत्ते के गिरने के लिए क्यो दुःखी हो रहा हुं? तो क्या आप जिसने स्वयं के सुख पूर्ण जीवन का त्याग कर दिया है वौ भी मात्र एक औरत के मृत्यु के कारण, क्या आप नहीं जानते हैं? कि यह मृत्यु हर एक वस्तु के साथ एक जैसा व्यवहार करती है। तो हमें हर किसी छोटी से छोटी वस्तु की मृत्यु पर दुःखी और अपने सुखों को त्याग कर देना चाहिए। जैसा कि मैंने किया जिसमें आपको मेरी मुर्खता का साक्षात्कार हो रहा है। फिर नस्वर औरत के शरीर के लिए दुःखी होने का आपके लिए इतना बड़ा क्या कारण हैं? यद्यपि किसी वृक्ष से पत्ते का गिरना उसी प्रकार से है जिस प्रकार से किसी मानव की मृत्यु होती है। और क्या, हे राजा, क्या यह मुर्खता नहीं हैं? कि सारी वस्तुओं का त्याग कर दिया जाना चाहिए, वह भी केवल एक औरत के चंचलता भरे आकर्षण औऱ स्नेह के कारण, क्या औरत का शरीर बहुत अधिक आकर्षक और स्थिर है। बांस के पत्तों की तुलना में? जिसके लिए आप जैसा राजा जो दुःख के असिमित सागर में डुबकिया लगा रहा है। जबकि इसके बाद भी बांस का पत्ता झील के पानी में तैर रहा है।

फिर चेतना ने आम के फुलों को राजा के चरणों में रख कर वहाँ से जल्दी-जल्दी जंगल में चली गई, जिसके कुछ देर बाद वह घनें जंगल के वृक्षों के मध्य में जाकर लुप्त खो गई। लेकिन राजा आश्चर्यचकित होकर वहीं पर खड़ा रहा और उसके जाने के बाद उसी तरफ देख रहा था, और उसकी आँखें जैसे उसकी इच्छा के विरुद्ध प्रतिशोध कि भावना के बजाय, उनमें इस चेतना के शरीर की बनावट और उसकी सुडौलता के प्रति आभार और कृत्यज्ञता का भाव उमड़ने लगा था, उसका चलना और मुड़ना इस भांति से था जैसे वह कोई हंशिनी झिल के पानी में तैर रही हो। फिर वह राजा निचे झुक कर अपने पैरों के पास पड़े उन आम के फुलों को उठाया, और उनको अपने नाक से सुंघने लगा और उसने अपने आप से कहा आम के फुल की सुंगध बहुत मिठी है। और उस किसोरी की आवाज में एक प्रकार का संगितमय आनंद की फुहार है। जो अपने मालिकिन के लिए मुझसे विवाद कर रही थी, लेकिन फिर भी वह एक औरत है जो हमको दोषी सिद्ध कर रही थी। और उसने जो भी कहा ठीक ही कहा और जो इस प्रकार के काम वासना को आनंद का श्रोत समझते हैं उनकी इच्छा और कामना बहुत तुच्छ और ओछी हैं, उसी प्रकार से जिस प्रकार से झील के पानी में बांस के पत्ता होता है। क्या मैं महिलाओं को पुण्य की इजाजत देता हूँ, जो खुद को भी अस्वीकार करती हैं? और उसने आम के फूलों को उस झील में फेंक दिया और रात के आने तक दिन के मध्य में उन्हीं विचारों का चिंतन करता हुआ घूमता रहा, अपने दिल में एक घबराहट को लेकर मंदिर में वापस चला गया।

इस प्रकार से रात्री आने पर वह पत्तों के विस्तर पर वेचैनी के साथ करवटे बदलता रहा, और सुबह सूर्य उदय होने से पहले ही उठ गया। और वहाँ से सिधा झील की सिढ़ियों पर जा कर खड़ा होगया, और देखने लगा सूर्य के उदय होने से पहले आकाश में उपस्थित तारों के प्रतिबिंब को, जो सांफ-सांफ झिल के पानी प्रतिबिंबित हो रहे थे। और उसने इसके अतिरिक्त देखा चेतना को झिल के किनारें से उसकी तरफ आते हुए, अपने चमते हुए पैरो के साथ, जिसने अपने हाथों में तुरही के फूलों को ले रखा था। और वह इस प्रकार से दिख रही थी जैसे आकाश में सूर्य उदय से पहले होता है जिसके चारों तरफ एक लालीमा छाई हुई होती है। इस तरह से वह राजा के करिब आगई और राजा के करिब

आकर खड़ी होगई, और कहा हे राजा मेरी मालिकिन ने अपने स्वामि के लिए इन मूल्यहिन हाथों से इन तुरही के फुलों को भेजा है, अगर आपकी रात्री अच्छी तरह से गुजरी होगी, तो यह उनके लिए बहुत अच्छा होगा।

फिर राजा ने कहा चेतना वह कैसे अपनी रोता को बिना परेशानी के व्यतित कर सकता है, जिसकी स्मृति को काम ने अपने तीछण वाणों से घायल कर रखा हो, सूखी पत्तियों की तुलना में जो तुम्हारी राय में भी अधिक बेवकूफ हो? फिर चेतना ने हंसते हुए कहा हे राजा अभी मैं युवा हुं, और आपसे उम्र में छोटी हुं, क्या आप किसी औरत के क्रिया कलाप को इतने हल्के में लेते है। और फिर भी उनमें से सबसे कम उम्र की औरत के कहे शब्दों को याद करते हैं। और उनको बहुत अधिक महत्त्व देते हैं? इसको सुन कर राजा और अधिक उलझन में पड़ गया, और राजा ने कहा सेविका तुम मुझसे निश्चित ही युवा हो, और तुम में दूसरी औरतों से बहुत अधिक कामुक्ता की माया से सराबोर हो, और यदि इस प्रकार से उसकी सेविका है, तो उसकी मालिकिन कैसी होगी? इसको सुन कर चेतना बहुत अधिक आनंदित हो कर हंसने लगी, और उसने अपनी वाणी पर जोर देते हुए कहा हे राजा वह एक औरत हैं, क्या यह उनके लिए परयाप्त नहीं हैं, क्या वे सभी बांस के पत्तों के समान बेवकूफ और उनके डंठल, के समान खोखले की तरह नहीं हैं, अर्थात वह इसके अपवाद के बिना हैं? और आपका किसी फुल कि क्यारी के अनुभव को देख कर किसी फुल के बारें निर्णय करना ठिक नहीं हैं। और फिर भी, खरपतवार के अपने अनुभव के अनुसार सभी फूलों का न्याय न करें। क्योंकि मैं और अन्य खरपतवार के समान हैं, फिर भी मेरी मालकिन इस शानदार तुरही-फूल की तरह हैं। हे राजा, क्या आप सोचते हैं कि निर्माता, जो सभी फूलों को समान रूप से फूल बना रहा है, फिर भी प्रत्येक फुल को अपनी विशिष्टता उसको अलग कर दिया, इसी प्रकार से उसने सभी महिलाओं को समान नहीं बनाया है । वास्तव में, आप एक गलत न्यायाधीश हैं। ठीक उसी प्रकार से जैसे गुलाब का फुल होता है, जो देखने में बहुत अधिक सुंदर और आकर्षक होता हैं जबकि दूसरे फुल कल लाये गये साधरण आम के फुल के समान होते हैं, फिर भी सभी सुगंद से आच्छादित होते हैं।

जैसा की एक लाली नाम की स्त्रि थी जिसका पति एक बार लंबी विदेश यात्रा पर गया और कभी अपनी यात्रा से वापिस नहीं आया। इसके बाद साल के साल गुजरते गए और वह कभी नहीं आया। और इन सालों के बिच हर एक दिन में लाली अपने पड़ोसियों और युवावों के तानो को सुन-सुन कर बहुत अधिक दुःखी होती रही, जो उसकी सुंदरता को देख कर उसकी तरफ आकर्सित होते थे। जिस प्रकार से मधुमक्खिया फुलों की खुसबु और उसके सौन्दर्य को देख कर आकर्षित होती हैं। जितना ही अधिक वह उन लोगों को अपने से दूर करने का प्रयाश करती उतना ही अधिक वह सब उसके करिब आने के लिये उत्सुक होते थे। इस प्रकार से ऐसे लोगों के आचरण से वह बहुत अधिक दुःखी हो कर एक रात्री को उसने एक दिपक लिया, और उसमें उसको तेल से भर दिया और उस दिपक को अपने साथ लेकर गंगा नदी के किनारें चली गई। और उसने अपने आप से कहा कि मैं इस दिपक को जला कर गंगा नदी की धारा में बहा दुंगी, जब यह दिपक गंगा नदी के पानी में बुझ कर डुब जायेगा, तो मैं इस नदी में डुब कर अपने जीवनका अंत कर लुंगी और यदि यह दिपक नदीं के पानी में बिना बुझे तैरता ही रहा, तो मैं

नदीं में डुब कर अपनी आत्महत्य नहीं करुगी यद्यपि अपने पति के यात्रा से आने का इंतजार करुगी। फिर उसने ऐसा ही किया अर्थात दिपक को जला कर नदी की धारा में बहा दिया, और अब उस रात को अचानक बहुत बड़ा और खतरनाक तुफान आगया, जिससे गंगा नदी की लहरें समंदर के समान उठने लगी, फिर भी इसका ध्यान दिये वगैर, वह नदी के पानी के उपर अपने दिपक को जलते हुए देखती रही, क्योंकि ईश्वर पर उसकी श्रद्धा बहुत अधिक मजबुत थी। उस समय आकाश में अनगिनत तारें चमक रहें थे, जो उस औरत के इस छुद्र कृत्य को देख कर अनादर भाव से हंसते हुए आपस में कह रहें थे, कि देखों इस बेचारें छोटे से दुःखी दिपक को नस्वर संसार के छोटी-सी नदी में जिसको बहा कर यह औरत दिपक को तारा समझती है। कि यह कभी बुझेगा ही नहीं और ठीक इसी समय आकाश मार्ग से भ्रमण करते हुए त्रीकालदर्शि भगवान शिव ने निचे लाली को एक छोटे से दिपक को जला कर गंगा नदी के धारा में बहाते हुए देखा, उन्होंने तत्काल आपनी दिव्य शक्ति का प्रयोग करके भंयकर तुफान को बिल्कुल शांत कर दिया, जिसके कारण गंगा नदी की लहरें विल्कुल शांत हो कर अपने निद्रा अवस्था में चलें गयें, और उनके उपर फुल कि तरह से खिलता छोटा दिपक जलता रहा, जिसकी ज्वाला बिना किसी अस्थिरता के बहता रहा, शांत पानी के अंदर उसका प्रतबिंब किसी दूसरे आकाश के तारों के मध्य में झिलमिला रहा था। इस प्रकार से जैसे वह उपर्युक्त उन तारों की नकल में मुस्कुरा रहा हो। फिर दयालु भगवान ने कहा आकाश से क्या आप नीचे अपने सभी सितारों के साथ आकाश को देखते हैं? और आकाश ने उत्तर दिया हां लेकिन वह आकाश अपने सितारों के साथ एक भ्रम है। और महेश्वर शिव इस पर हँसे और उन्होंने कहा तू मूर्खतापूर्ण आकाश है, जानता है कि तू अपने सभी सितारों के साथ स्वयं को अकेला समझता है और नीचे कोई दूसरा भ्रम रुपी आकाश नहीं है। सभी की एकमात्र वास्तविकता थोड़ी हल्की है, जो जिस प्रकार से गंगा में दिपक तैरता है, ऊपर की अनंतता और नीचे के बीच बनाई गई है। इसके लिए एक वफादार पत्नी की अच्छी गुणवत्ता के साथ यह उसकी श्रद्धा का प्रतीक है।

इस प्रकार से दिपक गंगा नदी के पानी में तैरते हुए जल रहा था, जब तक कि वह लाली के आंखों से ओझल नहीं हो गया। और इसके बाद उस औरत ने अपने पति को भगवान को अपने पक्ष में कर फिर से दुबारा प्राप्त कर लिया।

फिर चेतना ने राजा को लगातार ध्यान से देखते हुए, उन फुलों को राजा के चरणों में रख कर वहाँ से दुर चली गई, और राजा उसके जाने के बाद भी उसको देखता रहा, जैसे ही वह गई राजा खड़ें-खड़ें उसके ध्यान में चला गया, उसके बहुत समय जाने के बाद तक वहीं ध्यानस्थ बना रहा। और फिर वह निचे झक कर अपने पैरों के पास पड़े हुए तुरही के फुलों को उठाया। और उसने स्वयं से कहा लाली वास्तव में बहुत सुंदर गुलाब के फुल की तरह है। ठीक इसी प्रकार से जैसे यह विचित्र सेविका है, निश्चित ही इसके जुबान पर सरस्वती देवी का वास हैं, लेकिन फिर भी क्या वह? एक औरत नहीं है। यह उसी प्रकार से हैं जिस प्रकार से कोई प्राणी अपने दातों में जहर को रखता है, और अपने होटों पर मधु को रखता है। और वह फुलों को दुर झील में फेंक कर अपने होठों को बंद कर लेता है, इसके बाद

वह उदास हृदय के साथ वापिस अपने मंदिर में चला जाता है। दिन भर किसी तरह से शोक पूर्ण हो कर बिताता है और रात्री के आने का इंतजार करता है।

फिर रात्री आने पर किसी तरह से अपने पत्तों के विस्तर पर रात वबिताने के लिए किसी प्रकार से करवटे बदल-बदल कर रात को विता देता है, और सूर्य उदय होने से पहले ही वह उठ गया और मंदिर से बाहर झिल की सिढ़ियों पर जा कर खड़ा होगया, निले आकाश में तभी उसकी दृष्टि नवजात सूर्य की सुनहरी किरणों ने पर पड़ी जिसने राजा का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित कर लिया। और वह इस प्रकार से खड़े होकर सूर्य की सुनहरी किरणों को निहार रहा था कि तभी उसने पुनः चेतना को अपनी तरफ आते हुए देखा, अपने चमकते हुए पैरों के साथ, जिसने अपने हाथों में चमेली के खिले हुए फुलों को ले रखा था। और राजा ने जैसे ही उसकी तरफ देखा राजा प्रसन्नता से खिल उठा अपनी इच्छा के विपरित, उसकी चाल-ढाल से ऐसा प्रतित हो रहा था जैसे वह एक युवा औरत का एक अवतार हो। जब वह राजा के पास आकर उसने राजा को हंसते हुए देखा और कहा हे राजा मेरी मालिकिन ने इसको अपने स्वामी के लिए भेजा है, इन मुल्यहिन हाथों के द्वारा, इन फुलों को, अगर पिछली रात्री में अच्छी तरह से सोये होगें, तो यह उनके लिए बहुत अच्छा होगा।

फिर राजा अपने उपर हंसा और वह स्वयं पर बहुत अधिक क्रोधित हुआ, कि उसने ऐसा क्यों किया? और उसने चेतना से कहा वह कैसे अपने जीवन में आनंद प्राप्त कर सकता है? जो स्वयं अपनी इच्छा के विपरित हो चुका हो, वह इस तरह के कामवासना से निपटने के लिए अपनी इच्छा के मुकाबले मजबूर कैसे हो सकता है? चाहे वे अच्छे या बुरे हों, किसी भी तरह से, वे अपनी मन की शांति को नष्ट कर देता है।

फिर चेतना हंसने लगी और उसने राजा को हंसते हुए अपने छोटी-छोटी सुक्ष्म आँखों को मटकाते हुए देखा, और उसने राजा से कहा हे राजा ज्ञान को विकसित करने की जो कला है, उसके लिए केवल एक रास्ता है कि जो वुद्धिमान लोग उनके साथ एकात्म स्थापित किया जाये। और उनसे इसको सिखा जाये। क्योंकि मैं अपने कामुक वासना की प्राकृतिक चतुरता से पूरी तरह से रहित नहीं हूँ, हालांकि मैं अभी केवल 21 वर्ष की हूँ और अब मैं समझ सकती हुं कि आपका और हमारा विचार एक जैसा हैं, जिस प्रकार से बुनकर अपने कपड़े को वुनता हैं और उसी प्रकार से हम सब अपने जीवन को विचारों से बुनते हैं, जिस प्रकार से हमारा विचार होता है उसी प्रकार से हमारा स्वयं का निर्वाण होता है। आज से आपका विचार हमारें प्रति कुछ स्विकारात्मक और उदार हैं जो हमारे लिए वहुत अच्छा और शुभ है और यह केवल एक हमारें लिए अच्छाई कि संभावना है और मुझे आश्चर्य हैं कि अचानक आप में आये परिवर्तर के पिछे जो कारण है, जिसकी वजह से आपके हृदय में मेरे प्रति इस प्रकार की उदारता पूर्ण विचार उत्पन्न हुए हैं। और इस प्रकार से उसको सुनने के बाद राजा बहुत अधिक अप्रसन्न और चिंतित था। क्योंकि उसने दृढ़ संकल्प किया था कि वह कभी भी वह उसके साथ बात-चित करने में रुची नहीं लेगा, लेकिन इसमें राजा के दृढ़संकल्प ने अभी तक किसी प्रकार से उसकी सहायता नहीं कि थी। और राजा ने कहा जो ऐसा नहीं हुआ है, उसका कोई कारण नहीं है और मेरी राय आज के दिन बस थी और मैं भी हूँ। लेकिन चेतना ने राजा को देख कर मुस्कुराई और उसने कहा नही, यह ऐसा नहीं है बाहरि

सारे संकेत इमानदारी पूर्ण हैं। मैं उनको आपके चेहरे पर देख कर पढ़ सकती हुं। क्योंकि वहाँ हृदय में मेरे नाम के अतिक्त कुछ भी नहीं है। इस प्रकार से राजा चेतना के प्रेम के जाल में फंस गया, और फिर राजा ने कहा वह कौन-सा नाम है? तब चेतना ने कहा मैं मधु नाम से जानी जाती हु। और राजा ने कहा तुम्हारा नाम बहुत सुन्दर है, तब उसने कहा ऐसा तुम कैसे कह सकते हो? क्या आप जानते हैं कि मैं कैसी हूँ? क्या आप अंदर से अपने बाहर के बारें में न्याय करेंगे? क्या आप अखरोट के किसी भयंकर और कठोर खोल को देख कर उसके अंदर के स्वादिष्ट सामग्री का अनुमान लगा सकते हैं? तब राजा मुस्कुराया और उसने कहा सेविका का यह मेरा मुस्कुराना पर्याप्त नहीं है, उसी प्रकार से बाहरी अखरोट की कठोरता और उसकी आन्तरि सुन्दरता के मध्य में कोई समानता नहीं है। फिर चेतना ने अपने हाथों से ताली को बजाया और उसने कहा हे राजा क्या आप विवेकाधिकार कभी नहीं सीखेंगे? क्या आप जल्द ही सब कुछ भूल गए हैं? क्या आप अनुभव से नहीं जानते कि बाहर से एक वस्तु इतनी अधिक प्यारी न हो, इसमें एक कड़वा रस भी हो सकता है? क्या आप मेरे बारें में बाहर से अनुमान लगा सकते हैं, मेरे भीतर के गुण क्या हैं? और फिर भी पता है कि अगर मेरी मालकिन मेरी सभी अन्य नौकरानियों से बेहतरमुझे प्यार करती है, तो यह मेरे पति के लिए नहीं है, बल्कि यह मेरे आंतरिक अस्तित्व के लिए है। क्योंकि मैंने एक चालाक गुरु से ज्ञान सीखा और जो मैं आपको सिखा सकती हूं, आप उसे जानना चाहते थे और मैं इन कहानियों को बता सकती हूँ जो आपके अपनी सारी परेशानी पर हंसते हैं और आपको उस देश में ले जाते हैं, जिस के बारें में आपने कभी सपना भी नहीं देखा है। जहाँ पेड़ कभी खिलते हैं और नशे की लत से मधुमक्खी के झुंड से होने वाले शोर के साथ गुंजती हैं। जिससे उनकी छाया में दिन के सूरज का कभी जलता हुआ नहीं प्रतित होता है। और रात तक, चांदनी कपूर के समान जलते हुए चंद्रमा की किरणों में अमृत के साथ जम जाती है। जहाँ नीले झील में चांदी के समान सफेद हंस की पंक्तियों से भरे हुई हैं। और जहाँ, रात्री गहरें निले रंग की चादर को ओढ़ कर आकाश के चरण रूप पहाड़ों में बारिष के गरज के साथ मोर की तरह आंदित होकर नृत्य करती हैं। जहाँ पर आकाशिय विजली बिना किसी को नुकसान पहुंचायें ही चमकती है, इस विजली के प्रकाश में औरते अंधकार में छुप कर अपने प्रेमियों से मिलने के लिए जाती हैं। और इन्द्रधनुष हमेशा के लिए आकाश में लटका हुआ, जैसे कोई चमकिला दुधिया मड़ी चमक रहा हो, पर्दे के समान गहरें निले आकाश बादलों के मध्य में से मुस्कुराते हुए सब कुछ बिना शब्द के देखता है, जहाँ पर चांद के प्रकाश में संगमरमर से सुसज्जीत महलों की छतो पर हंसते और मुस्कुराते हुए युवा प्रेमियों के जोड़े आपस में आलिङ्गन बद्ध हुए एक दूसरे के साथ प्रेम में मग्न होते है। जिनका प्रेमापुरित चेहरा लाल अंगुर के शराब के गिलासों में प्रतिबिमबित होता है। और वह जब शांस लेते हैं तो एक दूसरें के हृदय में जैसे चंदन की खुशबु भर जाती है। जिस प्रकार से उत्तरिय पर्वत हिमालय से सर्द हवायें और समन्दर की गर्म हवा आकास मार्ग से भ्रमण करती हुई उनका चुमंबन करने के लिए लालाइत होकर उनके चारों तरफ पंखें के समान झल कर उनको राहत और परमानंद की अनुभुती करा कर स्वयं को अभिभूत करते हुए गौर्वान्वित महशुस करती है। जहाँ पर वह एक दूसरें के साथ प्रेम लिला करते हैं। और एक दूसरे के शरीर पर आच्छादित निले गहरें चमकिलें रुबी की माला उन्हें और अधिक सौम्य और सांस्कृतिक शभ्य बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं। जिन मणियों को महासागर या समन्दर का मंथन करने के बाद उनकी तलहटी से निकाला गया था। जहाँ पर नदीया और उसका रेत भी पहुंच कर हमेशा के लिए सुनहरे हो

जाते हैं। धीरे-धीरे शांती के साथ केकड़े अपनी लंबी लाइनों का प्रवाह करते हुए चलते हैं। और जहां सफेद चांदी के समान मछलियाँ अपने आपको को लेकर सागर के किनारे पर पहुंचने के लिए दौड़ती हैं। जहाँ पर सच्चे और इमानदार सज्जन पुरुष सत्य के साथ रहते हैं। और जहाँ पर हमेशा उनकी सेविकायें उनको प्यार किया करती हैं और जहाँ पर कमल का फुल कभी नहीं मुर्झाता है।

और जैसे ही उसने सुना, राजा की आंखों से आँसू बहना शुरू हो गया और उसने कहा ऐ! सेविका, मुझे अपने साथ ले चलो, अगर तुम ऐसा कर सकती हो, उस भूमि पर जहाँ प्यार कभी बूढ़ा नहीं होता है। लेकिन चेतना ने उसे अपनी आंखों के प्रेम से देखा और उसने राजा के पैरों पर चमेली के खिलते हुए फुलो को रख दिया और जंगल में पेड़ों के माध्य में से जल्दी-जल्दी वहाँ से दूर चले गई। जबकि राजा ने उसे काफी देर तर उसको जाते हुए देखता रहा, जब तक कि वह उसकी दृष्टि से गायब नहीं हो गई। और फिर वह प्रेम से निचे झुक चमेली के फूलों को उठा लिया, और उसने कहा, चमेली तुम्हारी सुगंध तुलना से परे मीठा है और फिर भी यह इस छोटी लड़की की आवाज़ के संगीत के रूप में स्वादिष्ट नहीं हैं। और फिर भी हाँ! वह एक महिला है। और दूसरी महिलाओं अलग अद्वितीय है! क्योंकि मैंने सोचा था कि मैं अपने दिल से उसके आकर्षण के बहुत से बीज को उखाड़ फेंकने में सफल रहा हूँ, और अब यह सुंदर चेतना आती है और मेरे सभी परिचालनों को नष्ट कर देती है, जैसा कि उसके चालाक सुगंधित होंठ के दरवाजे से सांस के साथ निकलने वाले कुछ सम्मानित शब्द जो मेरे संकल्प की प्रबलता को ऐसे नष्ट कर देते हैं। जैसे रेगीस्तान में विशाल पर्वत के समान रेत के ढेर को हवा का एक झोंका उनको एक स्थान से दूसरें स्थान पर जाने के लिए मजबुर कर देता है। फिर उसने फूल और झील को देखा और उसने कहा, हे फूल, मैं तुम्हें तब तक नहीं फेंकुगा जब तक की तुम मुर्झा नहीं जाते, क्योंकि तुम्हारें साथ एक अद्भूत चेतना के आकर्षण का स्वाद जुड़ा हैं जो मेरे रंगीहिन जीवन में रंगभरने की तैयारी कर रहा है, क्योंकि यह मेरे लिए शर्म की बात होगी। और वह अपने हाथ में फूलों को लेकर, मंदिर में वापस चला गया, उसके दिमाग में चेतना की यादें और उसके दुःख की याद के बीच अंतर्द्वनंद चल रहा था।

एक फुलों से रहित प्रभात

तब उसने अपनी सारी रात पत्तियों के बिस्तर पर किसी तरह से बिता दिया, और सुबह उठकर वह झील के किनारे उनकी सिढ़ीयों पर आकर खड़ा होगया। और पेड़ों पर पक्षियों को गीत गाते हुए सुनने लगा, और उनके गीतों के लिए सलाम किया। और इसके साथ भगवान को इस सुंदर दिन के आगमन के लिए मन ही मन शुक्रिया भी दिया, परमेंश्वर का चिंतन करता हुआ जब वह वहां पर खड़ा था, उसने झील के किनारे और जंगल के पेड़ों के मध्य में देखा, लेकिन उसने देखा कि पहले कि भांति उसके पास चेतना आज नहीं आ रही थी। और वह झिल के किनारे उसके पानी में खिलते कमल और पेड़ों के साथ अकेला वहाँ खड़ा था।

इसके बाद उसने स्वयं से कहा कि सायद आज वह सो रही होगी। क्योंकि उसकी निद ना खुली होगी, और वह देर से उठी होगी, अथव उसके पास कोई ज़रूरी कार्य आगया होगा। अथवा संभव हैं कि वह किसी प्रकार के फुल को आज नहीं प्राप्त किया हो, मुझको देने के लिए। यद्यपि दिन धिरे-धिरे बढ़ता हुआ, सुबह से दोपहर और दोपहर से शाम होगई, मगर वह आज अब तक नहीं आई। अंत में राजा ने अपने आप से कहा इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता वह आये या नहीं आये। और ना ही इन वृक्षो को ही कोई फर्क पड़ता हैं, ना इस झिल के पानी को ही कोइ फर्क पड़ता है। जैसा कि वह जब हमसे मिलने के लिए नहीं आती थी। तो भी मेरा जीवन बड़ी अच्छि तरह से उसके बिना भी अपने इन साथियों के साथ आराम से गुजारता था। जैसा कि मैं पहले करता था, फिर वह मुर्खों कि तरह से वापिस झिल के किनारें युं ही बिना किसी उद्देश्य के घुमता रहा। अब उसको कोई फर्क नहीं पड़ता था कि वह क्या कर रहा हैं? उसकी आंखों को जैसे उसकी ही खोज थी उसके बगैर उसे जैसे कुछ भी दिखाई भी नहीं दे रहा था। वह बार उसी किनारे पर देखता रहता था जिस तरफ से अक्सर वह रोज आया करती थी।

और अंत में उसने अपने आप से कहा यह निश्चित हैं कि उस वस्तु की ज़रूरत हैं आज के सुबह के जंगल का सौंदर्य आज कुछ विचित्र और अजिब दिखाई दे रहा था, यद्यपि यहाँ पर वहीं सारें वृक्ष हैं और वहीं मंदिर हैं और वहीं झील हैं जिसमें कमल पुस्प खिल रहें है। इसके अतिरिक्त भी कुछ कमी है और प्रातः कालिन की बेला भी आई है, ऐसा कुछ भी तो नहीं हैं जैसा कि पहले नहीं था, शिवाय आज चेतना नहीं आई है। और उसने मुझकों लाकर फुलों को नहीं दिया है। यहाँ से कुछ भी नहीं गया केवल चेतना और उसका फुल नहीं आया है। क्या उस औरत का फुलों के साथ ना आना अर्थात उसकी अनुपस्थिती ही इस जंगल के परिवर्तन बदलने का कारण है। जिसके कारण आज मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा है। फिर वह एक बार झिल के किनारे घुम कर झिल कि सिढ़ियों पर आकर बैठ गया। और वह झील के पानी में झांकने लगा, और उसने कहा ऐ झील के पानी तुम में वहीं मिठास हैं जो प्रत्येक दिन हुआ करती थी लेकिन फुल तुमसे बहुत अधिक मधुर और मिठे खुशुबु से आच्छादित हो रहे हैं। और उस औरत का क्या भरोषा है,फिर उसने कहा नहीं वह औरत नहीं है यद्यपि वह एक कच्ची कली के समान है, और दूबारा अब तक नहीं आई, क्योंकि उसमे अभी प्रौढ़ता नहीं आई है। बल्कि वह दो स्थितियों की सीमा पर, शाम की तरह और सुबह की तरह, दोनों की सुंदरता और गुण साझा करने और फिर भी न तो तीसरे से सम्बंधित है। क्योंकि वह आधा बच्चा है और आधा महिला है और वह उन फूलों जैसा दिखती है जो वह अपने हाथ में रखती हैं, सुबह में खुले खुली-खुली और उनके जैसे, वह उसके साथ एक सुगंध देती है, फिर भी वह श्रेष्ठ है कि उसके पास गति और आवाज है। जबकि उसके अतिरिक्त सब कुछ चुप और शांत है, और जमीन के साथ जुड़ें हैं। और जब वह सुबह के साथ सूर्य की किरणों के समान मेरे सामने आने वाले प्रकाश के साथ मेरे पास आने लगती है जैसे कि वे ऐसा करते हुए आनंदित होते है। जैसे कि सूर्य के प्रकारश क् किरणें भी उसके गहरे नीले रंग के आवरण में लपेटे हुए हों, जो कि पहाड़ पर धुंध की तरह ही अधिक सुंदरता प्रदान करता है, जो कि यह अप्रभावी रूप से छुपाता है, मेरी आंखों के अवशेष और गायब होने से इनकार करते हैं। और जिस तरह से बारिस के मौसम में पहाड़ियों पर घिरा हुआ है, उसकी आवाज़ के गरजना के शोर मेरे कान में पानी की तरह

प्रवाहित हुआ करता है, और शांती के साथ जंगल भी मिल कर एक हो जाता है । हे! उसकी आवाज़ के संगीत में जादू है, क्योंकि यह कम है और शहद के मुकाबले मीठा है और उसमें मैं फंस जाता हुं, उसी प्रकार से फंस जाता हु जैसे आत्मा के संगित को सुनकर मानव मन इस शरीर में आकर कैद हो जाता है। और उसे अपने शब्दों के अर्थ में भाग लेने से विचलित करता है और अब भी, यह एक युवा बांस की शाखाओं में एक हवा की तरह मेरी याददाश्त में घूमती है, जो इसके गूंज के साथ सोता और जागता है और मेरे कानों में नाद ब्रह की तरह से बजा करता है, यहाँ तक कि यह खत्म होने के बाद भी चला करता है, जैसे हवा के शांत होने पर भी पानी की लहरें चला करती है, जैसे सुर्य के प्रकाशको शांत होने पर भी रास्ते की रेत कुछ देर तक जला करती है, जैसे चांद के प्रकाश दिन में ना मिलने पर भी समंदर में ज्वार भाटा का प्रवाह दिन में भी कुछ समय तक बढ़ता रहता है। हाँ! वह चली गयी है और अब मुझे फिर से उसके आने से पहले कल तक इंतजार करना होगा। और फिर भी, कौन जानता है? क्योंकि कुछ उसे लौटने से रोक सकता है और कल फिर वह अनुपस्थित हो सकती है, जैसा कि वह आज थी और वह वहीं पर अपने दिन को बिताए, असंतुष्ट और अतृप्ती के साथ आने वाले कल में उसके आने की उम्मीद की आशा कर रहा था। और फिर भी वह अंदर-अंदर से भयभित हो रहा था, कि शायद कल भी वह ना आयें, फिर भी वह अपनी निराशा को उसके सामने प्रकट नहीं करना चाहता था।

इस प्रकार के उधेड़-बुन के साथ उसने अपनी पूरी रात को पत्तियों के बिस्तर पर गुजार दिया। और सुबह में वह बहुत जल्दी उठ गया, सूरज के उदय होने से बहुत पहले और मंदिर के बाहर चला आया। और झिल के सिढ़ियों पर उसका इंतजार करने के लिए खड़ा हो गया था। और उसने उपर आकाश में देखा, जिसमें बहुत उपर आकाश में हंश पंक्ति बना कर आराम और मस्ति के साथ उड़ते हुए उत्तर कि तरफ जा रहें थे। उनका शरीर जो दिन होने से पहले सितारों के समान चमक रहें थे, क्योंकि उनके पंखों पर सूर्य कि किरणे पर्वतों के पिछे से आकर उनके शरीर को मणिमय और स्वर्णमय बनाती थी। जैसे कि वह आकाश में जगमगाते हुए तारों के हि रिस्तेदार हो, और फिर, अंत में, सूर्य अपनी गुलाबी किरणों से सुसज्जित हो कर पहाड़ियों के पिछे से आकाश में धिरे-धिरे अवतरित होता है। और एक बार फिर उसने अपने आगे तेजी से झिल के किनारे से चेतना को आते हुए देखा। और वह अपनी आंखों में सुबह के ओश के तरोताजा मोती के बुंद के समान चमकते हुए मड़ी की तरह लग रही थी। जो किसी प्यार के प्रतीक की तरह थी जो उसके दिल में अपनी वासनाओं के भष्म राख से उग रहा था। और जो एक स्त्री के प्रेम के रूप में धिरे-धिरे धिरे प्रकट हो रहा था, और उसने अपने हाथ में कुछ चंपक के फूलों ले रखा था, इसके साथ वह राजा के पास आ पहुंची, जिससे राजा के चारों तरफ कि हवा को सुगंधित कर दिया। और उसने कहा हे राजा, मेरी मालकिन ने अपने भगवान को, इन अयोग्य हाथों से इन फूल को भेजा है और यदि आपने अपनी पिछली रात्री में निद्रा का अच्छा आनंद लिया है, तो यह उसके साथ अच्छा है।

फिर राजा ने चेतना से कहा प्रिय चेतना कोई कैसे अपनी निद्रा का आनंद ले सकता है। जिसके मित्र ने उसको अकेला छोड़ दिया हो, उजड़े रेगिस्तार में रात बिताने के लिए? चेतना ने कहा हे राजा अगर उसके मित्र ने उसका त्याग करदिया है, यह उसकी स्वयं कि कमी के कारण ही है। जिसने

पर्याप्त मात्रा में अपने विवेकज्ञान का उपयोग नहीं किया है। जिसके कारण ही उसको ज्ञान और अज्ञान अर्थात सत्य और असत्य में अंतर ना समझ पाने के कारण ही ऐसा हुआ है। और राज ने एक बार फिर आह भरी और कहा ओह यह बताना बहुत कठिन हैं, इस संसार में बहुत कम ही ऐसे लोग हैं जो सत्य और झुठ को निराकरण करनें में समर्थ हैं। अर्थात सांसारी माया को समझने में समर्थ हैं। सुंदरता के लिए असंख्य छद्म मानते हैं, और खुद को एक अनुठे सत्य की तरह के एक रूप में भी पेश कर सकते हैं। फिर चेतना ने हसंते हुए कहा हे राजा तुम अभी मेरे बारें में भी निश्चिंत नहीं हो क्या? राजा ने कहाँ मैं किसी भी वस्तु के बारें में निश्चिंत नहीं हूँ, यद्यपि यह निश्चित हैं कि इस संसार में बिना प्रेम के सब कुछ व्यर्थ है। प्रेंम का किसी के जीवन में आने का मतलब है कि उसका सब कुछ लुट गया है, वह मानव पूर्ण रूप से कंगाल हो जाता हैं, जैसे बिना पानी का बादल, जैसे बिना पानी की नदी, या फिर जिस प्रकार से बिना फलों का वृक्ष हो इस संसार में रहता है। इसी प्रकार से जिस मनुष्य के हृदय में प्रेम नहीं है अर्थात जिसको इस संसार में किसी से प्रेम नहीं मिलता है, वह भी प्यासे रेगिस्तान के समान गर्मी से तपती हुई उसर भुमी के समान होता है। इसको सुनने के बाद चेतना ने कहा जो कभी उपस्थित नहीं हुआ था, अर्थात जो अनादि जिसके कारण ही जगत में हर प्रकार कि रंगिनियाँ हैं। जो सभी का मुख्य श्रोत है जिस कारण से ही सभी पैदा होते है वह प्रेम ही है। और प्रेम कभी भी किसी को पूर्ण रूप से नहीं छोड़ता है, यद्यपि प्रेम के बारें में सभी साधारण जन के जीवन में कभी भी पूर्ण ज्ञान नहीं होता है। और इस पर राजा ने आश्चर्यचकित हो कर कहा जो कभी खत्म नहीं होता है। तो वह कभी पैदा भी नहीं होता हैं इसलिए कोई भी प्रेम के बारें कभी भी कुछ भी जान नहीं पाता है। इसलिए प्रेम के बारें सभी एक प्रकार से बच्चें के समान हैं। और यह बच्चों की एक कला है। तब चेतना ने कुछ देर तक शांती से केवल राजा की आंखों में देखा और फिर कहा हे राजा इस प्रेम के लिये किसी प्रकार के उम्र का कोई प्रतिबंध नहीं है, ना यह बच्चों के लिये है, ना ही यह युवा के लिए है इसके लिये किसी प्रकार की कोई उम्र मायने नहीं रखती है, यद्यपि यह हमारें पुर्वजों के द्वार हमें विरासत के रूप में मिलती है। और इसको हमें अपने हृदय में संरक्षित करना पड़ता हैं। जिस प्रकार से इस संसार में कोई वुद्धि मान मानव यहाँ पर रहने के नियम को अपने अनुभव से जान लेता है। इसको जानने में उसके सर के बाल मटमैले हो जाते हैं, लेकिन कुछ ऐसे भी लोग इन इनके मध्य में होते हैं जिनकी यादास्त बहुत अधिक मजबुत होती है। और वह ज्ञान को अपने एक जन्म से दूसरें जन्म तक लेकर चलते हैं। इस लिये उनका ज्ञान कभी खत्म नहीं होता है। इसलिए प्रेम उनका साथ कभी भी नहीं छोड़ता है। यहीं लोग वुद्धिमान कहे जाते हैं, इसके पिछ जो मुख्य कारण है, कि वह अपनी आत्मा सें निरंतर जुड़े रहते हैं, जिसके कारण उनके हृदय में आत्मा का जो विशेष गुणों में एक गुण प्रेम है वह निरंत विशाल परमेश्वर रुपी आकाश से बरसता रहता है। और उनके हृदय को निरंतर तरोताजा करता रहता है। यह प्रेम उनके जिवन में आता है जिनके पिछले जन्म के जीवन स्पष्ट रूप से रह चुका है और इसको वही जानते भी हैं। जिसमें से ही एक मैं भी हुं और इस तरह से मेरे हृदय में कई जन्मों से मैंने प्रेम को सुरुक्षित रखा है, जिस प्रकार से कोई बच्चा होता है, इस प्रेम के मामले में बच्चा किसी एक राजा से आधिक वुद्धिमान होता है। और इस तरह से इस प्रेम के मामलें में मैं आपसे अधिक वुद्धिमान हुं, क्योंकि मैं अपने पिछले जन्म से ही परमेश्वर की उपासना कर रही हूँ अपने हाथों को जोड़ कर और उनके चरणों में पुस्पों को समर्पित करते हुए, जिसके कारण ही मैं उस परमेश्वर कुछ गुप्त राज को अपने पक्ष में कर लिया है। जिसके

कारण मैं किसी मानव के हृदय और उसकी चेतना में स्वरुप का साक्षात्कार करने में समर्थ होचुकी हुं। जिसने मुझे इस जन्म में भी प्रभावित किया है और अब मैं आपको कुछ बताऊंगी। जिसके बारें में आपको कुछ भी नहीं पता है। प्रेम एक तीन पत्तों वाला वृक्ष हैं और जब यह तीन आपस में दृढ़ता के साथ एक हो कर जुड़ जाते हैं, तो इनको कोई भी नहीं तोड़ सकता है और ना ही इनका कोई अंत कर सकता है, यहाँ तक इनका मृत्यु भी कुछ भी नहीं कर सकती है। लेकिन यदि तीनों में से कोई भी स्वयं इनसे अलग हो जाता है, तो यह परिस्थितियों और जीवन के परीक्षणों के दबाव में पड़ता है। और इसी प्रकार से यह आपके साथ भी हुआ था। आपके मामले में, तीनों संयुक्त नहीं थे और आपका प्यार एकजुट नहीं था नाही उसमें सद्भाव ही था। फिर उसने कहा तीन प्रकार के प्रेम को एक स्थान पर मिलना अति आवश्यक है, जिसके कारण ही प्रेम किसी के जीवन में श्रेष्ठता और पूर्णता को उपलब्ध होता है। और यह तीन वस्तुए इस प्रकार से है, पहला उस आदमी का शरीर, दूसरा उस आदमी की वुद्धि और तीसरा उस आदमी की आत्मा का शंष्लेषण अर्थात इनका एकीकरण ही प्रेम कि पूर्णता का परम साधन है। और यह प्रेम के तीन साधन केवल स्त्री और पुरुष के मध्य में स्थित हो सकते है। क्योंकि प्रत्येक पुरुष स्त्री की सौंदर्यता पर अधिक ध्यान देता हैं या आकर्षित होता हैं और ऐसा स्त्री के साथ भी होता है। यह एक दूसरें के शरीर के स्तर पर आकर्षित होते हैं और जब यह संभोग की स्थिती में आलिंगन बद्ध होते हैं तो सर्वप्रथम इनकी दो शरीर का भाव कुछ समय के लिए मिट जाता है। और यह बुद्धि स्तर परएक हो जाते हैं जिसकें कारण ही इनकी वुद्धि से हो कर ही आत्मा तक जाने का एक विशेष प्रकार के भाव का संचार होता है जिसे प्रेम कहते है। जब यह प्रेम आत्मा से निकलता हैं बुद्ध को पार करके शरीर तक पहुंचता है वहीं सच्चा प्रेम हैं जो परमेश्वर से जुड़ता है इसके अतिरिक्त जो शरीर और बुद्धि से किया जाता हैं वह आत्मा में प्रवेश नहीं कर पाता है, क्योंकि बुद्धि की सिमा सिमीत हैं जिसके कारण यह असिम प्रेम को स्वयं में संरक्षित करने में समर्थ नहीं होती है जैसा कि आप के साथ भी हो रहा है। आप बुद्धि से प्रेम करते हैं अभी प्रेम का अंकुरण आपकी आत्मा में मही पाया है। औरइसके अतिरिक्त हर किसी का अपना एक अचेतन पक्ष होता है। जिसके कारण ही कोई एक मानव किसी दूसरें प्राणी की तरफ आकर्षित नहीं होता हैं, उदाहरण के लिए कोई पुरुष किसी पशु से अपनी कामवासना को तृप्त नहीं करना चाहता हैं, क्योंकि उसमें दूसरें के शरीर में किसी प्रकार का आकर्षण नहीं होता है। तो इस प्रकार से यह पहला प्रेम का चरण हैं किसी पुरुष को विपरीत शरीर की आवश्यक्ता जिससे वह अपनी वासना को तृप्त करने के लिए एकीकरण अर्थात संभोग स्थापित कर सके, और वह अपने प्रेमी के प्यार को हमेशा के लिए बनाए रखना चाहता है। पहले बिना दोष के शरीर होना चाहिए, नहीं तो उसकी इंद्रियाँ उसे लेकर अन्य निकायों कि तरफ भटक जाएंगी, क्योंकि उनकी प्रकृति उनकी उचित वस्तु की तलाश है और दूसरी बात, बुद्धि, या उसका सम्मान कहीं और प्रस्थान करेगा और तीसरा, भलाई या उसकी आत्मा उसे त्याग देगी, जिसके लिए वह ऐसा नहीं कर सकती है। और जिसके बिना, एक समय के अलावा, अन्य दो घटक भाग बेकार हो जाते हैं। और जैसा कि यह महिला के साथ है, वैसे ही यह पुरुष के साथ भी है, इस अंतर के साथ कि उनके शरीर और बुद्धि और उनके आत्माओं के टुकड़े पूरी तरह से विपरीत हैं। यह एक स्त्री के लिए जो गुण है, वही यह किसी पुरुष में इसके विपरीत हो सकता है। और उसकी कमजोरी उसकी ताकत और यहाँ तक कि उसका आभूषण भी हो सकता है। परन्तु बुद्धिमानी से अपने प्यार की उचित वस्तु को चुनने में मूर्ख मत बनो।

हृदयोत्सव

निस्संदेह वह सुंदर थी, लेकिन वह सब कुछ थी और अब यह निश्चित रूप से आपके लिए अच्छा हैं, और कोई नुकसान भी नहीं है कि उसने आपको धोखा दिया था। क्योंकि उस समय आप प्रेम की तलवार की धार से घायल हो गये थे, अभी तक समय और यह हो सकता है, परिस्थिति इसे ठीक कर देगी और निश्चित रूप से समय आपको अपने मामले में आपको नया मार्ग दिखाया। हो सकता है कि एक तत्व आपके प्यार की पूर्णता को चाहते थे और यह आपसे सहन नहीं होता है और अब तुम स्वतंत्र हो और अपनी गलती के लिए के स्वयं को दंडित कर लिया है। और आप बुद्धिमान हैं यह आपको शोक से आनन्दित करता है। कौन जानता है कि भविष्य में उसे क्या इंतजार है? और कौन उच्चतम अच्छाई को प्राप्त करने की उम्मीद कर सकता है। जो नहीं जानता कि यह कैसा है? और तुम मेरी मालकिन के साथ प्यार की पूर्ण त्रैतवाद की एक रुपता को पा सकते हो, क्योंकि मैं आशा करती हूँ कि वह तुम्हारे योग्य है।

और जैसे ही उसने बात की, राजा उसके बात जादू में खड़ा था। लेकिन जैसे ही उसने अपनी बात को समाप्त किया, फिर राजा ने कहना शुरु किया और कहाँ यह हमारें तुम्हारें बिच में जो बात-चित हो रही है। इसके बारें में अपनी मालकिन से बात मत करना, क्योंकि वह नीति और राजनीति का विषय है, केवल तुम मुझे अपने बारे में बताओ, निश्चित रूप से तुम प्रेम के अमर बनाने के लिए पर्याप्त और मजबूत हों, और अपने प्रेमी को अपनी गाँठ से बांधती हों, जो कभी नहीं टूटेगा। लेकिन चेतना ने अपनी उंगली को राजा के होंठ पर रखा, और उसने राजा को अपने सुंदर सिर को हिलाकर संकेत में कहा हाँ! इस प्रकार मुझसे बात मत करो, या मैं फिर से नहीं आऊंगा और उसने राजा को मुस्करा कर देखा और राजा के पैरों पर फूलों को रख दिया और वहाँ से चली गई। जो धिरे धेरे राजा से दूर होती गई। यद्यपि वह राजा की आँखों से गायब होने से ठीक पहले ही जंगल में वृक्षों के मध्य में वह घूमते हुए कहीं खो गई । उससे पहले उसने एक बार मुड़ कर राजा को देखा और फिर उसने जंगली पेड़ों के मध्य में प्रवेश किया और उसकी आंखों के सामने से गायब हो गयी।

और राजा ने अपने पैरों पर पड़े फूलों को उपर उठाया और उसे अपने होंठों से लगा लिया और उसने अपने आप से कहा चंपक, तुम्हारी गंध प्यार की सुगंध के सार के समान है। और यह अच्छी तरह से इस अनूठी लड़की के शब्दों के अनुकूल है, जो कि सृष्टिकर्ता की इच्छा से अवगत स्वयं के समान सार जैसा दिखती है, एक पूरी तरह से अलग, अभी तक समान रूप से स्वादिष्ट रूप में विद्यमान है और वह अपने हाथ में फूलों को लेकर मंदिर में वापस चला गया, मधु के शब्दों पर ध्यान में खोया हुआ और सभी के बारे में पूरी तरह से अनजान। उसकी सुंदरता के लिए, एक चालाक चित्रकार की तरह, एक तस्वीर को दूसरे के लिए जगह बनाने के लिए, जिसने एक तस्वीर को अपनी आत्मा की सतह पर उदास यादों के साथ छोड़ दिया था।

कमल पुस्पों का रसास्वादन

तब पूरी रात, वह पत्तियों के बिस्तर पर अच्छि तरह से सो गया और सुबह सूरज उग आया आकाश में गुलाब के समान लालिमा लिए हुए और जब वह मंदिर से बाहर आया, तो उसने झिल के किनारे पर उसके लिए एक लाल कमल के फुल को लेकर चेतना को इंतजार करते हुए देखा और वह अपनी आंखों में एक दिखने वाले रूप में अपने मन की शांति की तरह लग रही थी और जब वह उसके पास गया, जिसने उसको देखते हुए कहा, मेरी मालकिन अपने भगवान को, इन अयोग्य हाथों के द्वार इस फूल को भेजा है। और यदि आपके रात्री अच्छि तरह से व्यतित हो गई हैं, तो यह उसके साथ अच्छा है।

तब राजा ने कहा प्रिय चेतना वहीं अच्छी तरह से सोता है, जो अपनी शांति को वापस प्राप्त कर लेता है। और अपने पक्ष में मैंने इस रात को अच्छी तरह से सोया हुं, क्योंकि मैंने कई लोगों के लिए कई रातो से सोया नहीं था और उसने कहा यह नई शांति कहाँ से आई है? और राजा हँसा और कहा एक कुशल चिकित्सक ने कल मुझे एक नींद वाली दवा दी। तब उसने कहा, वे भाग्यशाली हैं, जिनके पास कुशल चिकित्सक हैं, क्योंकि वे कम ही हैं। तब उसने कहा जिस दवा ने मुझे नींद लायी, वह तुम्हारी आवाज़ की मधुरता और तुम्हारी दृष्टि के अमृत से जुड़ी हुई औषधि रूप में है। और मुझे आशा है कि यह इलाज मुझको प्रभावित कर सकता है, क्योंकि पहले मैंने सोचा था कि मेरा मामला बेताब और वेचैनियों वाला है। तब चेतना ने हंसना शुरू कर दिया और उसने कहा हे राजा, सावधान रहो! क्या यह एक या दो दिन पहले नहीं था कि आप पश्चिम की पूरी दौड़ के साथ चल रहे थे,अर्थात आप संसार के औरतो के खिलाफ थे और उनपर परिवर्तनशीलता का आरोप लगा रहे थे? और अब एक ही हमारी मुलाकात और एक खुराक में आप इसके लिए स्विकार करने में सक्षम हो रहे हैं? तब राजा ने कहा तू दुर्भावनापूर्ण है, चेतना तुम अच्छि तरह से जानती है, जो सत्य नहीं हैं, वह सब केवल मेरे अतित के प्रतिद्वन्दि थी, जिसके कारण मेरा ऐसा स्वभाव बन गया था। फिर चेतना ने कहा नहीं आप मेरे सामने पहली बार इस प्रकार से आये थे जैसे आप कोई मछुआरें हैं।

ऐसी ही एक मछुआरा अतित में हुआ करता था, जो किसी समय में किसी और देश में मछली पकड़ने का कार्य करता था और एक दिन उसने अपनी जाल को समन्दर में फेका, जिसकी जाल में उस दिन एक सोने की मछली फंस गई, तब उसने उस मछली को आनंदित होकर उठाने के लिए झुका, तभी मछली वापिस उसके हाथों से फिसल कर दुबारा समन्दर में कुद गई। इस कारण से वह बहुत निराश होगया और उसकी आंखों में आंसु आगये, इस लिए उसने समन्दर का त्याग कर दिया। और अपनी शरीर को भी त्यागने के लिए तैयार होगया, और वह चिल्लाया कि आह मेरा जीवन पुरा हो गया। क्योंकि मेरा जीवन स्वर्णमय मछली के शरीर के लिए हुआ था, जो अब उसके बिना बेकार हो चुका है। इसके बाद कुछ देर में उसने अपने आपको फिर से तैयार किया और वह वापिस समन्दर में गया और उसने अपनी मछली पकड़ने वाली जाल को समन्दर के पानी में दुबारा फिर से फेंका, और इस बार उसकी जाल में चांदी की मछली फंस गई, और तत्काल वह अपनी सोने की मछली को भुल गया। और बड़ी उत्सुक्ता के साथ अपने हाथों से जल्दी जल्ली जाल को उपर खिचने लगा, मछली को

पकड़ने के लिए। लेकिन यह मछली भी उसके हाथ में आने से पहले ही फिसल कर पानी में पहले की तरह से कुद गई। और इस बार फिर मछुवारा स्वयं के भाग्य पर बड़ी निराशा के साथ दुःखी होगया। और अपने भाग्य को बुरा भला कह कर कोसने लगा, और इसके साथ ही उसने समन्दर किनारे को छोड़ दिया। और अपना बहुत-सा समय उन मछलियों के खोने के प्रायाश्चित में गुजारता रहा। कुछ समय के बाद वह एक बार फिर समन्दर किनारे अपनी जाल को ले कर आया, और अपनी जाल को एक बार फिर समन्दर में फेंका, जिसमें एक सामान्य-सी मछली ही फंसी जो साधाराण हाड़ मांस से बनी हुई थी। और इसको उसने अपने हाथों में पकड़ कर अपने साथ ले गया, और इसको पाकर वह पुरी तरह से खुश था, और इसको पाकर वह सोने और चांदी की मछलियों को पुरी तरह से भुल गया, जैसे वह कभी उसके जीवन में आई ही नहीं थी।

फिर राजा ने कहा प्रिय चेतना मैं इस पर तुम पर बहुत क्रोधित हुं, जो तुमने मेरी तुलना एक बेकार से मछुआरें के साथ कि है, अगर मैं ऐसा कर सकता हुं, तब चेतना ने कहा हे राजा सावधान रहो ऐसा नहीं है कि समांतर हमेंसा बेहतर और सटीक होना चाहिए। तब राजा ने कहा कि तुम मेरी तुलना एक आग से कर सकती हो जो पुरी तरह से वुझ चुकी हैं जिसको फिर से जलाया नहीं जा सकता है, जिससे कि हर एक साधारण आदमी घृणा करता है, सामान्य इन्धन से भले ही मलय पर्वत के उपर उगने वाला चंदन का ही वृक्ष हो, जिसको एक बार जलने के बाद, दूबारा राख को फिर से जलाया नहीं जा सकता हैं। वही आज मेरी स्थिती हैं जिसका हृदय एक बार भौतिक रूप से जल चुका है। और राख में तब्दिल हो चुका हैं जिसमें से पुनः अग्नि की ज्वालाओं का भड़कना संभव नहीं हैं।

तब चेतना ने कहा अब मेरे जाने का समय हो गया हैं। और उसने कमल पुस्प को राजा के चरणों में रख कर वहाँ से धिरे-धिरे चली गई, लेकिन कुछ दूर जाने के बाद एक बार पिछे मुड़ कर राजा को देखा और फिर जंगल के घने वृक्षों में कहीं लुप्त हो गई। और इसके बाद राजा ने निचे झुक कर अपने पैरों पर पड़े कमल पुस्पों को उठाया और कहा हे कमल मैं सच में उस आग की तरह हूँ जो बुझ चुकी हैं, और वह निश्चित रूप से मेरे लिए इंधन के रूप हैं, अथवा वस्तुतः वह कुछ औऱ भी हो सकती है। जैसे मैं उसके लिए इंधन के समान हूँ और वह आग के समान है। क्योंकि वह निश्चित रूप से मुझको एक ज्वाला कि तरह से जला सकती है, या इससे भी कुछ अधिक, अब वह जा चुकी है फिर वह कब हमारें पास आयेंगी यह कौन जानता है? इसलिए ओ लाल कमल पुस्प मैं तुमको आज पूरे दिन तक अपने साथ ही रखुंगा, क्योंकि तुम में उसका खुद के एक टुकड़े जैसा दिखते हो, जिसको उसने अपने पीछे छोड़ा है, मुझे बर्फ की एक गांठ की तरह उसकी अनुपस्थिति में दोपहर की गर्मि में ठंडा करने के लिए हो। और वह मंदिर में वापस चला गया, अपने हाथ में कमल फुलो को लेकर, भविष्य में मिलने वालें भोजन कि जिज्ञासा के साथ और अपने सारे अतीत को भूल गया।

और मंदिर में वापिस आकर अपने पत्तों के विस्तर पर सोगया। और राजा ने उसकी याद में सारी रात अपने स्वप्नो में मधु (चेतना) को ही देखता रहा, और सुबह सूर्य उदय होने से पहले ही उठ गया। और मंदिर से बाहर आकर झील के किनारे बनी सिढ़ियों पर खड़ा हो कर चकइ चकवा के गित को सुनने लगा, जिसमें वह गा रहे थे, पी कहाँ-पि कहाँ वह दोनो प्रेमी रात्री की जुदाई के बाद सुबह फिर से

मिलते हैं। इसी प्रकार से राजा भी अपनी प्रेमिका के इंतजार में खड़ा था तभी उसने झिल के किनारें के पानी में चेतना के चमकते कदमों की चमक को देखा जो उसके पास ही आ रही थी। और उसने अपने हाथों में श्री फल के वेरियों को ले रखा था और वह राजा के पास आकर राजा से कहा इसे मालकिन ने अपने भगवान के लिए इन तुच्छ हाथों से भेजा है। और कहा है कि यदि आपने अपनी रात्री को अच्छी तरह से बिताया होगा, तो यह उनके लिए बहुत अच्छा होगा।

तब राज ने कहाँ प्रिय चेतना मैं नहीं बता सकता कि मैं सारी रात सोया या केवल जागत रहा, मैं केवल इतना जानता हुं कि मैं सारी रात अपनी प्रियतमा को देखता रहा और सारी रात उसकी रस भरी बातों को सुनता रहा, मैं नहीं जानता की वह स्वप्न था या वह मेरे जीवन का यथार्थ था। तब चेतना ने राजा को बनावटी आकर्षण से देखा और कहा यह लक्षण तो बहुत ही खतरनाक है। इसके लिए आपको किसी चिकित्सक से मिलना होगा। आपकी स्थिती तो बहुत अधिक जोखिमपूर्ण और नाजुक है, ठीक उसी प्रकार से है जैसे पागल आदमी किसी पत्थर के प्रेम में आसक्त होजाता है। तब राजा ने कहा सुन्दरी मैं तुममें और पत्थर में कोई अंतर करने समर्थ नहीं हूँ। या फिर मैं पत्थर और आप के बीच कुछ भी समानता नहीं देखता हूँ। और तब चेतना ने कहा मैं आपके लिए एक पत्थर से अधिक नहीं हो सकती हुं, और तब राजा ने कहा मुझे उसकी कहानी बताओ। क्योंकि मुझे परवाह नहीं है कि यह मेरे जैसा है या नहीं: और इस बीच, मैं तुझे देखूंगा और तेरी आवाज़ सुनूंगा।

तब चेतना ने कहना शुरु किया और कहाकि बहुत समय पहले कि बात है एक राजा हुआ करता था और वह अक्सर जंगल में शिकार करने के लिए जाया करता था, एक बार ऐसे ही शिकर करने के लिए जब वह जंगल में गया तो उसको एक पुरानी प्राचिन मंदिर मिली, जिस मंदिर के दिवाल पर बहुत देवियों की मुर्तियाँ पत्थर पर उकेरी गई थी, जिसके कारण राजा की निगाह मुर्तियों पर पड़ते ही वह उनके प्रेम में गिर गया, जिसके कारण कुछ भी करने के लिए तैयार हो गया। वह किसी भी सर्त पर उस मुर्ति को अपनी आँखों से दूर नहीं कर सकता था। इसलिए उसने अपने आदमियों को भेज कर उस मंदिर की दिवाल से उस मुर्ति को बिना किसी भी प्रकार के नुकसान के निकाल कर उसके पास लाने के लिए कहा। वैसा ही उसके आदमायों किया जो उनके राजा ने कहा था, इस प्रकार से राजा उस मुर्ति को मंदिर कि दिवाल से निकलवा कर अपने साथ उसको लेकर अपने महल में लो कर आया। और उस मुर्ति को अपने महल के एक कमरें में स्थापित करवा दिया, और वह राजा रात दिन उसी मुर्ति के साथ ही रहा करता था, कभी भी वह उस मुर्ति को अपनी आंखों से दूर नहीं होने देता था। वह उस मुर्ति का चुंबन लिया करता था और उसका बहुत अधिक ध्यान रखता था, और एक दिन राजा ने उस मुर्ति को बहुत अधिक झिड़की लगाई, कि मैं तुम्हारा इतना अधिक ध्यान देता हुं, और तुमको मेरी बिल्कुल कोई परवाह ही नहीं हैं। ऐसे ही वह एक रात को जब अपने महल के कमरें में अपने विस्तर पर लेटा हुआ था। उसने अपने मन में सोचा कि वह दिवाल कि सुन्दरता की देवी अचानक दिवाल से बाहर निकल गई, और वह अब पत्थर कि नहीं हैं यद्यपि वह सामान्य किस्म की हाड़ मांस और खुन से बनी हुई एक औरत है। जो गर्मजोसी और जीवन के आनंद से भरी हुई है। लेकिन जैसे वह उसके अपने बाहों में भरने के लिए आगे बढ़ा रहा था। लगभग खुद के बगल में खुशी के साथ लेकर सोने के लिए, अचानक तभी उसी समय सड़क पर एक पहरेदार चिल्लाकर-चिल्लाकर किसी को पुकरने लगा।

जिससे राजा को उसके उपर बहुत अधिक क्रोध आया। जिसके कारण राजा ने पहरेदार को अपने पास बुला कर तलवार से तुरंत मार डाला। और महल के साथ शहर के हर पहरेदार को उसके काम से निस्कासित कर दिया। और उसने अपने जीवन के बाकी हिस्सों को अपने सपने में देवी के साथ अपनी बैठक का निष्कर्ष निकालने की कोशिश की लेकिन फिर भी वह कभी सफल नहीं हो सका । और जब वह जाग रहा था, तब वह सब कुछ के लिए अवमानना से भर गया था, खुद से कह रहा था, यह पूरी दुनिया पत्थर की तरह है, उस वास्तविक मूल की एक निर्जीव प्रतिलिपि जिसे मैंने उस समय, देवता के पक्ष में, मेरे सपने में पाया और निश्चित रूप से वह पागल है, जो अपने पूरे जीवन को सपने में भी एक चीज़ के लिए अपरिहार्य बनाता है। और मैं तुम से हूँ और यदि आप मेरी मालकिन को भूल जाते हैं, तो आप निश्चित रूप से उसके समान होंगे, आप अपनी कल्पना को आपके लिए निषिद्ध वस्तु पर ठीक करने की अनुमति देते हैं। हे राजा, क्या यह सच नहीं है और तुलना सटीक नहीं है?

तब राजा ने कहा मुझे नहीं पता मैंने तुम्हारी कहानी नहीं सुनी, क्योंकि मैं तुम्हारें होंठों को देख रहा था जिन्होंने पूरी तरह से मुझ पर अपना कब्जा कर लिया था। और मुझे आश्चर्य हुआ कि मैंने उन्हें पहले कभी नहीं देखा था। मुझे दोबारा बताओ और मैं अपनी आंखें बंद कर लुंगा, ताकि आपकी सुंदरता हस्तक्षेप न करे, और मुझे आपके शब्दों के अर्थ को समझने से ना रोकें, और वह हँसी और कहा निश्चित रूप से मैं सही हूँ और तुम्हारी इच्छाएँ तुम्हें छोड़ नहीं रही हैं। और चेतना ने राजा के पैरों पर श्री के कुछ फुलो को रखा और वह राजा के वापस देखे बिना चली गई। और जब वह पेड़ों के बीच में खो गइ। तब राजा ने निचे झुक कर अपने पैरों के पास पड़ें श्री के फुलों को उठाया और उसने कहा श्री के फुल आप अच्छी तरह से अपने नाम से जाने जाते है। क्या आपने यह अपने पूर्व जन्म में योग्यता से हासिल किया है,या फिर आपको पेड़ से गीरने और उसके हाथ में को प्राप्त करने का विशेषाधिकार मिला है। जबकि आपके भाइयों और बहनों को पेड़ पर विघटित और दुखी छोड़ दिया गया था? और वह मंदिर में वापस चला गया, उन्हें अपने हाथ में पकड़ कर, अपने होंठों की यादों से प्रेतवाधित किए हुए , जिनके रंग के समान ही वे थे, एक और सुबह इंतजार करने के लिए। उस सौंदर्य के देवी के लिए जो देवीयों की देवी है।

और वे श्री के फुल उसके सामने पड़े हुए थे, क्योंकि वह सारी रात पत्तियों के बिस्तर पर सो गया था और सुबह में वह सूरज उदय होने से पहले रोज की भांती उठ गया, और बाहर चला गया, और झिल के कगार पर आकर खड़ा हुआ। और जैसे ही वह उनकी सतह पर देख रहा था, उसने देखा झील के पानी पर एक तेंदुएँ की त्वचा पर जिस तरह से काले धब्दे के निशान पड़े होते हैं ठीक उसी तरह से झील की सतह पर कमल पुस्प अपनी पंखुड़ियों फैलाए हुए बिखरे थे। उनको देखने के बाद उसके दिल में एक संदेह जागृत हो गया, जब उसने चमगादड़ की छाया पानी की सतह पर देखा, जो सुबह से पहले झील के पानी के उपर अपनी आखिरी उड़ान ले रहे थे। और उसने खुद से कहा हे, वह सुंदर है, लेकिन हाँ! वह एक औरत है, क्या मैंने उसे अपने दिल में इन चमगादड़ों की तरह प्रवेश करने की अनुमति देने में अच्छा प्रदर्शन किया है। और उसने तुरंत, उसे उसकी तरफ अपने हाथों में एक शिरिशा के फूल के साथ, अपने पास आते हुए देखा और वह उसके पास आई और कहा मेरी मालकिन

ने अपने भगवान को, इन अयोग्य हाथों के द्वारा, इन फूल को भेजती है। और यदि आपने मीठी निद का अपनी रात्री में आनंद लिया है, तो यह उसके साथ बहुत अच्छा हुआ है।

तब राजा ने कुछ देर तक उसको देखा जो मुस्कुरा रही थी जैसे सूर्य उसके होठों पर बैठ कर अपनी किरणों को बिखेर रहा हो, जिसके कारण ही संसार का अंधकार मिट रहा है। और तब राजा ने कहा प्रिय चेतना वह कैसे अच्छि तरह से सो सकता है, जिसके पास संदेह और भय के आतंक की छाया हर पल छायी रहती है। जिस प्रकार से जो पौधे वृक्ष के निचे उगते हैं वह अपनी पूर्णता को कभी उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। क्योंकि उनको उस बिशाल वृक्ष की छाया विकसित होने का मौका ही नहीं देती है। क्योंकि मैं अपनी जीवन नैया को पुनः संसार के भव सागर में रखने की तैयारी कर रहा हुं, जिसके लिये मैंने पहले से ही अपनी शरीर रूपी नाव को भी तैयार कर रखी है, जो निले-निले आकाश के निचे भव सागर है, जिसकी हसंती, मुस्कुराती मुलायम और शांत लहरें है, जिसमें किसी प्रकार कि उत्तेजना भी नहीं उठ रही है और अभी मेरे साथ हैं, जैसा कि पहले मेरे साथ पहले भी हो चुका है। जब इन शांत और आरामदाय भवसागर कि लहरों नें मुझको धोखा के साथ मेरे साथ छल भी किया था। जिसको मैं अभी बिल्कुल भुल चुका हुं। और अब मुझे अपने इन छोटे-छोटे वृक्ष की छाल से बने कपड़ों से अत्यधिक प्रेम के साथ दूबारा भरोसा भी होगया है। इस पर चेतना ने राजा की आँखों में कुछ पल के लिए भाव बिभोर हो कर बड़ें आग्रह से देखा, जिसके कारण उसकी आँखों से अश्रु पात होने लगा और तब उसने कहा मृत्यु के मुख में पड़े हुए मानव के पास दो प्रकार के मस्तिस्क होते हैं। और जो साहस या विश्वास की इच्छा के लिए उद्यम नहीं कर सकता, वह कभी भी जीत नहीं रह सकता है। उसके लिये इस ब्रह्माण्ड के भव सागर रुपी खजाने में कुछ भी नहीं मिलने वाला है। क्योंकि उसकी रक्षा हमेंशा घुम-घुम कर राक्षस, शैतान और दैत्य निरंतर करते हैं, इसी में बहुमुल्य आभुषण से सुसज्जित स्वर्गिय अप्सराएँ भी रहती हैं।

बहुत समय पहले कि बात हैं एक बहुत बड़ा व्यापारी था जिसका केवल अपना एक ही पुत्र था जो अपने व्यापार के शिल-शीलें में अपनी नाव के साथ दूर किसी दूसरें देश की यात्रा कर रहा था, जिसके कारण उसने हजारों किलोमिटर समन्दर कि लहरों पर अपनी नाव के साथ सवारी करता रहा, जब तक कि वह समन्दर के मध्य में नहीं आगया। तभी अचानक समन्दर में तुफान आगया, जिसके कारण उसके जहाज की पाल नाव से निकल कर उससे दूर जाकर गीर गई। और जहांज ने यात्रा करना बंद कर दिया और अचानक समन्दर कि हरी-हरी लहरों के मध्य में उसके सामने एक मुंगा का वृक्ष प्रकट हो गया और उस वृक्ष की एक शाखा पर उस समन्दर की देवी बैठी हुई थी। और उसके अंगो से समन्दर का झाग बुंद-बुंद करके टपक रहा था, उसकी छातियों पर जैसे मोती जड़ा हुआ हो ऐसा प्रतित हो रहा था, जो समन्दर में मलाई कि तरह से बह रहा था। और उसके लंबे बाल लहरों पर पड़े हुए थे, जो उसके स्तनो के निचें हिलकोरें ले रहे थे। और उसने व्यापारी के पुत्र को अपने पास बुलाया, और कहाँ की तुम तुरंत समन्दर में छलांग लगा कर मेरे पास आ जाओ। और मेरे साथ अपने जीवन को व्यतित करो, और मैं तुमको ऐसे आभुषणों को दुंगी जिसको कभी भी किसी व्यापरी ने नहीं देखा होगा। और मैं तुमको कुछ दिव्य अद्भूत अनुभूतियों के आनंद से अभिभूत करुंगी। जिसका अब तक कभी किसी नस्वर मनुष्य ने स्वाद भी नहीं पाया है। इस पर उस व्यापारी के डरपोक बेटे की आत्मा ने और

लहरों की भयावह आतंक से किसी तरह से स्वयं को संतुलित कर लिया था । और वह समन्दर में कुदने का प्रयाश करने लगा, लेकिन वह समन्दर में कुदने के लिए, स्वयं की आत्मा के अंदर इतनी हिम्मत को नहीं पैदा कर सका, जिसके कारण कुछ ही पलों में समन्दर में उगने वालें मुगें के वृक्ष के साथ उस पर बैठनें वाली समन्दर की पुत्री भी पानी में समा गई। और उसकी आँखों से अदृश्य हो गई, और वह विस्तृत समन्दर में अकेला रह गया। जहाँ पर उसके चारों तरफ पानी और उपर आकाश के कुछ भी नहीं दिख रहा था। फिर वह अपनी यात्रा को किसी तरह से आगे जारी रखा, प्रायश्चित और इनिच्छा भावनाओं से भरे हुए हृदय के साथ, फिर वहाँ कुछ देर में समन्दर की हवावों में अचानक बदलाव आगया और वह बहुत अधिक प्रचंड होगई जिसके कारण उस डरपोक व्यापारी के पुत्र की नाव समन्दर में डुब गयी। और वह स्वयं समन्दर में ही डुब कर मर गया। जिसके कारण ही जो उसको मिलने वाला खजान था। उससे तो हाथ धोया ही, साथ में अपने जीवन हाथ से भी अपने हाथ धो लिया। जिसे वह बचा सकता था, इस प्रकार उसने अपना खजाना खो दिया और स्वयं को खतरे से बाचा लिया, लेकिन अपनी आत्मा को अपनी शरीर से अलग कर दिया। इसलिए हे राजा, यह जीवन समुद्र के लहरों की तुलना में कहिं उससे अधिक अस्थिर है, जैसा कि यह बहुत अधिक बुद्धिमानों को ही यह दिखता है। और इसमें क्या शामिल है? जो इसे खोने के बीच एक पल के लिए संतुलन के दौरान नायक के लायक बनना चाहिए। और किसी भी जीवन में केवल एक बार भाग्य जीतने के लिए मौका मिलता है। जिसको जीतना ही चाहिए और ऐसा अक्सर नहीं होता।

फिर चेतना ने राजा के कदमों पर श्रीशा के फुलों को रख कर वहाँ से घुम कर राजा से दूर चला गई, धिरे-धिरे वह चल कर जंगलो के मध्य में वह कहि खोगई। और राजा ने फिर अपने कदमों पर पड़ें श्रीशों के फुलों को अपने हाथों से उपर उठा लिया। और कहा ओ श्रीशा के फुलों तुम उसके समान सुंदर हो, क्योंकि तू दुःख को हरने वाला है। अब क्या करु मैंने अपनी प्यारी चेतना को अपने अयोग्य संदेह से धोखा देकर नाराज किया है? लेकिन आह! वह एक महिला है। महेश्वर ने उन्हें महिलाओं की श्रेणी से बाहर क्यों नहीं उठाया और उसको महिलाओं की एक प्रजाति में रखा कि मुझे याद नहीं होगा जब मैं उसकी अपूर्णताओं को देखता हूँ। जो उसके सभी कामवासनाओं से अविभाज्य हैं। और वह अपने हाथ में फूल को लेकर, मंदिर से वापस चला गया, खुद से नाराज हो गया और पहले के समान और अधिक चेतना के प्यार में खो गया था।

और वह सारी रात पत्तियों के बिस्तर पर अपने संदेहों के लिए पश्चाताप करता रहा, और इसी में पुरी रात बित गई सुबह में वह सूरज के उदय होने से पहले ही फिर उठ गया। और मंदिर से बाहर निकल आया, और पूर्वी आकाश जो एक दुधिया पत्थर की तरह से अपनी रंग को बदल रहा था। क्योंकि रात सुबह से पहले चली गई थी, लेकिन अभी तक चेतना नहीं आयी थी। और दिन धिर-धिरे बढ़ने लगा, जिसके कारण राजा उसके ना आने के दुःख के कारण से पिला पड़ने लगा था। और अपने आप से कहा क्या इसका मतलब हैं कि वह मुझको एक दिन और अपने साथ अकेला रहने के लिए छोड दिया है। और अंत में राजा ने देखा जब सूर्य पूरी तरह से आकाश में अपनी आभा के सामराज्य को फैला चुका था। तब चेतना को धिरे-धिरे अपनी तरफ आते हुए, जिसने अपने हाथों में बैगनी कदम के फुलों

को ले रखा था, जिसकी आँखों से ऐसा लग रहा था। जैसे वह स्त्री के रूप में अमृत के मिलाप के लिये राजा के पास आइ हो, जब वह राजा के पास आई तो उसने कहा मेरी मालकिन नेअपने भगवान के लिए इन अयोग्य हाथों के द्वारा आपके लिए इन कदम के फुलों को भेजा हैं, यदि आपको रात्री में अच्छि निद आयी हो तो यह उनके लिए बहुत अच्छि बात होगी।

तब राजा ने चेतना से कहा उसको कैसे रात्री में अच्छि निद आ सकती है? जो इन्तजार कर रहा हो अपने अफराध को क्षमा करने के लिए और अपने पाप को स्विकारने के लिए? तब चेतना ने कहा आप क्या कह रहें हैं? राजा ने कहा मैंने अपनी वृक्ष की छाल को बहुत समय पहले संसार समन्दर के मध्य में बहने के लिए छोड़ दिया है, अभी मैं कुछ भी नहीं चाहता लेकिन मेरी हार्दिक आंतरिक इच्छा हैं कि मैं उस औरत को बचाना चाहता हूँ जो समन्दर में उगे मुंगे के वृक्ष पर बैठा करती है, मुझे उसको बचाने के लिए समन्दर में कुद कर उसको बचाने के लिए आज्ञा चाहिये। फिर चेतना ने अपनी मुस्कुराहट के साथ खिल-खिला कर हंसती हुए, अपनी नाचती आँखों से देखा और कहा हे राजा ऐसी सेविकाए बहुत दूर्लभ होती हैं। उनमें भी बहुत अधिक दुर्लभ होती हैं वह जो मुंगें के वृक्ष पर बढ़ती हैं। अर्थात बहुमुल्य ऐश्वर्यों के मध्य पलती हैं। और मुझको बहुत अधिक भय लग रहा हैं कि आपने अपनी छोटी-सी नाव को समन्दर में क्या छोड़ दिया है। और आपको मेरी तरह की, मेरी जैसी सांसारिक साधारण-सी मेरी मालकिन औरत से संतुष्ट होना पड़ेगा, राजा ने कहा तुम अपनी मालकिन के बारें में कुछ भी मत बोलो। क्योंकि मैं तुम्हारी मालकिन के बारें में कुछ भी नहीं सुनना चाहता हुं, तब चेतना ने कहाँ आपको ऐशा नहीं करना चाहिये, यद्यपि आपकों उनके बारें में और अधिक जिज्ञासा करना चाहिए। और आपको जानना चाहिए कि उनको क्या अच्छा और क्या बुरा लगता है। क्योंकि वह मुझसे बहुत अधिक सुंदर और वुद्धिमान है। और वह मुझसे अधिक लंबी हैं। फिर राजा ने कहाँ क्या वह तुम्हारी विद्वता से भी अधिक विद्वान हैं, तब चेतना ने कहा हाँ वह मुझसे अधिक विद्वान हैं। हलांकि वह कविता बहुत अच्छि लिखती और बहुत सुनंदर गाती भी हैं। तब राजा ने कहा मैं ऐसी औरत से प्रेम नहीं करता हुं जो बहुत अधिक पंडित हो। फिर चेतना ने कहा वह इन्द्र महल में रहने वाली अप्सरा के समान गाती और नचती हैं, तब राजा ने कहा मैं उसके पैरों के लिए उसके नृत्य को ध्यान से नहीं देख सकता हुं, ना ही उसके संगित के कारण मैं उसको पंसद कर सकता हूँ। क्योंकि वह मेरे सामने आने से स्वयं को बचाती है। और वह मेरे सामने आकर मुझसे बात करने से स्वयं को रोकती है। उससे कहि अधिक और मधुर भाषी जो मुझसे बात करती है जिसके बोलने से मेरे हृदय में मेरे काने से अमृत रस मेरी आत्मा में टपकता है। जैसा कि जब राजा बोल रहा था ठीक उसी समय चेतना के हाथों में फुलों की तरफ आकर्षित हो कर एक मधुमक्खी उड़ती हुई फुलों की पंखुड़ियों में आकर समा गई। जिसको तत्काल देखते हुए चेतना ने बड़ी जल्दी से अपने हाथों से फुल की पंखुड़ियों को बंद कर दिया। और कहा हे राजा मैंने उस उड़ती हुई मधुमक्खी को यहाँ पर कैदी बना लिया है, उसके पागलपन के लिए उसको दोषी ठहराने के लिए. सुनो और मुझे बताओ कि क्या आप धोखा दे सकते हैं। बिना धोखे के, जो मीठा, असली मधुमक्खी, या मेरी आवाज़ है जिसे आप अपने हृदय में पसंद करते हैं? और राजा ने अपना कान फूल के करीब रखा और मधुमक्खियों को अंदर सुना और उसने कहा, मैं नहीं बता सकता और उसने अपनी आंखें उसके चेहरे पर तय की और कहा, अब बोलो कि मैं उसके और आपके बीच न्याय

कर सकता हूँ। तब वह हँसी और मधुमक्खी उड़ जाने के लिए फुलो कि पंखुड़ियो को खोल दिया। जिससे मधुमक्खि फुल से बाहर निकल कर उड़ गई। तब राजा ने कहा हाँ! मधुमक्खी पागल है, मैं नहीं। क्योंकि वह इच्छा करती हैं हाथों में के घेरें में रखे फुलों के अंदर बने जेल से मुक्त होने की, वह फुल किसका हैं? यह मुझको दो फिर मैं फिर उनकी तुलना करुगा, लेकिन उसने कहा नहीं यह फुल उसका हो सकता है, क्योंकि यह मेरी मालिकन का उफहार है, लेकिन यह मेरा हाथ यह मेरा स्वयं का है और अब मैं उसको पुनः वापिस कर देती हुं और जैसे ही उसने बोलना शुरु किया वह मधुमक्खि पुनः आगई और उसके सर के चारो तरफ भिन-भिनाने लगी। जिसके कारण वह भय और उसके आतंक से चिल्लाने लगी। और कहा हे राजा यह मधुमक्खि के रूप में खलनाइका है जो मुझको डंक मारना चाहती है। तब राजा ने कहा निसंदेह वह अपने बिना अपराध के कैद होने का प्रतिशोध लेने के लिए आयी है, उसके लिए दण्ड की सजा देने के लिए डंक मारना चाहती है, फिर व्यथित और उससे परेशान होकर लग-भग भागते हुए राजा की बांहों में घुंस गई। यह चिल्लाते हुए राजा मुझको इससे बचाओ, उसने कहा हे राजा, उसे बचा लो जो शरण के लिए आपके पास आता है और उसकी प्रसन्नता में राजा ने कहा हे मधुमक्खियों के राजा, मेरे पास आओ और जिस पक्ष में तू ने मुझे किया है, वैसे ही मैं तेरे लिये दिन में कमल पुस्पों के कप में शहद के साथ सेवा करूंगा। यद्यपि इस बीच मधुमक्खी दूर उड़ गई और मधु (चेतना) ने भ्रम से वापिस आना शुरू किया। और कहा हे राजा, मेरी मालकिन बहुत बहादुर है। और वह मधुमक्खी से नहीं डरती है। तब राजा ने जोर देकर कहा, वह सभी महिलाओं जो मधुमक्खियों से डरते नहीं हैं! ज़रूरी नहीं हैं कि मैं उनसे प्रेम करता हूँ, लेकिन, हां मधुमक्खी और फुलों का खिलना, निश्चित रूप से इस मधुमक्खी का बहाना है अगर उसने फूलों के लिए अपने होंठों को ग़लत समझा।

तब उसने कहा हे राजा, इस अनौपचारिक मधुमक्खी ने मुझे अपनी आंखों में अपमानित किया है। और मुझे एक लड़की को अपने स्वयं के स्वरुप को भूलने का कारण बना दिया है। और अब यह समय है कि मैं चली जाऊ और उसने राजा के चरणों में फूलों को रख दिया, और वह राजा को पीछे देखे बिना भाग गयी, और पेड़ों के मध्य में गायब हो गयी। लेकिन राजा ने मुस्कुरा कर खिलते हुए फूल को उठा लिया। और उसने कहा हे महिमामय फूल, मैं तुम्हें हमेशा के लिए संरक्षित रखूंगा, यहाँ तक कि आप को फेंकने के बाद भी, क्योंकि आप इस अतुलनीय मधुमक्खियों के हमले के अवसर का विशाल हिस्सा बनाते हैं, जिसने मेरी प्रिय चेतना को उसकी सावधानी बरतने और मेरी बाहों में शरण लेने का नेतृत्व किया। हे सौंदर्य, तू कमजोर है, क्योंकि तू कमजोर है! बाहर, सभी राजाओं की बेटियां जो मधुमक्खियों से नहीं डरते हैं! और वह मंदिर वापस गया, कदंब के फूल का चुंबन किया और प्रसन्नता से नशे में मदमस्त था।

मृत्युलोक में अमरता का स्वाद

और इस तरह से सारी रात राज कदम के फुलों के साथ अपने पत्तों के विस्तर आराम से सोया और सुबह में सूर्य के उदय होने से पहले ही अपने विस्तर पर उठ कर खड़ा हुआ, औक मंदिर से बाहर से आकर झिल में ले जाने वाली सिढ़ि के उपर खड़े हो कर झील पर उड़ने वाले जुगनुओं को बड़े ध्यान से देखने लगा, क्योंकि जुगनु जल्दी-जल्दी अपने दिपक को छिपाने के लिए और महाने सूर्य के उदय होनें के बाद शर्मिंदगी का आबाष होगा उससे बचने के लिए वह सब बड़े वयग्रता के साथ प्रयाश रत थे और चभी राजा कि दृष्टि उसके सामने से वाली चेतना पर पड़ि, जो अपने हाथ में अमरनाथ के फुलों को लेकर उसके के पास ही आरही थी और वह दिन के साहस की यादों पर उदासीनता के साथ कठोरता के सार के अवतार की तरह लग रही थी और वह राजा के पास आई और कहा हे राजा, मेरी मालकिन ने अपने भगवान को, इन अयोग्य हाथों के द्वारी, इस फूल को भेजा है और यदि आपकी नींद रात्री में आनंदायक और शांतिपूर्ण रही है, तो यह उसके साथ अच्छा है।

तब राजा ने कहा प्रिय, वह अच्छी तरह से सोता है, जो आपूर्तिकर्ता से सहायता रोकने के साथ खुद को अपमानित नहीं किया करता है। तब उसने अपनी आंखों से जमिन पर देखने लगी, और राजा ने उसे स्नेह से देखा और उसने कहा प्रिय चेतना, शर्मिंदा मत हो, क्योंकि तुम्हारा मामला कुछ अधिक खतरनाक है। इसके अलावा, मैंने अपने संकट में तुम्हारा कोई फायदा नहीं उठाया। लेकिन फिर भी, क्या मैं मधुमक्खी की खोज कर सकता हुं, मैं उसे अमृत के साथ नशे में डालूंगा, जब तक कि वह उड़ नहीं सके। तब उसने कहा और क्या, अगर उसने मुझे काट लिया तो? तब राजा ने कहा चेतना वह खलनायक तुम्हें काटे उससे पहले, मैं उसे अच्छी तरह से साथ बांध लुंगा। और एक हाथी के सामने उसे तुमसे दूर फेंक दुंगा। तब वह हँसी और कहा बेचारी गरीब मधुमक्खी ! सजा उसके अपराध से अधिक हो गई होगी। लेकिन उसके लिए पर्याप्त है ! मुझे अपनी मालकिन के गुणों के रूप में आपको प्रबुद्ध करना जारी रखना चाहिए। तब राजा ने जल्दी से कहा हे तू पीड़ित है, क्या तू कभी मुझे अपनी मालकिन की याद दिलाना बंद नहीं करोगी? हे जैसा कि मैं एक राजा नहीं हुं, राजनीति के कारण रानी को सहन करने के लिए तैयार नहीं हूँ, जो मैं नहीं चाहता ! या तुम अपनी मालकिन क्यों नहीं हो और वह नौकरानी है? जैसा कि है, मैं निराशा के अलावा कुछ भी नहीं देखता हूँ। तब उसने कहा हे राजा, यह निराशा बेकार है और (वुद्धि में श्रेष्ठ) गणेश के पक्ष में और उनके स्वयं के दृढ़ संकल्प के मुकाबले में इनके मुकाबले भी ज़्यादा बाधाएँ बढ़ी हैं। अपने संकल्प के द्वारा विश्वामित्र ने बहुत पहले ब्राह्मण नहीं बन गए थे? तब राजा ने एक प्राकर के शोक से कहा, हे मेरी प्रिय चेतना, मैं दुःख में हूँ और मुझे सांत्वना देने के बजाय, आप मुझे पुरानी किंवदंतियों के साथ तुलना करती हैं जो इस बिंदु पर नहीं है। और उसने कहा हे राजा, कुछ बाधाएँ और कठिनाइयाँ हैं जिन पर आपको विजय प्राप्त करनी है। जिसमें कुछ बांधायें और कठिनाई धुंधली हैं, जो किसी सामर्थ वान की छाया मात्र से ही समाप्त हो जाती हैं। जो दिखाई देती हैं कि वह बहुत बड़ू कठिनाई के रूप में हैं वास्तव में वह होती नहीं हैं। वह मात्र हमारें मन के द्वारा व्यर्थ में उत्पन्न कियें गये सबसे बड़े भ्रमों से एक माया से अधिक नहीं हैं।

बहुत समय पहले कि बात है एक बार जब पुर्णिमा की रात्री थी और उस रात्री के समय में चन्द्रमा निचे जंगली झिल में खिले कमल पुस्पों को प्रेम से निहार रहा था। उस झील के पानी में गुलाबी कमल

पुस्पों के मध्य में एक शुद्ध सफेद कमल पुस्प भी था, जो झील के पानी के निचे पड़े काले किचड़ में खिल रहा था। लेकिन ठीक उसी दिन दो नर हाथी उस झील के पास आये, और वह झील के पानी में आपस में लड़ने लगें। और उन्होंने अपने सुड़ से लग-भग सभी तरफ प्रहार किया, जिसके कारण उनके शरीर से निकलने वाली खुन कि धारा झिल के पानी में चारों तरफ फैल गयी, जिसके कारण झील के पानी में उपस्थित सारें कमल पुस्पों पर खुन के छीटें आच्छादित होगये, जिसके कारण कमल पुस्पों का पंखुड़िया लाल होगई। इस तरह से चन्द्रमा ने आकाश से झील के पानी में विद्यमान खुनी लाल कमल पुस्पों को देख कर दुःखी मन से आह भरते हुए कहा इनमें कोई भी मेरे काम की तृप्ति के लिए उपयोगी नहीं हैं। इसलिए वह दुःखी मन से अपने आपको व्यथित करने लगा, और हर एक रात्री के बाद वह पहले और छोटा और छोटा होने लगा, औऱ अंत में वह स्वयं को लेकर आकाश में पूर्णतः अद्दश्य हो गया। जैसे कि वह कभी आकाश में था ही नहीं। लेकिन फिर भी वह अद्दश्य रूप में भी विद्यमान था, तभी अचानक आकाश में बादलों का झुंड छा गया और झमा-झमा कर मुसलाधार वारिष होने लगी। जिसके कारण जंगल के झील में खिले कमल पुस्पों के उपर लगें हुए खुन को पुरी तरह से धो दिया और जब कुछ एक दिनो के बाद जब वह पुःन आकाश में अवतरित हुआ तो उसने देखा उसी तालाब में सभी कमल पुष्पों में उसका सबसे प्रिय शुद्ध कमल पुस्प दिखा जिसके कारण वह उसक प्रेम में आहंलादित होगया। और उसकी आँखों में प्रेम के आँसु बहने लगा।

तब राजा ने कहा हे प्रिये, जैसा कि मैं वह चाँद था और तू मेरे लिये शुद्ध कमल के समान थी, तब मेरी रात प्रसन्नता के क्षण की तरह गुजरती थी, और वह मुझ यातना नहीं देती थी, जैसा कि वे करते हैं, अलग होने के घंटों के साथ कालिमा मेरे हृदय के आइने पर छा जाती है। जिससे मुझे कुछ नजर नहीं दिखता जिससे मैं यह निर्णय करने में असमर्थ होता हूं मेरा कमल पुस्प कौन सा है? इस पर चेतना ने राजा के पैरों पर अमरता के फुलों को रख कर वहा चली गई। और जंगली वृक्षों में गायब होने से पहले उसने राजा को एक बार अवश्य देखा और फिर अद्दश्य हो गयी। और राजा ने निचे अपने पैरों के पास पड़े अमरनाथ के फूलों उठाया, और उसने कहा अमरनाथ, खुशी से मैं तुम्हें अपने साथ रखुंगा, क्योंकि उन पागल हाथियों ने जो उस कमल पुस्पों के साथ किया था, मेरे खून से, यह लाभ उठा सकते हो, फिर भी मैं भी तुम्हारा रंग लाल रंग नहीं कर सकता हूँ और वह मंदिर में वापस चला गया, अपने हाथों में अमरता के पुस्पों को लेकर, दिल में उदास, अपने प्यार और अपने सम्मान के संघर्ष के विद्ध्वनंश को देखते हुए।

तब पूरी रात, वह पत्तियों के बिस्तर पर ऐसे ही पड़ा रहा और सुबह में वह सूरज के उदय से पहले उठ गया। और बाहर चला गया और झील के सामने आकर खड़ा हुआ। और तोतों को पेड़ की साखों पर चिल्लाते हुए देखा, सुबह के रंग के साथ टिप-टिप करते हुए अपने चोंच के साथ, तब तक उसने देखा कि चेतना को अपनी तरफ आते हुए, अपने चमकते पैरों के साथ, उसने अपने हाथों में अशोक फूलों को लिए हुए और वह अपनी आंखों में एक स्त्री के रूप में प्यार के महान अवतार के अमृत झरने की तरह लग रही थी। और वह राजा के पास आई और कहा, मेरी मालकिन ने अपने भगवान को, इन

अयोग्य हाथों से, इन फूलों से भेजा है। और यदि आपकी रात्री अच्छी और मीठे होती हैं, तो यह उसके साथ अच्छा होता है।

फिर राजा ने कहा प्रिय चेतना वह कैसे अच्छि तरह से सो सकता है? जिसकी सारी रात्री सुबह होने कि लालशा में गुजर जाती हैं, क्योंकि वह अपने प्रियतमा से मिलने के लिए लालाईत रहता है। जो प्रातःकाल की बेला में ही उसके लिए प्रकट होती है। आह! यह प्रातःकाल हमेशा क्यों नहीं रहती हैं? इसको देखने के लिए कि किस प्रकार से झिल के कमल पुस्प सूर्य की रौशनी को पाकर सुनहरें रंग में बदल जातें हैं। और स्वयं परमेश्वर के रूप में उपस्थित इन सब के रचैयता, महेश्वर भी अपनी सर्वज्ञता से सूर्य को उसकी किरणों के साथ समय से पहले उपस्थि नहीं करते है। नहीं तो पुर्वी पहाड़ों के मध्य में, निकलने वाले सूर्य का प्रकाश जिससे यह कमल पुस्प हमेंशा सुनहरें रंग के होते हैं। और तुम भी प्रातःकाल के ना खत्म होने के कारण हमेंसा हमारें पास ही उपस्थित रहती। तब चेतना ने कहा हे राजा सूर्य कुरुपता और अंधकार का नाश करने के लिए आता है। जो दिखने में विशाल और असंभव से लगते हैं उसके जाने से ही यह प्रकाश संभव होता है।

जैसा कि बहुत पहले, उसने किया, जो सूर्य के निरंतर चलने वालें चक्र को प्रतिष्ठित करता था। बहुत समय पहले कि बात है। एक बहुत बड़ा जुआरी था, जिसने अपना सब कुछ जुए के खेल में हार गया था। और इसी प्रकार से घुमक्ड़ों की तरह से संसार में विचरण करता रहा। और इसी प्रकार से संयोग बस घुमते-घुमते वह एक अप्सरा के पास पहुंचा। जो उस समय गहरी निद्रा में सो रही थी, लेकिन वह जुवारी जैसे ही दौड़ते हुए उसके पास पहुंचा। वह अप्सरा अपनी निद्रा से जागृत होगई। और हवा में उछल कर वहाँ से तत्काल आकाश में गायब हो गयी, लेकिन उस जुआरी ने उसे उसके पैरों से पकड़ा लिया था। जिसके कारण उस अप्सरा ने उस जुआरी के हाथ में अपने सुनहरे चप्पल को छोड़ दिया था। इसके बाद वह अप्सरा घुम कर आई, और फिर उसने जुआरी को बहुत प्रकार से बहलाया और फुसलाया और कहाँ कि यह मेरा सुनहरा चप्पपल मुझको वापिस दे दो, अन्यथा इनके बिना मैं राजा इन्द्र के महल में नृत्य अच्छी तरह से नहीं कर सकती हुं। और जिसके कारण मैं राजा इन्द्र के महल में नाचने में असफल हो सकती हुं। फिर उस जुआरी ने कहा कि मैं इस सुनहरें चप्पल को तुमके वापिस कर दूंगा लेकिन इसके बदले में तुमको मुझे भी अपने साथ राजा इन्द्र के सभा में ले चलना होगा। क्योंकि मैं स्वर्ग में जाना चाहता हुं और वहाँ होने वाले अप्सरा के नृत्य को देखना चाहता हुं। इस प्रकार से जब अप्सरा को कोई मार्ग नहीं दिखाई दिया, तो वह उल जुवारी को अपने साथ ले जाने के लिए तैयार होगई। और उसने उस जुआरी को अपने कानों में लगें फुलों में जुवारी को सूक्ष्म रूप से छुपा लिया और इस तरह से वह जुआरी को स्वर्ग में लेकर गई। जहाँ पर उस जुआरी ने की सारी अप्सराओं को अपने शरीर पर स्वर्णमय वस्त्रों को धारण करके कमल पुस्पों के समान सुसज्जित जमिन पर नृत्य करते हुए देखा। जिसके चारों तरफ उनके साथ हवा भी नृत्य कर रही थी। जिसके कारण उस चोर के हृदय में उन स्वर्णमय वस्त्रों के प्रति लोभ जागृत हो गया। जिसके कारण उसने धिरे से फुंस-फुंसा कर उस अप्सरा के कानों में कहा कि यह स्वर्णमय वस्त्र कहाँ से प्राप्त हुए हैं?, जिसके उत्तर में अप्सरा ने कहा कि यह हमें स्वयं सूर्य ने अपने पुराने प्रकाश कि किरणों से बुन कर दिया है। जो पश्चिमी पर्वतों के मध्य में अस्त होता है। और वहां पर इन सब किरणों को परियों के द्वारा पिरों कर सोने में

बदल दिया जाता है। जो उन सब के शिर में स्थित बाल के समान है।, जिसको वह सब बाद में पहाड़ों के मध्य में छुपे रूप से स्थित एक झील है जिसके पानी का रंग जामुनी है। वहां पर वह सब उस बाल को जाकर उसमें धो देती हैं। जहाँ पर हमेंशा प्रातः कालिन की बेला ही रहती है। जहाँ पर कभी ना रात होती है। और नाही दिन होता है, ना ही दोपहर ही होती है। और कभी भी शाम भी नहीं होती है। लेकिन जब जुआरी ने यह सब सुना तो उसकी कुरुप आत्मा में एक भयानक और खतरनाक लोभ जागृत होगया। जिसके कारण वह उसके कान में से ही बार-बार चिल्लाने लगा कि की यह सोने को वुनने वाली है। जब उस जुआरी की आवाज को राजा इन्द्र ने सुना तो कहाँ यह कौन गुस्ताख है? जो हमारें स्वर्ग में इस तरह का व्यर्थ में शोर कर के हमारें मनोरंजन में विध्न डालने का प्रयास कर रहा है। इसको सुनते ही अप्सरा ने तत्काल अपने कानों में लगे फुल को निचे फेंक दिया, जिसकी तलास चारों तरफ किया जारहा था। और अंत में उसको अप्सरा के द्वारा फेंके गये फुलों के मध्य में छुपा पाया गया। उसमें स्थित जुआरी को फुल से बाहर निकला गया। और राजा इन्द्र ने उस अप्सरा को जिसका नाम मालती था। उससे कहा कि इस दुष्ट को तत्काल हमारें स्वर्ग से बाहर निकाल दो, जिसके साथ निर्दय अप्सरा ने जिसने उसे अपने कान में छुपा कर स्वर्ग में घुसने की हिम्मत की थी। मालती ने उसे वहाँ से बाहर फेंक दिया। लेकिन वह जुआरी, आकाश में जाने वाला नहीं था, जिसके कारण वह पृथ्वी पर गिर गया और उसने अपने शरीर को कई टुकड़ों में तोड़ दिया।

तो इस तरह से राजा, सावधान रहें! ऐसा न हो कि असंभव होकर आप अपने स्वर्ग को पूरी तरह से खो दें। और उसने राजा के पैरों पर अशोक के फूलों को रख दिया, और वहाँ से जाने लगी। तब राजा ने कहा हाँ! प्रिय चेतना, क्या तुम कुछ और लंबे समय तक मेरे साथ नहीं रह सकती हो? और उसने कहा नहीं, तब राजा ने कहा कि तुम फिर क्या दिन में दो बार या तीन बार नहीं आ सकती हो, मुझसे मिलने के लिए? इतना बड़ा दिन तुम्हारें बिना नहीं गुजरता है। यदि तुम मेरे साथ दिन में कुछ अधिक समय तक रहोगी, तो मुझे मुझे बहुत अच्छा लगेगा। यद्यपि तुम यहाँ पर मेरे साथ कुछ एक पल के लिए ही रहती हो, और हर दो दिनों के बीच एक रात होती है। तब उसने कहा हे राजा, यह असंभव नहीं है जहाँ मेरी मालकिन है।

मुझे भी ऐसा होना चाहिए, और अब मेरे पास करने के लिए कर्तव्य हैं। और इसके साथ वह जंगल में पेड़ों के मध्य से काफी दूर चली गई, जब तक की वह जंगल में गायब नहीं हो गई। तब तक राजा में उसके कंधे को पिछे से देखता रहा । इसके बाद राजा ने अपने पैरों पर पड़े फूलों उठाया, और उसने कहा अशोक, तू मुझे उकसाने वाले चिट्ठी की तरह बिल्कुल यातना देता है। जिसने तुम्हें बताया है। क्योंकि तुम्हारी सुंदरता ऐसी है कि मैं तुम्हें दूर फेंकने के लिए सहन नहीं कर सकता हुं, और फिर भी तुम मुझे अपनी मालकिन के प्रति मेरी ज़िम्मेदारी याद दिलाना बंद नहीं करोगे। और वह मंदिर में वापस चला गया, उसके हाथ में अशोक के फुल थे और मधु (चेतना) की छवि उसके दिल में थी। उस प्रकार के मर्द की तरह से, जिनके ह्रदय पर एक जोर दार आँखों से वार किसी औरत ने, और वह चकना चुर हो जाता हैं।

और इस प्रकार से वह पत्तियों के बिस्तर पर लेटते हुए, सारी रात पड़ा रहता है, और सुबह में, वह सूरज के उदय होने से पहले उठ गया। और मंदिर से बाहर आकर उदास झिल कि सिढियों पर खड़ा हुआ। झिल के किनारे पर एक बगुले की तरह ध्यान में चला गया और उसके विल्कुल पता ही नहीं चला कि उसके पास चेतना कब और कैसे आई? और उसने अपने सामने उसे अपने हाथों में लाल पलाश को फूलों के साथ अपने पास खड़े हुए पाया। तब उसने कहा हे राजा, मेरी मालकिन ने अपने भगवान के लिए, इन अयोग्य हाथों के द्वारा इन फूलों को भेजा है। और यदि आपको रात्री में अच्छी नींद आई, तो यह उनके लिए अच्छा है।

तब राजा ने कहा प्रिय, नींद, एक ईर्ष्यापूर्ण प्रतिद्वंद्वी की तरह, मुझे हमारे साथ लगातार हर दौरे पर अपराध किया करती है। और मेरे पास नहीं आती है, और उसने कहा, एक मुस्कुराहट के साथ हे राजा, उसे नाराज न होने दें, जल्द ही मेरी यात्रा समाप्त हो जाएगी। तब राजा ने एक आह के साथ कहा! ऐसा मत कहो क्योंकि तुम ने मेरे दिल में बहुत गुप्त स्थान बना लिया है। क्योंकि तुमको मुझे इस घृणास्पद विवाह को अपनी मालकिन के साथ लंबे समय से बांधना नहीं चाहिए, क्योंकि वह अब और इंतजार रखने के लिए विनम्र नहीं होगी और फिर, हाँ! मेरे और तुम्हारें मध्य में कौन-सा सम्बंध बनोगा? जब तुम्हारी यात्रा समाप्त हो जाएगी। और यदि तुम्हारी मालकिन को मुझ पर संदेह हो गया। तो वह तुमको मार डालेगी। तब चेतना ने कहा नहीं, ऐसा नहीं है, क्योंकि मेरी मालकिन हम दोनों के लिए, और मेरे लिए अच्छी तरह से शुभकामनाएँ देती है। और मुझे डर है कि अब तक आप उसे नहीं जानते हैं। तो यह पूरी तरह से आपके बाहर हो सकता है। और आप मेरी मालकिन को प्राप्त करने के बाद इस अयोग्य चिट्ठी लाने वाले को पुरी तरह से भूल जायेंगे। तब राजा ने कहा सूर्य मेरे लिए गवाह बनो, कि मैं ऐसा नहीं करूँगा। इसके बजाय मैं उसे उसके पिता के पास वापस भेजूंगा? उसके पिता को वह करने दो जो वह करना चाहता है। उसे अपना राज्य ले जाने दो और इस राज्य को भी अपने राज्य में जोड़ लेने दो, इससे मुझे कोई परवाह नहीं है। वह मुझे केवल इस जंगल के साथ और इस झील के साथ अकेला छोड़ दे। जिससे सुबह में अपने पास आने वाले आगंतुक के स्वागत के लिए मैं यहाँ पर उपस्थित रह सकुं। इस पर चेतना ने राजा को मुस्कान के साथ देखा, और कहा हे राजा, ये निष्क्रिय शब्द हैं। और मुझे अच्छी तरह से पता है कि आप उसे वापस कभी नहीं भेजना होगा। तब राजा ने कहा चेतना मैं ऐसा अवश्य करूँगा। तब उसने कहा नहीं, वह उसे धोखा दे रही थी। और अपने खुद के शब्द के रुख को बदल दिया। जो धोखे का आधार है, लेकिन निष्ठा अच्छी है। इसके अलावा, वह आपके हाथों में एक मोहरे कि तरह से है। जिसे आप जब चाहें अपने पास रख सकते हैं या फिर उसको अपने से दूर रख हो सकते है।

क्या आपको पता है? कि एक बार एक बहुत बड़ा पुराना व्यापारी था, जिसके पास एक बहुत बड़ा मोती था जो बड़ि मुस्किल से किसी के हाथ में आता था। जो समन्दर के झाग के समान चमकिली था। जिसको समन्दर के अन्दर के एक गुफें में से बड़ी मुस्किल से चाँदनी रात में स्वाती नक्षत्र के समय में, इसके खोल से इसको निकाल कर एकत्रित किया गया था। जो किसी बड़ें गेद के समान था। जिसके कारण इस मोती की प्रसिद्धि उस राज्य में चारों तरफ सर्वव्याप्त था। फिर वह व्यापारी एक यात्रा पर

जाने वाला था। इसिलए वह अपने भाई व्यापारी के पास गया, और उस व्यापारी को वह मोती देते हुए, उससे कहा इसको अपने पास बहुत अच्छि तरह से सुरक्षित रखना। जब तक मैं अपनी यात्रा से वापिस नहीं आ जाता, और इस प्रकार से मैं बिना किसी भय के निर्विध्न रूप से बिना चिंता के अपनी यात्रा को कर सकता हूँ और मैं अपनी यात्रा से आने के बाद अपना मोती तुमसे वापस ले लुंगा। और इस प्रकार से वह व्यापारी अपनी यात्रा पर चला गया। यद्यपि दूसरे व्यापारी ने उस मोती को जमिन के अंदर गाड़ दिया। और फिर उसके बाद उस राज्य का राजा उस व्यापारी के पास आया। और उस व्यापारी से कहा कि वह मोती मुझको दे दो। जिसको तुमनें अपने पास सुरक्षित रखा है। और इसके बदले में मैं तुमको बहुत अधिक धन दुंगा। अंयथा मैं जबरजस्ती अपने ताकत के दम पर तुमसे छिन लुंगा। फिर व्यापारी ने कहा एक हफ्ते का इंतजार करने के लिए, और इसके बदले में आप क्या चाहते हैं, क्योंकि मुझे इसे देखना अच्छा लगता है? राजा ने कहा इसके लिए, मैं तुमसे एक करोड़ रुपये लुंगा और तब मैं एक सप्ताह तक इंतजार करूंगा। तो व्यापारी ने उन्हें एक करोड़ दिया। और अपने पास इस प्रकार से उस मोती को सुरक्षित रखा, लेकिन एक सप्ताह के बितने के बाद राजा फिर से आया। और कहा मुझे अब मोती दे दो, और व्यापारी ने उस मोती को देखने के लिए एक करोड़ देकर, एक और सप्ताह के देरी के लिए खरीद लिया। और इस प्रकार से उस व्यापारी ने कुछ समय बाद अपनी सारी संपत्ति समाप्त कर दी। जिससे वह व्यापारी भिखारी बन गया । तब राजा ने कहा मुझे अब मोती दे दो। फिर व्यापारी ने कहा मेरी एक पुत्री है, जो बहुत सुन्दर है। और आपकी सभी रानियों में सबसे अधिक सुंदर है, इसको आप अपने साथ ले जाइये। और मुझको एक सप्ताह और इस मोती को रखने के लिए समय दिजीयें। राजा ने वैसा ही किया जैसा कि व्यापारी ने कहा था। जब एक सप्ताह बित गया। तो वह राजा फिर व्यापारी के पास आया, और व्यापारी से कहा कि मुझे वह मोती दे दो। तब व्यापारी ने कहा आप मेरी जान को ले लीजिये, और एक सप्ताह के समाप्त होने पर आप मुझको फांसी पर चढ़ा देना। जिससे यह मोती आपका स्वयमेंव प्राप्त हो जायेगा। राजा फिर व्यापारी की बात को मान लिया और कहा ठीक है। और वहाँ से चला गया।

इसके ठीक तीन दिन बितने के बाद ही वह व्यापारी अपनी यात्रा से वापिस आगया। वास्तव में जिसका वह मोती था। अर्थात जो मोती का असली मालिक था। और वह अपने व्यापारी भाई के पास गया। अपने मोती को मांगने के लिए और उस मोती को दूसरे व्यापारी ने उसके मालिक अर्थात अपने भाई को देते हुए, कहा कि तुम विल्कुल सही समय पर अपनी यात्रा से वापिस आगये हो। यह रहा तुम्हारा सुरुक्षित मोती और अभी तक सब कुछ ठीक है।

और फिर वह व्यापारी राजा के पासा गया। और उससे कहा कि मोती का असली मालिक अपनी यात्रा से वापिस आ चुका है। और मैंने उसका मोती उसको दे दिया। जिसनें मेरे पास मोती को सुरुक्षित रखने के लिए दिया था। और जैसा कि मैंने अपने आपको आपके पास बेच दिया है। इसलिए मैं आपके पास आगया हूँ। तब राजा ने कहा क्या तू मोती है? जिसके लिए मैं इंतजार कर रहा हूँ। व्यापारी ने कहा अब तुम मेरी बेटी से शादी करोगे, और अपने आप को शुद्ध करोगे, जैसा कि मैंने उसके सामान को लिया था और उसको शुद्ध रूप से वापिस दिया है। क्योंकि वह तेरे हाथों में जमा थी और मेरा साम्राज्य

और मेरे सारे मामलों की तुलना में और अधिक होगा उसको उसी रूप में तुमको वापिस करना होगा। जैसा करने में तुम असमर्थ हो।

फिर चेतना ने राजा के कदमों में फुलों को रख कर वहाँ से दुर चली गई। लेकिन राजा वही पर खड़ें हो कर उसको जाते हुए देखता रहा। तब तक जब तक कि वह उकी आँखों से ओझल नहीं हो गई। और फिर वह निचे झुक अपने कदमों पर पड़ें फुलों को उपर उठा लिया। और कहा ओ लाल पलास के फुल इस समय तुम मेरे हाथों में सुरक्षित हो, और मैं कैसे उसके बगैर रह सकता हूँ? या उसके सामने अपने सम्मान को कैसे बनाए रख सकता हुं? क्योंकि वे असंगत हैं? और वह अपने हाथ में फूल के साथ मंदिर में वापस चला गया, दुविधा से बचने का कोई रास्ता खोजने की कोशिश कर रहा था, लेकिन वह सब व्यर्थ सिद्ध हो रहा था।

दो आत्माओं का प्रेम मिलन

इस प्रकार से वह राजा अपनी सारी रात को बिना निद के जागता रहता है, अपने पत्तियों के बिस्तर पर करवटे बदलते हुए। इसी प्रकार से उसने अपनी सारी रात्री को व्यतित कर देता है। और प्रातःकालिन भोर में जैसा कि वह रोज सुबह में ही उठ जाता है, आज भी उसी प्रकार से अपने विस्तर को छोड़ कर, वह सूरज के उदय से पहले उठकर मंदिर से बाहर चला आया। और तब वह झील में तैरती मछलीयों को देखने लगा। वह मछलियाँ पानी से अपने चांदी के समान सिर उठाकर कमल के डंठल को पकड़ने के लिए प्रयाश कर रही थी। तभी उसने देखा कि चेतना अपने हाथों में शमी के पीले फूलों को लेकर उसके सामने आ रही थी। किसी वृक्ष पर वेल कि तरह से बलखाते हुए, जिसके देख कर ऐसा प्रतित हो रहा था कि जैसे वह सर्प के समान लहरा कर उसके पास आ रही हो। जब वह राजा के पास आगई, तो उसने रोज की भांती राजा से कहा मेरी मालकिन ने अपने भगवान के लिए मेरे इन अयोग्य हाथों के द्वारा इस शमी के फुलो को भेजा है। और कहा है कि आपकी रात्री जब अच्छी तरह से गुजरी होगी, तो यह उनके लिये बहुत अच्छा होगा।

तब राजा ने कहा प्रिय चेतना उसे किस तरह से अच्छी निंद आसकती है। जिसको पहले से पता है कि वह मरने वाला है? इस पर चेतना ने कहा हे राजा आपका जीवन बहुत अच्छा और सुन्दर है। निश्चित रूप से जैसे चन्द्रमा पुनः नविन उदय होता है, उसी प्रकार से यह आपके जीवन का सबसे बहुमूल्य अध्याय कि तरह से है। जब इस प्रकार का जीवन आपके पास पहले था, जिसकी कोई किमत आपके नजरों में नहीं थी। लेकिन आज उसी जीवन की किमत आपकी नजरों में अनमोल हो चुकी है।

इस पर राज ने कहा हाँ, क्योंकि मेंने इससे पहले तुम्हारें चेहरें को नहीं देखा था। इसी के कारण हमारे साथ ऐसा हुआ था। और इस पर चेतना मुस्कुराते हुए राजा से कहा हे राजा लेकिन क्या मैं एक औरत नहीं हुं? और आपकी आँखों में क्या वह सब औ़रत नहीं थी जिसको आपने मुझसे पहले देखा था? तब राजा ने कहा तुम उन सबसे भिन्न किस्म की औरत हो। मैं उनके उपर विल्कुल ध्यान नहीं देता था, निश्चित रूप से मैं उन सबको पूर्ण रूप से औरत नहीं मानता था। वह सब मेरी नजर में औरत के रूप में लिए केवल एक प्रकार का झासा और भ्रम के अतिरिक्त कुछ नहीं थी। परमेंश्वर ने इन औरतो कि दो प्रजाति बनाइ है। एक औरत जिनकी संख्या अधिक मात्र में है, वह साधारणतः औरते हैं और संसार के हर एक पुरुष को मिलती है। और दूसरी प्रकार कि औरतें उन सब से अलग होती हैं, जो तुम्हारी तरह से होती जिनकी संख्या इस संसार में बहुत कम है। और किसी पुरुष को ऐसी औरतो का मिलना बहत अधिक दूर्लभ है। और वह जिस शरारत भरी अपनी आँखों से मुझको देखती है।

तब चेतना ने कहा और किस श्रेणी मैं आपने मेरी मालिकीन को रख सकती हुं? इस पर राजा बहुत अधिक व्यग्र होते हुए कहा कि तुम उसको इससे बाहार ही रखो, वह सफेद मार्बल के कठोर पत्थर के समान है। चेतना क्या तुम मुझको उसको कुछ समय के लिए भुलने की आज्ञा नहीं दे सकती हो। क्या मैं तुमको उसके स्थान पर अच्छी तरह से कुछ समय के लिए याद कर सकता हुं? तब चेतना ने कहा हे राजा यह आपके लिए अच्छी बात नहीं है। आप मेरी मालिकीन को कैसे भुल सकते हैं? जो आपकी याद में हमेशा रहती हैं, और वह आपसे विवाह की इच्छा रखती हैं, जिसमें ही आपको और उनको दोनो को आनंद मिलने की संभावना है। इन शब्दों पर राजा उसी प्रकार से विगड़ गया जैसा कि कोई श्रेष्ठ नस्ल का घोड़ा किसी चाबुक की मार से विगड़ता है। और उसने कहा चेतना तुम इस प्रकार से मेरी प्रातः कालिन की शुबह में जो अमृत के समान है, उसमें जहर मत मिला कर दूषित मत करो। इसके बारें मैं अच्छी प्रकार से जानात हु, कि तुम्हारी मालिकीन के प्रति मेरा व्यवहारा एक सज्जन पुरुष की तरह से नहीं है। और अब तक इस मामले में जहाँ तक मैं समझता हुं कि चतुम मुझकों इसके लिए अपराधी या दोषी नहीं समझोगी। और जैसा कि तुम्हारी मालिकन का स्वभाव है, यहीं उसके लिए अच्छा होगा, कि वह मरे से अधिक से अधिक दुर पर ही रहे। जैसे कि मैं हूँ ही नहीं । इस पर चेतना ने राजा से कहा क्या मेरी मालिकीन ने जिनको प्राप्त किया है वह आपसे अलग कोई और को अपने जीवन में धारण करने के लिए नहीं चुन सकती है? और अब तक जो उनकी क्षमता से बाहर है अगर वह कर सकती हैं। तो क्या उनको ऐसा करना चाहिए। यह उसी प्रकार से होगा जैसे मैंने स्वयं अपने पुनर्जन्म के मुल कर्म फलों को भोगने से मना कर दिया हो। राजा ने आह भरते हुए कहा जो भी हो मैं नहीं जानता, उसने मुझको क्यों चुना? वह मेरे जीवन को निश्चित रूप से नष्ट कर सकती है। इतना मैं अवश्य जानता हूँ। फिर चेतना ने राजा से कहा इसका मतलब यह तो नहीं कि यह भाग्य और कर्म का सिद्धांत केवल देवताओं के लिए निश्चित हैं। और रानी की जिम्मेदारिया किसी सामान्य औरत से अधिक नहीं हैं। औ़र इस राजा ने एक बार फिर आह भर कहा यह कौन-सा मामला ले कर तुम मुझको उलजाने का प्रायास कर रहीं हो। जिसमें मैं विल्कुल ही रुची नहीं लेता हुं। क्या तुम नहीं जानती हो कि तुम्हारी मालिकीन बहुत कोठर हृदय वाली है। और उसकी आवाज बहुत अधिक बेरहम के साथ वेरुखी से भरी है। और उसके शब्द भी बहुत अधिक कड़वे के साथ वेसुरे हैं। कल मैं अपनी

जीम्मेदारियों का और अपने कर्तव्यों का वहन करने के लिए तुम्हारी मालिकीन के पास जाउंगा। और अपने सुझाव कर्ता के साथ अपने ज्योतिषियों से सम्पर्क करुंगा। और उनसे एक तारिक तय करने के लिए करहुगां, जिस दिन मैं अपने विवाह उत्सव को समपन्न कर सकु, लेकिन आज तुम मुझे पूर्ण रूप से उसको देखने और सुनने दो जिसके लिए मेरा हृदय लालाइत है। और आज शाम तक तुम मेरे साथ यहीं पर रहो, जिससे मैं अपनी विखरी हुई शक्ति को संयमित करके कल के लिए पूर्ण रूप से स्वयं को तैयार कर सकु।

फिर चेतना ने राजा की आँखों में कुछ पल के लिए बड़े ध्यान और विनम्रता के साथ देखा और कहा कि हे राजा जो हम सब के भाग्य को बनाने वाला है। या हम सब की रचना करने वाला है उसने हम सब के ललाट पर जो एक बार लिख दिया है। उसको किसी आदमी के द्वारा मिटाना असंभव है। और इस पृथ्वी पर ऐसा कोई नहीं है। जो उसको बदलने का सामर्थ रखता है।

बहुत समय पहले की बात है एक राजा था और उसकी बहुत-सी रानियाँ थी जिसमें से उसकी सबसे प्रिय एक रानी ती जिसका नाम श्री था, जो अपने नाम के विल्कुल अनुकुल नहीं थी।

लेकिन फिर भी वह एक छोटी-सी सज्जन औरत थी, वह कभी भी अपने बारें में कुछ भी नहीं सोचती थी, जिसको राजा अपने आत्मा के अन्तःकरण की गहराइयों और दिल से चाहता था। जिसके कारण ही उसने अपने संपूर्ण सामराज्य की बागडोर उसके हाथ में दे दिया था। और अपने जीवन को भी उसके लिए समर्पित कर रखा था। इसके साथ संपूर्ण संसार के धनऐश्वर्य के साथ वह तीनो लोक की संपत्ती को उसके सर के एक बाल की रक्षा के लिए खर्च करने लिए तैयार था।

तभी एक दिन ऐसा हुआ कि उस राजा की राजधानी में एक अपराधी ने एक बहुत घृणित अपराध का कार्य किया, जिसके लिए राजा ने तत्काल उसको सजा के रूप में तत्काल मृत्यु दण्ड का आदेश दे दिया, और ऐसा ही किया गया। फिर इसके कुछ समय के बाद राज पुरोहित राजा के पास आया, और राजा से कहा कि हे राजा जिस आदमी को आपने मृत्यु दण्ड की सजा दिया है। वह एक ब्राह्मण था जिसके कारण से इस राज्य के देवता आप पर और आपके राज्य पर अत्यधिक क्रोधित हो चुके है। और इसके बदले में जब तक आप बली चढ़ाकर अपने आपराध के लिए प्रायश्चित नहीं करेगें, (इसका मतलब हैं जब भारत में ब्राह्मणओं के भयंकरतम अपराध करने पर भी, राजा यदि दण्ड देता था, तो राजा को उसके लिए ब्राह्मणों ने राजा को प्रायश्चित करने का नियम बनाया था) तब तक इस राज्य के देवता शांत नहीं होगें और उनकी आज्ञा का उलंघन करने पर आप पर और आप के राज्य पर बहुत बड़ा संकट आयेगा। और आपका सब कुछ उनके श्राप से कारण से नष्ट हो जायेगा। जिससे राजा काफी परेशान हो गया, और पुरोहित से कहा किसकी बली देनी पड़ेगी। तब पुरोहित ने कहा जिस रानी को आप सबसे अधिक प्रेम करते हैं, जिसको सुन कर राजा और अधिक दुःखी हुआ और उसके हृदय में भय का आंतक छा गया। क्योंकि सबसे अधिक प्रेम तो वह अपनी रानी श्री से करता था। लेकिन इस बात को पुरोहित से उसने छुपा लिया, और कहा कि आह मैं तो सबसे अधिक प्रेम अपनी रानी प्रियदर्शनी से करता हु। वही मेरी रानियों में सबसे अधिक सुंदर हैं, तो पुरोहित ने कहा कि ठीक हैं फिर कल शुबह उनकी ही बली चढ़ायी जायेगी। अर्थात बली के रीवाज को समपन्न किया जायेगा। और वह

सारे पुरोहित वहाँ से चले गये, और अगले दिन शुबह राज्य के सभी लोगों की बड़ी भीड़ एक सभा को रूप में, बली की प्रक्रिया के पूरे होने वाले पत्थर के पास एक बड़े मैदान में एकत्रित हो गई। और राजा भी वहाँ अपने सिहांसन पर विराजमान हुआ और फिर वहाँ पर जिस रानी का बली को चढ़ाना था उसको लबादें से ढक कर लाया गया। और फिर उसकी बली की रस्म को पुरा करने के लिए, अपने हाथ में एक तेज धार कटार ले कर अक पुरोहित जल्लाद उसके पास खड़ा हुआ, और फिर उस पुरोहित ने उस रानी के उपर पड़े लबादें को हटाया। जिसकी वजह से वहाँ उपस्थित सभी लोगों के साथ स्वयं राजा ने भी देखा कि वह प्रियदर्शनि नहीं यद्यपि वह तो राजा की सबसे सुंदर और सबसे अधिक प्रिय रानी श्री थी।

जिसको देखने के बाद राजा को बहुत अधिक घोर यातना अर्थात कष्ट का अनुभव हुआ। जिसके कारण वह जैसे अपने सिंहासन के साथ बंध गया हो, उसको ऐसा प्रतित हुआ। और उसके आँखों के सामने से संपूर्ण संसार जैसे कुछ समय के लिए अदृश्य हो गया हो। और उसने अपने हाथों को जोड़ लिया वह नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है। जिसके साथ वह बहुत तेजी के साथ रोने और हाथी के समान चिग्घाड़न लगा। आह नहीं, नहीं, श्री नहीं, नहीं श्री, लेकिन पुरोहित ने राजा की कोई बात नहीं सुनी उसने उसके गले पर अपनी कटार को चला दिया, उसके कपड़ों को पकड़ कर जिसके कारण वह निचे गिर गई और कुछ पलो में ही पुरोहित ने उसकी शरीर पर बार-बार वार अपनी कटार से करने लगा। जिसके कारण राजा से यह देखा नहीं गया और तत्काल राजा अपनी पत्नी श्री के शरीर की रक्षा के लिए एक बांघ के समान उसके उपर कुद कर उसको अपने शरीर से ढक लिया, जिसके कारण पुरोहितों की कटार राजा के हृदय में धंस गई।

और फिर श्री ने अपनी आँखें खोल कर देखा राजा के शरीर के निचे से, अपने चारों तरफ कुछ देर के लिए वहाँ पर भारी एकत्रित भीड़ को, और वह राजा के शर को अपने गोद में लेकर जमिन पर बैठ गई। और इसके कुछ पलो के बाद वह राजा के उपर गीर गई, जिसके साथ वह राजा की आत्मा के साथ अपनी आत्मा को एक कर के किसी दूसरे लोक के लिए प्रयाण किया, अर्थात दोनो प्रेम भरें आलिंगन के साथ मृत्यु को गले लगा लिया। और उस लोग में पुनः प्रवेश किया जहां पर कभी कोई मरता नहीं है।

इतना कह कर चेतना ने अपना कहना बंद कर दिया, और राजा के चरणों में फुलों को रख दिया। और वहाँ से जाने के लिए घुम गई, लेकिन राजा ने अपनी उत्तेजना के साथ अपने सर को जोर से झकझोर दिया। और वह अपनी लड़खड़ाती हुई आवाज में अर्थात हकलाते हुए कहा क्या! क्या तुम इतनी जल्दी चली जाओगी, लगभग पहुंचने से पहले? हे मुझे तुम एक और कहानी सुनाओ, जिससे कि मैं तुम्हारी आवाज़ सुन सकु। या, यदि तुम चाहो तुम कुछ भी मत कहो वस जहाँ तुम हो केवल वही खड़ी रहो, जिससे मैं तुमको एक कला कृति की तरह से दखता रहुं। और मैं सिर्फ़ तुम्हारी तरफ देखना चाहता हूँ। जिससे अपनी नींद में मैं तुम्हारी मुस्कुराहट के साथ तुम्हारीं गहरी नीली आंखों का रंग के साथ मेरी आत्मा में गहरा उतर जाएगा। और ऐसा नहीं हुआ तो मैं वहाँ कभी भी स्थिर नहीं रहुंगा। जब तुम चली जाओगी, तो मुझे निराशा से दूर रखने के लिए अपनी आत्मा को किसी और दूसरें रंग से रंगना

होगा। तब वह एक बार फिर राजा की तरफ घम कर अचानक वह राजा के करीब आ गई। और अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया। और उसने कहा हे राजा, अब मुझे जाना होगा। क्योंकि यह समय मेरे यहां से जाने का है। लेकिन रुको यह हो सकता है कि मेरी मालकिन मुझे दोबारा वापस भेज देगी, क्योंकि कल के लिए व्यवस्था करने के मामले हैं। और वह राजा के लिए एक बार फिर मुस्कुरा दी और जंगल में पेड़ों के माध्यम से जल्दी से चली गई। जबकि राजा वहाँ स्थिरता के साथ खड़ा था। और जब वह चली गई, तो उसे देखा और फिर वह निचे झुक कर अपने पैरों पर पड़ें शमी के फूलों को उठा लिया। और उसने कहा शमी, तुम मेरे जैसे, अपने दिल में आग लगाओ और तुम अस्वस्थ के लिए क्या हो, वह ज़रूर कुछ तुमसे अधिक स्वस्थ करने में समर्थ है, जिसने तुम्हें मेरे चरणों में रखा है। तुम्हारी तरह मेरे लिए ज़रूरी थी, लेकिन उसके हाथ के स्पर्श के बाद मेरे हृदय में एक ज्वला-सी जल उठी है और यहाँ मैं झील के किनारे पर उसका इंतजार करूंगा और यदि वह नहीं आती है, तो मैं एक और सुबह देखने के लिए नहीं रहूंगा।

और वह झील के किनारे इंतजार कर रहा था, कभी उठ रहा था और कभी अत्यधिक अधीरता कारण बैठा जाता था। और उस जगह पर अपनी आंखें तय कर रहा था जहाँ पर चेतना जंगल के पेड़ों के मध्य में गायब हो गई थी। और इस बीच घंटों एक दूसरे का पीछा किया, और आकाश में सूर्य उच्च और उच्च गुलाब के खरें फुलों की तरह से खिलने लगा। और उसकी गर्मी तब तक बढ़ी, जब तक कमल के फुल उस गर्मि के कारण सूर्य के प्रकाश में नीचे बहने वाली झील पर चांदी की तरह चमकने नहीं लगे। और मछली गर्मि के कारण पानी में सोने के लिए चली गई थी। और सभी पक्षि पेड़ पर अपने घोसलों में सोने लगे थे। और मधुमक्खियों ने फुलों पर हमला कर-कर के थक गई थी। और फूलों के रस को पिने के लिए उसमें अपना सरांय बना लिया था। और सारा जंगल जैसे कि इस समय एक कब्र में स्वयं को दफना लिया था। और पत्तियाँ बागों में घूमना भूल गईं थी और-और तभी इस मायुशी के आलम में राजा ने अपनी तरफ आती हुई चेतना को एक बार फिर कुछ दूरी पर देखा। जहाँ से वह चली गई थी, वहीं से वह आ रही थी। और वह दीवार पर एक तस्वीर की तरह एक पल के लिए खड़ा था। जबकि राजा ने उसे एक उत्साह में देखा, अपने दिल की धड़कन को चुप्पी में प्रसन्नता के गीत को सुनते हुए। फिर, थोड़ी देर बाद, उसने जादू को तोड़ दिया और चले गए और वह बहुत धीरे-धीरे उसके पास आई और उसके सामने आकर खड़ी हो गई थी। लेकिन उसने अपने हाथ में इस समय कुछ भी नहीं लिया। और उसने कहा हे राजा, मेरी मालकिन कमल की इच्छा रखती है और मुझे उसे अपने भगवान से लाने के लिए भेजा है।

और राजा ने उसे देखा, क्योंकि वह उसके सामने खड़ी थी, उसकी आंखें जमीन पर स्थिर थी। और उसकी लंबी घुमांवदार भौहें उसके गाल पर छाया की तरह झूठ बोल रही थीं और उसका दिल उसके मुंह में उठ आया। और वह चुप हो गया और उसने बात करने की कोशिश की, लेकिन उसके होंठों पर शब्द आने से पहले ही मर गए. तो वे दो जंगल में खड़े थे, जो स्थिरता से घिरे थे और अंत में, राजा ने बात की और उसने कहा प्रिय चेतना, एक बात है जो मैं आपसे पूछूंगा लेकिन मुझे डर है। तब उसने कहा राजा डरता है क्या? और उसने उसे एक पल के लिए एक मुस्कान के साथ देखा जो उसके

होंठ पर होने से लगभग गायब हो गये थे। और उसने अपनी आंखें निचे चमिन पर गिरा दी। तब राजा ने कहा चेतना, क्या तुम मुझे बता सकती हों, क्या मैं तुमसे प्यार करता हूँ, या नहीं?

और जैसे ही राजा ने उसे देखा उसके चेहरे पर रंगत आई, और पुनः चली गई और अंत में उसने धिरे से कहा, वह चिकित्सक कैसे निर्णय ले सकता है, जो इस प्रेम के लक्षणों को नहीं जानता है?

तब राजा अपने स्थान से उठ कर खड़ा हो गया। और उसके करीब जाकर खड़ा हो गया, और उसने अपने दोनों हाथ को उसके पीछे रखे और उन्हें एक साथ चुस्त कर दिया। और उस अपने प्रति झुका लिया, और कहा इसलिए मैं तुमसे पूछता हूँ, क्योंकि मैं नहीं कह सकता कि मैं तुम्हारे साथ प्यार करता हूँ। या नहीं। एक बार पहले, मैंने सोचा कि मैं प्यार में था, लेकिन तब मुझे लगा जैसे मैं अब करता हूँ, और यदि फिर, मैं प्यार में था, मैं अब नहीं हूँ; और यदि अब, मैं नहीं था, तो और हो सकता है, तुम मुझे बता सकती हो। क्योंकि तुम बहुत चालाक हो, जैसा कि मैं नहीं हूँ। क्योंकि जब मैं तुम्हें देखता हूँ, अँधेरा मेरी आंखों पर फैलता है। और आग मेरे हृदय में के माध्यम से मेरे नश-नश में उछलने लगती है और दौड़ती है। और तुम्हारी आवाज़ का जादू मुझे बेहोश कर देती है। और वह मुझे बर्फ के स्पर्श की तरह ठंड में जलन जैसी महशुस होती है। और एक कवच मेरे अंगों पर लौ की तरह चलता है। और मेरे कानों में एक प्रकार निर्जन शोर उछालता है। और मुझे नहीं पता कि मैं क्या करता हूँ। और आँसू मेरी आंखों में आ जाते हैं, और फिर भी मैं खुशी के लिए हँसना चाहता हूँ। और अगर मैं बात करने की कोशिश करता हूँ, तो मेरी आवाज थरथराती है, जैसा कि अब करता है और मेरे गले में एक संघर्ष और बाधा आती है। और मैं सांस लेने की कोशिश करता हूँ। और नहीं कर सकता और दर्द मेरे दिल को बहुत अधिक दबा देता है। और मुझे क्या लगता है, कि अब मैं कुछ नहीं बता सकता, लेकिन यह मुझे पता है कि जब तुम मेरे साथ हो, यह मेरे लिए जीवन के समान है। और जब तुम मुझे छोड़ कर चली जाती हो वह मेरे लिए तो वह मृत्यु के समान है।

लेकिन चेतना शांती के साथ वहाँ पर खड़ी रही, जिसके साथ उसके निचे के होठ कांप रहे थे। और आसुं लग-भग उसकी आखों से बह कर उसके गालों पर आगये थे। और उसके स्तन गहरी शांस लेने की वजह सो उपर और निचे हो रहें थे। और अंत में उसने अपनी आँखों को उपर उठाया और अपनी आँखों के आसुंओं के मध्य में से मुस्कुराई और कहाँ हे राजा यह और अच्छा होगा कि मैं यहाँ से इस समय चली जाऊँ, क्योंकि यह आपके कहे गयें शब्द मुझसे अधिक मेरी मालिकिन के लिए ज़्यादा उपयुक्त हैं।

और फिर राजा ने एक गहरी शांस ली, और उसके सामने खड़ा रहा और वह इधर उधर देखने लगा, फिर वह हसंने लगा और कहा तूने मुझे निराशा के लिए प्रेरित किया है। और इसके लिए को मुझे परवाह नहीं है। देख लो! कि मैं एक आदमी और एक मजबूत आदमी हूँ और तुम एक छोटी-सी महिला हो। इसलिए तुम नहीं जाओगी, क्योंकि तुमने मेरी ज़िन्दगी को मुझसे छिन लिया है।

और अचानक, राजा ने उसे अपनी बाहों में कैद कर के कस लिया, और जैसे ही उसने ऐसा किया, वह चिल्लायी और उसकी बांहों से निकलने के लिए वह छटपटाने के साथ कश म-कश करने

लगी। उस समय वह आधी भयभीत और आधी खुंश भी थी, उसने कहा आर्यपुत्र, मुझे जाने दो। क्या आपने अनुमान नहीं लगाया कि मैं आपकी रानी हूँ?

इसको सुनते ही राज उसको छोड़ कर एक दम हवा में छलांग लगाते हुए उससे दूर जा कर खड़ा हो गया। जैसे किसी तलवार ने उसके हृदय को विदिर्ण कर दिया हो। और वह आश्चर्य चकित हो कर खड़ा रहा और चेतना उसको देख रही थी। और लग-भग अपनी इच्छा के विपरित उसने मुसकुराना शुरु कर दिया। और उसके सामने खड़ा हो कर अद्‌भूत आनंद के साथ उसको घुरता रहा। और उसने जोर से हंसते हुए आश्चर्यचकित होकर और फिर शर्मिंदगी के साथ और अंत में खुशी से उसके सामने देखी। और उसने कहा हंसो खुब हंसो, क्योंकि तुम्हारी हंसी मेरे कान के लिए संगीत है। और मुझे इसका कोई परवाह नहीं है, जब तक तुम मेरे साथ हो। लेकिन हे तुम भ्रमित हो, यह क्या है? क्या तुम नहीं थी जिसने मुझे रानी को धोखा देने के लिये मना किया है? और फिर भी तुमने मेरे साथ यह सब प्रेंमालाप किया है?

और तुरन्त, मधु (चेतना) ने हँसना बंद कर दिया और आँसू उसकी आँखों से ढलते हुए उसके गालो पर गिर गए और उसने अपने पति को एक मुस्कुराहट के साथ देखा और अचानक वह उसके पास आई। और उसे हाथ से पकड़ कर अपने साथ ले गयी, और उसने उसे वहाँ से दूर ले गई, और वह उसके चरणों में बैठ गयी, और कहा तुम वहाँ बैठो उचें स्थान पर बैठो और मैं तुम्हें बताऊंगी। तब वह दाहिने ओर राजा के बगल में घुटने टेक कर बैठ गई, और अपना दाहिना हाथ उसके चारों ओर रख दिया और अपना बायाँ अपने आप में ले लिया। और उसने कहा मूर्खतापूर्ण और क्या तुम सोचते हो, क्योंकि कोई प्रकाश के रूप में हल्का था कि अन्य सभी महिलाएँ समान थीं? और क्या आपको यह भी लगता था कि तुम्हारी ज़िन्दगी किसी महिला के अमृत के बिना पारित किया जा सकता है? अब सुनो और मैं तुम्हें बताऊंगा, जो तुम नहीं जानते हो। क्योंकि जब मेरे पिता ने मुझे तुम्हें चढ़ाने के लिए भेजा था, तो मैंने भी अपने दूत को भेजा, जिसने मुझे आपके बारें में मुझको सब कुछ बताया था। और मैंने तुम्हें कभी देखा है इससे पहले कि मैं तुमसे प्यार करती थी और मैंने दृढ़ संकल्प किया कि यह आपके साथ समान होना चाहिए। और मैंने आपको लंबे समय अपने आप से दुर रखने का प्रयास किया, यह नहीं जानकर कि मैं कौन थी? और एक दिन मैं कमज़ोर थी और वह दिन था जब मैं तुम्हारे पास नहीं आया थी। और मैंने इसे तुम्हारे लिए रोने में पारित किया और दूर रहने के लिए मैं जितना कर सकता थी उससे कहीं अधिक किया था। और अब, मैं तुम्हें दिखाऊंगी कि जिसको आप कभी नहीं जानते, आपके जीवन की मिठास। जब तू प्रसन्न होता है, तो मैं तेरे सारे आनन्द को दोगुना करूंगी; और जब तू उदास होता है, तो मैं तेरे दु: ख को रोकूंगी और उसे हटा दूंगी और आनन्द से गहराई से तेरा आनन्द होगा। और जब तुम अच्छी तरह से हो, मैं तुम्हारी आत्मा को मनोरंजन और विविधता से भर दूंगी। और जब तुम बीमार होगे, तो मैं तुम्हारी देखभाल करूंगी। और यदि तुम थके हुए होगें, तो तुम मेरी छाती पर सो जाओगे और यह तुम्हारा तकिया होगा। और रात और दिन मेरी आत्मा तुम्हारे साथ रहेगी और तुम्हारे चारों ओर मेरी बाहों के साथ रहेगी। और जब तुम मुझे नहीं चाहते हो, तो मैं अनुपस्थित हूँ; और जब तुम मुझे दोबारा चाहो, मैं वहाँ रहूंगी और यदि मैं तेरे साम्हने मर जाऊँ, तो यह ठीक है और तू मुझे

याद करगो, परन्तु यदि तू मुझे पीछे छोड़ देते हो, तो मैं अग्नि के माध्यम से आपका पीछा करूंगी। क्योंकि मैं तुम्हारे बिना नहीं रहूंगी, एक दिन के लिए भी नहीं। एक सपने की तरह और चांदनी की तरह और एक छाया एक तालाब की सतह पर जैसे रहता है। मेरे लिए कुछ भी नहीं गायब होना चाहिए, जब मुझे पदार्थ और उसकी वास्तविकता का ज्ञान दिया गया है। मैं क्या हूँ, यद्यपि इन दो आत्माओं कि एक प्रति और एक जीव की गूंज जो आप है? मेरा कर्तव्य और धर्म, आपको ध्रुव मान कर मडराना और आपकी अरुंधती, तुम्हारी रती और आपकी राधा, तुम्हारी चक्की और तेरे क्षेत्र भुमी, आपकी शक्ति और आपकी जुड़वां हूँ? मुझे केवल अपने प्यार के पहाड़ के साथ और दूधिया के महासागर की तरह मत रखना। मैं आपको अपना सब कुछ समर्पण कर दूंगी, और आपको दिखाऊंगी कि एक वफादार पत्नी के सौंदर्य से जो मक्खन है। और जो युवाओं की शराब है और खुशी का पेय है, और नमक हंसी, लहरों में जो झांग हैं और समुद्र में जो से पैदा हुआ है। और मैं तुझ पर एक अमृत और एक कपूर और कमल के एक मीठे आनंद की वर्षा करुगी। और आपको अपने जीवन का सार और स्वाद को दिखाऊंगी। और तुम्हारे पास वह मेरे बिना होगा, यह खाली था और बिना किसी अर्थ के एक शब्द और एक चंद्रमा के बिना रात।

और फिर राजा ने उसका सिर अपने हाथों में रख लिया और उसने उसकी आंखों में देखा, और पता किया की उसके शब्द सच्चाई के काबील जबाब थे। और अचानक, एक हिंसक प्रयास के साथ, उसने उसे खुद से दूर कर दिया और खड़ा हुआ, अपनी खुशी के जुनून के लिए, उसके दिल से अधिक सहन हो सकता था और फिर एक पल में वह उसके पास लौट आया। और उसने कहा, प्रिय, आप कुछ भूल गई हैं। और उसने कहा क्या? तब उसने कहा क्या तुम झील से अपनी मालकिन के लिए कमल नहीं ले जाओगी?

तब चेतना खुशी से हँसने लगी, और उसने कहा हे राजा, तूने ठीक कहा है और वे एक साथ हो गए और झील की तरफ चले गए। और जैसे ही वे गए, राजा ने उसे देखा और थरथराया और उसने खुद से कहा फिर भी उसने मुझे चूमा नहीं है। और यह अभी भी आना बाकी है। फिर वे झील के पास पहुंचे और उन्होंने उसके किनारे पर एक बढ़ते हुए कमल पाया। और राजा ने कहा तू इसे फेंक देगी, और मैं तेरे हाथों से इसको पकड़ुंगा, ऐसा न हो कि तू पानी में गिर जाए और वह उसे अपनी बाहों में ले लिया। और वे झील में झुक गए और चेतना ने कमल के लिए अपने हाथ को आगे बढ़ाया। तब राजा ने उसके कान में फुसफुसाया देखो, मैंने तुम्हें पानी के पास लाया हुं। एक के बजाय आपके दो चेहरे हो सकते हैं। अब, मैं किसको चुंबन दूंगा और जो मुझे चूमता है, चेतना या रानी है?

जादूगर कालिया

बहुत समय पहले कि बात है एक राजा थे। जिसके पास उनकी सात पुत्रीयाँ थी। वे सब बहुत सुन्दर और अच्छी लड़कियाँ थी। लेकिन उनमें जो सबसे छोटी पुत्री थी जिसका नाम सुनयना था। वह अपनी सभी बहनों में बहुत ही अधिक चालाक और समझदार थी। राजा की पत्नी का जब मृत्यु हुई, तब वह सब बहने बहुत छोटी थी। इस तरह से इन बेचारी सात राजकुमारि लड़कियों कि देखभाल की जिम्मेदारी राजा के कन्धों पर आगई थी। उनकी देखभाल करने वाली उनकी कोई माँ नहीं थी।

राजा की पुत्रीयाँ आगे चल कर राजा के लिये भोजन बनाने का कार्य करने लगी। और हर दिन वहीं राजा के लिये भोजन बना कर देते थी। तब भी जब राजा अपने मंत्रीयों के साथ महल से बाहर होता था. देश के किसी कार्य के लिये।

लगभग इसी समय देश के प्रधान सेवक की मृत्यु हो गई, और उसने अपने पिछे पत्नी के साथ एक छोटी लड़की को इस संसार में छोड़ गया था। जब राजा की सात लड़किया अपने पिता के लिये भोजन को तैयार कर रही थी। उसी समय प्रधान कि विधवा पत्नी और उसकी पुत्री इन राजा कि लड़कियों के पास आई। इनके चुल्हे से थोड़ी-सी आग को मागने के लिये। सुनयना ने अपनी बहनो से कहा कि इस औरत को यहाँ से भगा दो, और इससे कहो की यह अपने घर में आग को स्वयं पैदा करे। यह हम सब से क्या मांगने के लिये रोज हमारे यहाँ पर चली आती है। अगर हमने यहाँ इसे रोज आने की आज्ञा दे दी, तो यह किसी एक दिन हमारे लिये ज़रूर मुसिबत का कारण बनेगी ।

लेकिन सुनयना की दूसरी बहनों ने सुनयना से कहा कि शान्त रहो, आखिर तुम अक्सर इस वेचारी विधवा औरत से क्यों लड़ती और झगड़ती रहती है? इसके साथ इसको भला बुरा भी कहती हो, इस वेचारी का कसुर हि क्या हैं? केवल हमारें यहाँ आकर हमारे चुल्हे से थोड़ी-सी आग ही तो मांगती है। अब इसे थोड़ी-सी आग दे भी दो, इस तरह से प्रधान कि विधवा पत्नी रोज राजा कि रशोई में आग लेने के लिये आने लगी। और वहाँ से कुछ जलती हुई लकड़िया ले लेकर अपने घर जाती थी। और जब वह देखती की रसोंई में कोई उसको देखने वाला नहीं है। तो वह विधवा औरत बहुत जल्दी-जल्दी राजा के लिये तैयार भोजन में राख को मिला देती थी।

अब जब राजा अपनी पुत्रीयों को बहुत अधिक प्रेम करता था। उसकी पत्नी के मरने के बाद, यह उसकी लड़किया ही उसके लिये भोजन तैयार अपने हाथों से करती थी। जिससे राजा को ऐसा कोई खतरा नहीं महसूस हुआ कि उसके भोजन में किसी प्रकार का जहर मिलाया गया है। लेकिन जब राजा ने अपने खाने के भोजन में राख को मिला पाया तो उसने विचार किया, कि यह अवश्य उन लड़कियों के लापरवाही के कारण ही भोजन में राख मिल गई है। ऐसा नहीं है कि किसी ने अपने किसी कुरुप मकसद को साधने के लिये उसके भोजन में राख या जहर को मिलाया है। राजा यह विचार करने लगा कि यह कैसे हुआ? यद्यपी राजा स्वंय बहुत अधिक उदार और अपनी पुत्रीयों के प्रती दयालु प्रकृती का व्यक्ती था। इसलिये वह उन्हें किसी प्रकार कि सजा इसके लिये नहीं देना चाहता था। यद्यपि करी की खराब स्थिति को कई दिनों से दोहराया जा रहा था।

अंत में राजा ने निर्णय किया कि वह छुप कर देखेगा अपनी पुत्रियों को अपना भोजन बनाते हुए। कि यह सब कैसे और क्यों रोज ही हो रहा है? इस लिये राजा अपने दूसरे कमरे में गया। और वह

अपनी पुत्रियों को खाना बनाते हुए दिवाल के गुप्त झरोखे से, उन लड़कियों को छुपकर खाना बनाते हुए देखने लगा। और उसने देखा कि उसकी सात लड़किया बड़ी सावधानी से चावल को धो और बड़ी स्वच्छता से करी को तैयार कर रही हैं। और जैसे ही सभी प्रकार के भोजन बन कर तैयार हो गया। तो उनको स्वच्छता के साथ चूल्हे से दूर हटा कर रख दिया। आगे राजा ने देखा कि प्रधान कि विधवा पत्नी आग जलाने के लिये कुछ लकड़िया मांगने के लिये आई। अपने भोजन को पकाने के लिये। तभी सुनयना उस पर क्रोधित हो कर उससे कहा कि तुम अपने घर में क्यों नहीं जलाने का इधन रखती हो? और रोज हमारे यहाँ हमारी वस्तुओं को मत मांगने के लिये इस तरह से चली आया करो, तुमको थोड़ी भी शर्म नहीं लगती है। जब देखो तब मुह उठाये चली आती है कुछ ना कुछ मांगने के लिये।

फिर सुनयना कि दूसरी बहनो ने सुनयना से कहा कि चलो कुछ लकड़िया और आग, वेचारी, कमजोर इस औरत को दे भी दो। यह हम सब को किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहंचा सकती है। लेकिन सुनयना ने उत्तर में कहा अगर तुम सब इसको रोज हमारे यहाँ आने के लिये इजाजत देती रहोगी। और रोज किसी ना किसी वस्तु को देती रहोगी, तो यह एक दिन हमारे लिये किसी भयानक समस्या को पैदा कर देगी। और तब हम सब को इसके लिये दुःख को सहना पड़ेगा।

जब राजा ने प्रधान की विधवा पत्नी को देखा कि वह लकड़ियों को लेने के बाद प्रत्येक खाद्य पदार्थ में थोड़ो-थोड़ा करके सभी भोजन में, जो उसकी पुत्रियों के द्वारा अच्छे और सुन्दर तरिके से तैयार किये गये थे उनमें राख मिला रही है।

इस पर राजा बहुत अधिक क्रोधित हुआ और उसने अपने आदमियों को उसे पकड़ने के लिये भेजा और कहा कि उसको मेरे सामने प्रस्तुत करो सिघ्र ही। लेकिन जब विधवा आई, तो उसने कहा कि वह एक खेल-खेल रही थी। कि उसको ऐसा करते हुए कोई देखता है कि नहीं, और उसने बड़ी चालाकी और धुर्तता पूर्ण कलाबाजी से युक्त अपने शौभाग्य और उत्थान के लिये राजा की प्रशंशा में अद्भुत शब्दों में यशोगान को गाया। जिसके परिणाम स्वरूप राजा उस पर अत्यधिक प्रसन्न और काम से मोहित हो कर उसको दण्ड देने के स्थान पर उसे अपनी रानी बनाने का निर्णय कर लेता है। और इस तरह से उससे वह विवाह कर लेता है। और वह विधवा अपनी-अपनी पुत्री के साथ राजा के महल में ही रहने लगती है।

अब रानी राजा कि पहली पत्नी से उत्पन्न सात लड़कियों से बहुत अधिक नफरत और घ्रिणा करने लगी। और वह चाहती थी कि किसी प्रकार से इनको इस महल से बाहर किया जाये। जिसके लिये वह नयें-नये तिकड़म रचने लगी। और वह विचार करने लगी कि जैसे भी संभव हो, किसी भी तरह से इनको यहाँ से भगा देने का, क्योंकि इसके बाद ही राजा का सारा धन और संपदा के साथ सभी प्रकार का ऐश्वर्य केवल उसकी एक पुत्री का हो सकता है। और मेरी पुत्री उनके स्थान पर राजकुमारी के रूप में इस महल में रहेगी। इसके बजाय कि उसको राजा की पुत्रियों के प्रती करुणा, दया, प्रेम से युक्त व्यवहार करना चाहिये। यद्यपी वह हर प्रकार से केवल राजा कि सात पुत्रियों को प्रताणित और दुःखी करने वाले हि सारे कार्यों को करने लगी थी। इस तरह से उसने राजा कि सात पुत्रीयों के खाने पिने पर प्रतिबंध लगा दिया। और वह उनको बहुत कम खाने के लिये खाना और पिने के लिये बहुत कम पानी दिया करती थी। इस तरह से सातों बहनों पर हर प्रकार से दुःखों का ही श्रोत खुल रहा था । और इसके

विपरित जो प्रधान के द्वारा उत्पन्न रानी की एक छोटी पुत्री थी। उसके लिये हर प्रकार कि सब ऐश्वर्य पूर्ण वस्तुओं को उपस्थित किया जाने लगा महल में, रानी की आज्ञा से. और उसे राजकुमारी की तरह से आरामदायक जीवन जीने के लिये। हर तरह से उसकी माँ ने उसको प्रोत्साहित किया और अपनी पुत्री के लिये रानी ने अच्छे-अच्छे खाद्य पदार्थ, अच्छे-अच्छे कपड़े हर प्रकार की वस्तुओं का संग्रह करने लगी। और राजा कि पहली पत्नी से उत्पन्न सात पुत्रियों को सभी प्रकार कि वस्तुओं से वंचित कर दिया गया। वह सभी बहने बहुत दुःखी उदाश और अत्यधिक परेशान रहने लगी। उनको समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें? इस तरह से वह सात बहने दुःखी हो कर महल से बाहर रोज जाकर अपनी माँ कि समाधि पर रोया करती थी। और इस प्रकार से कहा करती थी माँ ओ माँ क्या तुम अपनी वेसहारा, लाचार, बेवश पुत्रियों को नहीं देख सकती हो, हम सब कितने अधिक अप्रसन्न और दुःखी है? और हम सब कैसे भुखे प्यासे रह सकते है? इस क्रुर निर्दय सौतेलि माँ के साथ।

एक दिन जब वह सब एक साथ अपनी माँ की कब्र पर बैठ कर रोने के साथ शिशकियाँ भर रही थी। और तभी उन्होंनें देखा कि एक उनकी माँ के समाधि स्थल के पास ही एक बहुत सुन्दर अनार का वृक्ष उत्तपन्न हो गया। और पुरी तरह से ताजे पके हुए सुन्दर स्वादिष्ट फलो से लद गया। और इस तरह से सभी बच्चों ने अपनी भुख को पके फलों को खा कर शान्त किया और हर रोज जब उनकी सौतेली माँ उनको खाने के लिये पर्याप्त भोजन नहीं देती थी। तो वह सब अपनी माँ के इस कब्र पर आकर इसी तरह से फलों को खां कर अपनी भुख को शान्त कर लिया करती थी। आगे चल कर उन सब बहनों ने अपनी सौतेली माँ के द्वारा दिया गया घटिया भोजन भी खाना बन्द कर दिया। और केवल अनार के फलों को खाकर ही जीवीत रहने लगी। क्योंकि वह अनार का पेड़ अद्भूत था, जितना अधिक फलों को तोड़ा जाता था। उससे अधिक पके हुए स्वादिष्ट फल अगले दिन लग जाते थे। जो उन बहनों के लिये पर्याप्त भोजन के समान कार्य करते थे।

उन सब सात बहनो की सौतेली माँ ने देखा, कि वह जब भी भोजन के लिये कहती है, उन सात बहनो को और वह सब खाने के लिये मना करने देती है। जब ऐसा ही कई दिनो तक चलने लगा, तो उसको बड़ी चिन्ता होने लगी। उसने अपनी पुत्री को बुलाया और कहा कि यह सात लड़किया खाना-पिना कुछ भी महल में नहीं करती है। इसके विपरित यह सब स्वस्थ और सुन्दर हैं, इनको कोई विमारी भी नहीं है। इनके शरीर पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, यह तो तुम से भी अधिक सुन्दर और आकर्षण दिखती है। मैं नहीं जानती कि ऐसा कैसे हो रहा है? इन सब राजकुमारियों के साथ, तुम जा कर देखा करों छुप कर कि कोई इन सबको खाने पिने के लिये तो नहीं देता है।

इस तरह से जब सात राजकुमारिया अपनी माँ कि समाधि पर गई, और वहाँ सुन्दर और स्वादिष्ट अनार के पके फलो को खा रही थी। तभी इनके पिछा करते हुए प्रधान कि पुत्री भी वहाँ पहूंच गई, और उसने देखा कि वह सब अनार के पके हुए फलो को एकत्रित कर रही थी।

तभी सुनयना ने उसको देख कर अपनी दूसरी बहनो को सम्बोधित करते हुए कहा कि क्या तुम सब नहीं देख रही हो? कि यह लड़की हम सब का पिछा कर रही है और हम सब को देख रही है। आवो हम सब मिल कर इसको यहाँ से भगा देते है, या इन सब अनार के फलों को छुपा देते है। अन्यथा यह

यहाँ से जायेगी और हम सब के बारे में सब कुछ अपनी माँ से कह देगी, और इसके बाद हमारे साथ जो भी होगा वह वहुत अधिक बुरा और दुःख दाई होगा।

लेकिन सुनयना कि दूसरी बहनों ने कहा नहीं-नहीं सुनयना तुम इतना अधिक इस निर्दोष लड़की के प्रती निर्दई मत बनो। यह लड़की इतनी अधिक निर्दई और क्रुर स्वाभाव कि नहीं है, जो यहाँ से जा कर सब कुछ अपनी माँ से कह देगी। आवो हम सब उसको अपने पास बुलाते है। और उसको भी खाने के लिये कुछ स्वादिष्ट फलों को देते है। और उन सब ने उस प्रधना की पुत्री को अपने पास बुलाया, और उसको खाने के लिये एक अनार का फल दे दिया।

प्रधान की पुत्री ने धिरे-धिरे उस अनार के फल को खाते हुए, अपनी माँ के पास महल में गई और अपनी माँ से कहा कि मुझे कोई आश्चर्य नहीं है, इस पर कि वह सात बहने खाना नहीं खाती है। जो महल में उनके लिये तैयार किया जाता है। क्योंकि उनकी माँ के द्वारा रोज उनको पके हुए स्वादिष्ट अनार का फल खाने के लिये दिया जाता है। और इसलिये वह सभी बहने रोज अपनी माँ की कब्र पर जाती हैं। और वहां पर अनार के फलों को खाती है। मैंने भी उसमें से एक फल खाया था जो अती सुन्दर और अद्‌भुत था। ऐसा फल मैने कभी अपने जीवन में नहीं खाया था।

यह सब सुन कर वह क्रुर रानी बहुत अधिक दुःखी और परेशान हो गई। अगले दिन उसने अपना पुरा समय अपने कमरे में ही बिताया और राजा से कहा कि उसके सर में बहुत बुरी तरह से दर्द हो रहा है। राजा अपने अन्दर बहुत अधिक गहराई से दुःखी और उदास हो गया। और उसने कहा कि बताओ मेरी जान मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ? उसने उत्तर में कहा केवल एक ही वस्तु है, जो मुझे इस सर दर्द से मुक्त कर सकती है। वह यह है कि जो तुम्हारी पहली पत्नी कि समाधि है। वहाँ पर एक अनार का सुन्दर वृक्ष उगा है। उसको उखाड़ कर उसके जड़ और तने के साथ पत्तों को थोड़े पानी में उबाल कर मेरे सर पर उस उबले जल से जब मालिस करनी होगी। तो मेरा सर दर्द पूरी तरह से ठीक हो जायेगा। इस तरह से राजा ने अपने कुछ नौकरों को, अपनी पहली पत्नी की समाधि पर भेजा, और कहा कि वहाँ समाधि स्थल के पास जो सुन्दर अनार का वृक्ष उगा है। उसको उखाड़ कर जड़, तना, पत्तो समेत मेरे पास लेकर यहाँ पर आवो। सेवको ने राजा कि आज्ञा के अनुसार जड़ समेत उस सुन्दर अनार के वृक्ष को उखाड़ के राजा के पास ले आये। और राजा के द्वारा उनको उबाल कर जल में रानी के लिये औषधी के रूप में उपस्थित कर दिया गया। जिसके सेवन से उस क्रुर रानी ने राजा से कहा कि वह अब बिल्कुल ठिक हो गई है। और अच्छा महसूस कर रही है। अगले दिन जैसा कि प्रायः सातों बहने अपनी माँ की समाधि पर जाया करती थी। जब वहां अपनी मां की समाधि पर गई। और उन्होंने देखा कि वहाँ पर से अनार का वह सुन्दर वृक्ष गायब हो चुका था। तो वह सब बहुत बुरी तरह से दुःखी होकर रोना शुरु कर दिया।

अब वहाँ पर जहाँ पर कभी अनार का वृक्ष था उसके स्थान पर एक छोटा-सा तालाब बन गया था।और वह मक्खन के समान पदार्थ से भर गया, और जो जल्दी ही सफेद ठोस विस्किट में बदल गया। जिसको रोती हुई सातो बहनो ने आश्चर्य के साथ देखा। इसको देख कर वह सात बहने बहुत अधिक

प्रसन्न और उत्साहित होगई। और उन सब उसमें से कुछ विस्किटों को उठा कर खाया। जो उनको बहुत अधिक पसन्द आया, और अगले दिन भी वहीं हुआ। और ऐसा ही कई दिनो तक चलता रहा। हर रोज सुबह राजकुमारिया अपने माँ की समाधि पर जाती थी। और वह देखती की उस छोटे तालाब में पहले मक्खन बनता फिर वह विस्किटों का रूप ले लेता है। जिसको वह सब खा कर अपनी भुख को शान्त कर लेती थी। फिर उस क्रुर और निर्दई रानी ने अपनी पुत्री को बुला कर कहा मुझे पता नहीं कि यह क्या हो रहा है? जबकि मैने अनार के वृक्ष को उखाड़वा दिया है जो रानी की समाधि पर उगा था। फिर भी वह सब लड़कियाँ ना ही बिल्कुल दुःखी या उदास हुई, और ना ही वह सब दुबली पतली हुई। यद्यपी वह सब अपना भोजन अब भी महल में नहीं करती है। जो मैं उनके लिये तैयार कराती हूँ। मैं इसके बारे में कुछ भी नहीं कह सकती हूँ कि ऐशा कैसे हो रहा है?

और उसकी पुत्री ने कहा कि मैं उन पर नजर रखुगी और देखुगीं आखिर माजरा क्या है?

अगले दिन जब सातों बहनो ने अपनी माँ कि समाधि पर जा कर मक्खन से बने विस्किटों को खा रही थी। तभी सबसे पहले सुनयना ने प्रधान की लड़की को अपनी जासुसी करते देखा, जो उन सब पर छुप कर नज रख रही थी। और उसने अपनी बहनों से कहा देखो वह लड़की दोबारा यहाँ पर फिर आई है। आवो हम सब चारो तरफ से इस तालाब को ढक लेते है। जिससे वह इसको नहीं देख सके, अगर हम सब ने अपने विस्कुट का थोड़ा भी टुकड़ा इसको दिया। तो यह अवश्य जा कर अपनी क्रुर और निर्दई माँ से कहेगी, जो हम सब के लिय बहुत बड़ा दुर्भाग्य को लाने वाला होगा।

सुनयना की दूसरी बहनो ने समझा कि सुनयना अनावश्यक संदेह करती है। और उन सबने उसके सुझाव पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया, इसके विपरित उन्होंने प्रधान के पुत्री को भी अपने पास बुलाकर उसे भी कुछ विस्किट खाने के लिये दे दिया।

क्रुर रानी ने जब राजकुमारियों के अदम्य शाहस, उत्साह और हौशले से पूर्ण कार्य के बारें में सुना तो वह बहुत व्यग्रता के साथ क्रोध से लाल पिली होने लगी। और इसके साथ उसने अपने नौकरों को बुला कर कहा अभी जाओं रानी की समाधि को वहाँ से उखाड़ दो। और उसके पास में उपस्थित छोटे तालाब को नष्ट करके उसमें मलमुत्र भर दो। और इस पर भी वह संतुष्ट नहीं हुई। अगले दिन वह फिर भयंकर बिमारी का बहाना करके अपने महल के कमरे में पड़ी रही। और कहने लगी की अब सच में यह उसके जीवन का आखीरी समय आगया है। इसको सुनते ही राजा अत्यधिक दुःख से भर गया। और उसने रानी से कहा क्या उसके सारे सामराज्य कि शक्ति के बदले में। यदि कोई उपाय है, तो वह कहे जिसको वह राजा अपना सब कुछ देकर खरिद ले, और जिससे रानी का जीवन बचाया जा सके।

क्रुर रानी ने कहा केवल एक वस्तु है, जो मेरे जीवन को बचा सकता है, लेकिन मैं जानती हूँ कि तुम इस कार्य को हमारे लिये कभी नहीं कर पाओगे। राजा ने कहा तुम कहो वह कुछ भी होगा, मैं उसे अवश्य पुरा करूगा, इसके लिये मैं तुमसे वादा के साथ प्रतिज्ञा करता हूँ। फिर उसने कहा मेरे जीवन को बचाने के लिये, तुमको अवश्य अपनी पहली पत्नी से उत्पन्न सातो पुत्रियों कि हत्या करनी होगी। उनका कुछ खुन मेरे सर और मेरी हथेलियों पर लगाना होगा। इस तरह से उनकी मृत्यु ही मेरा जीवन

है। इन शब्दों को सुन कर राजा दुःख और पिड़ा से भर गया, उसके पैरों के निचे से जैसे पृथ्वी गायब हो चुकी हो। और वह मुर्छा खा कर गिरने वाला होगया हो। लेकिन फिर भी राजा ने स्वयं को सम्हालते लिया। क्योंकि राजा को अपने प्रतिज्ञा के टुटने का भय था। इसलिये भारी हृदय के साथ वह कमरे से बाहर आगया। और राजकुमारियों को तलास करने लगा।

राजा ने अपनी सातों पुत्रियों को अपनी पहली पत्नी के बर्बाद समाधि स्थल पर रोते हूए पाया।

फिर राजा के हृदय में भाव उठा उन सबकी हत्या ना करने के बारें में, राजा ने अपनी पुत्रियों से प्रेम पूर्वक बोला कि तुम सब चलों मेरे साथ इस जंगल से बाहर। कुछ दूर जा कर एकान्त जंगल में राजा ने आग जलाई और उन सब के लिये कुछ चावल को पका कर, उनको खाने के लिये दिया। लेकिन दोपहर का समय था इस समय बहुत अधिक गर्मि हो रही थी। जिसके कारण वह सभी सातों बहने गहरी निद्रा में खाने बाद चली गई। और जब राजा ने देखा कि यह सब सो चुकी है। तो वह उठा अपने स्थान से और चोरी से छुप कर उन लड़िकयों कि निगाह से वहाँ जंगल से भाग गया। उन सब को वहीं निद्रा अवस्था में छोड़ कर (अपनी पत्नी के भय के कारण) और अपने मन में सोचता हुआ कि यह हमारी पुत्रीयों के लिये यही अच्छा है। कि यह सब यहाँ एकान्त जंगल में भुखे–प्यासे किसी भुखे जानवर के भोजन के रूप में अपनी मृत्यु को प्राप्त करें। इसके बजाय कि यह सब अपनी सौतेली माँ के द्वारा मारी जाये, यह इनके लिये बहुत ही बुरा होगा।

फिर राजा ने जंगल में एक हिरण को मार कर, उसके खुन को लेकर अपने महल में आया। और उस खुन को रानी के सिर और उसके हथेलियों पर लगाया, और क्रुर रानी ने सोचा कि राजा ने सच में सातों राजकुमारियों को मार दिया है। और उसने राजा से कहा कि अब वह स्वयं को बिल्कुल अच्छा महसूस कर रही है।

राजा के चले जाने के कुछ देर बाद हि सातों राज कुमारियों कि निद खुल गई। और उन्होंने अपने आपको घने जंगल में अकेले पाया। जब उन्होंने अपने चारों तरफ भयंकर जंगली जानवरों को चिग्घाड़ने कि आवाज को सूना। जिसको सुनते ही उन सबका रोआ-रोआ भय से कांपने लगा। उनका पुरा का पुरा शरीर भय से थर थराने लगा। जिसके कारण वह सब भय से आक्रान्त हो कर रोने और चिल्लाने लगी। और उनमें जितनी शक्ति थी पुरी शक्ति को लगा कर अपने पिता को पुकारने लगी। इस आशा से कि सायद उनकी आवाज को सुन कर राजा वापस आ जाये। लेकिन उन सब को ऐसा करते हुए बहुत समय गुजर गया। उन सब को शिवाय अपनी आवाज के जैसे बादल गड़ गड़ा रहे हो ऐसा सुनाई दे रहा था इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं था।

ठिक उसी दिन उस जंगल में एक दूसरे पड़ोसी देश के सात राजकुमार वहाँ शिकार करने के उद्देश्य से आये थे। और वह सब अपने राज्य ते लिये प्रस्थान कर रहे थे। तभी उन राज कुमारों में से सबसे छोटे राजकुमार ने अपने भाईयों को रोकते हुए, कहा कि ज़रूर कोई इस जंगल में फंसा है। और वह हम सब को अपनी सहायता करने के लिये पुकार रह है।

अभी सब लोग यही ठहर जाओ मैं समझता हूँ कोई रो- रहा है और किसी को बुला रहा है, क्या तुम सब इस आवाज को नहीं सुन रहे हो? चलो इस दिशा में चलते है। जहाँ से यह आवाज आरही है, और तलास करते है कि यह कौन है?

इस तरह से सातो राजकुमारों ने जंगल को चिरते हुए अपने-अपने घोड़ों को उसी दिशा में दैड़ा दिया। जहाँ से यह मार्मिक आवाज आ रही थी। और कुछ ही समय में वह सब राजकुमार उस जंगल में पहूंच गये। जहाँ पर वह सात राजकुमारियाँ मार्मिक विलाप के साथ अपने हाथों को बजा रही थी। इस दृश्य को देख कर सबसे बड़ा राजकुमार बहुत अधिक आश्चर्यचकित हूआ और बड़ी व्यग्रता के साथ उन सब कि सारी कहानी को बड़ी रुची के साथ सुना और उन सब ने बहुत कुछ नया जीवन के बारें में सिखा और उन सब राजकुमारों ने यह निश्चय किया। जो परमेश्वर के द्वारा यह औरते मिली है, इनको अपने साथ अपने राज्या में ले जायेगे। और इन सब के साथ विवाह कर करके अपने साथ ही रखेगे।

इस तरह से सबसे बड़े राज कुमार ने सबसे बड़ी राजकुमारी से विवाह किया। और दूसरे ने दूसरे राजकुमारी से, तीसरे राजकुमार ने तीसरी राजकुमार से विवाह किया, ऐसे ही प्रत्येक राजा कुमार नें प्रत्येक राजकुमारी से क्रम के अनुसार अपना-अपना विवाह समपन्न कर लिया। अन्त में सातवीं राजकुमार ने सबसे सुन्दर और सबसे अधिक वुद्धिमान राजकुमारी सुनयना से अपना विवाह किया।

और जब वे अपने ही देश में आए, तब सात राजकुमारों की शादी में सात ऐसी खूबसूरत राजकुमारियों के लिए पूरे राज्य में बहुत खुशी हुई.।

इस सुनयना को करीब एक साल बाद एक बेटा के पैदा हुआ। और उसके चाचा और चाची लड़के से इतने अधिक प्रसन्न थे, कि ऐसा लगता था कि उस लड़के पास सात पिता और सात माँ हैं। अन्य किसी भी राजकुमार और राजकुमारियों में से किसी को भी बच्चा नहीं था। इसलिए सातवीं राजकुमार और सुनयना के बेटे को बाकी सभी ने अपने वारिस की तरह से स्वीकार किया था।

इस तरह वे कुछ समय तक वह बहुत खुशी के साथ रहे, कुछ एक अच्छे दिनो के बाद सातवें राजकुमार (सुनयना के पति) ने कहा कि वह शिकार के लिये बाहर जाएंगा। और वह शिकार के लिए अकेला चाला गया, इसके बाद सुनयना ने लंबे समय तक इंतजार किया। अपने पति का लेकिन वह कभी वापस नहीं आया।

फिर उसके छह भाइयों ने कहा कि वे जाकर देखेंगे, कि उसके भाई को क्या हुआ, और उसके बारे में पता लगायेगें? और वे चले गए, लेकिन वे भी वापस कभी नहीं आए।

और सात राजकुमारियों को बहुत दुःख हुआ, क्योंकि उन्हें डर था? कि उनके पति को किसी तरह से जंगल में किसी के द्वारा मार दिया गया है।

एक दिन जब बहुत अधिक दिन नहीं बिता था यह सब कुछ हुए। जैसा कि सुनयना अपने पुत्र कोअपने महल के कमरें में पालने में झुला रही थी। और उसकी सभी बहने निचे के कमरों में काम कर रही थी। ठीक उसी समय कोई महल के दरवाजे के पास आया, जिसने काला लबादा पहन रखा था।

जो स्वयं को फकिर कह रहा था और उसने कहा कि वह यहाँ पर भिक्षा मांगने के लिये आया है। नौकर ने कहा कि तुम महल के अन्दर भीक्षा मांगने के लिये नहीं जा सकते हो। राजा के सभी पुत्र इस समय बाहर गये है। और हम सोचते की वह सब मर चुके है, और उनकी विधवाओं को तुम्हारी भीक्षा से परेशानी हो सकती है। इसलिये तुम्हें अन्दर नहीं जाने दिया जायेगा। लेकिन उस आदमी ने के कहा कि मैं एक पवित्र आत्मा हूँ। तुम मुझे अन्दर जाने दो, फिर उन मुर्ख नौकर ने उस आदमी को अन्दर महल में जाने कि अनुमती देता है। लेकिन वह सब यह नहीं जानते थे कि वह सच में कोई फकिर या साधु नहीं था। वह तो एक बहुत क्रुर के साथ एक कुरुपात्मा जादुगर कालीया था।

जादुगर कालीया ऐसे ही महल में घुम रहा था और उसने बहुत-सी सुन्दर वस्तुओं को देखा, अन्त में उस कमरें में पहूचा जहाँ पर सुनयना अपने छोटे वेटे को पालने में झुलाते हुए उसको लोरी सुना रही थी। उसको देखते ही जादूगर कालीया ने सोचा कि इतनी अधिक सुन्दर औरत जो स्वर्ग कि किसी अप्सरा की तरह दिख रही थी। आज तक उसने अपने जीवन में कभी नहीं देखा है, इस प्रकार उससे अत्यधिक मोहित हो कर वह सिधा उसके पास चला गया। और उससे कहा कि मैं तुमको पसंद करता हुं, तुम मेरे साथ मेरे घर पर चलो मैं तुमसे विवाह करना चाहता हूँ। लेकिन सुनयना ने कहा मेरा पति है मुझे डर है कि उनकी मृत्यु हो चुकी है। फिर भी मेरा यह छोटा-सा वेटा है, जिसके लिये मैं यहाँ निश्चित रूप से रहुंगी। और इसको इस दूनिया में जिने के लिये इसको शिक्षा दे कर एक वुद्धिमान और चालाक पुरुष बनाउगी। जो मेरी जीम्मेदारी है, और जब वह बड़ा हो जायेगा, तो वह दुनिया में जाएंगे और अपने पिता को तलासने कि कोशिश करनी करेगा। स्वर्ग ने मुझे मना कर दिया है, मैं उसको कभी भी नहीं छोड़ सकती हूँ और ना ही तुमसे कभी शादी कर सकती हूँ। "इन शब्दों को जादूगर कालिया ने जब सुना तो बहुत क्रोधित हुआ और उसने सुनयना को अपने जादु से दम पर एक छोटे से काले कुत्ते में बदल दिया। और उसे ले कर अपने साथ चल दिया, यह कहते हुए, यद्यपी तू मेरे साथ नहीं आएंगी स्वतंत्र इच्छाशक्ति जो तेरी है। मैं तुझको अपना बनाऊँगा।" तो बेचारी राजकुमारी ने कुत्ते के रूप में उसके साथ भागने लगी इधर-उधर, लेकिन उसके पास कोई शक्ति नहीं थी। उससे बचने कि और ना ही यह बताने की उसके साथ क्या हो रहा? जिससे उसकी दूसरी बहनों को महल में पता चल सके कि वह एक वेवश कुत्ते के रूप में विवश जादूगर कालिया के इसारे का अनुगमन कर रही है। जैसे ही जादुगर कालीया महल के दरवाजे से पहूंचा, नौकरों ने उससे पुछा, तुमने इस छोटे से कुत्ते को कहाँ से लिया? "और उसने जवाब दिया," राजकुमारियों में से एक ने मुझे इसे एक उपहार के रूप में दिया है। "इसके सुनते ही नौकरों ने और कुछ पुछे वगैर उसको महल के दरवाजे से बाहर जाने की अनुमती दे दी।

इसके कुछ समय के बाद सुनयना की दूसरी छोटी छः बहनो नें अपने भान्जे के रोने कि आवाज को सुना और जब वह सिढ़ीयों से चढ़ कर उसके कमरे में गई। तो उन सबने देखा कि वहा कमरे में कही भी सुनयना दिखाई नहीं दे रही थी। फिर उन सबने नौकरो से पुछताछ की और जब उन्होंने सुना कि एक फकिर और उसके काले कुत्ते के बारे में, फिर उन सबने अन्दाज लगाने का प्रयाश किया कि सुनयना के साथ क्या हुआ था? उन्होंने नौकरों को हर दिशा में उन सब की तलाश करने के लिये भेजा, लेकिन उन सब को कही भी ना वह फकिर ही मिला ना ही उसका काला कुत्ता ही मिला, वह सब

निराश हो कर महल में वापिस आगये। वेचारी छः औरते क्या कर सकत थी? उन सबने अपनी बहन और अपने दयालु पतियों की हर प्रकार से आशा को छोड़ दिया। अपना सारा ध्यान सुनयना के वेटे के परवरिश और उसकी देखभाल के साथ उसकी शिक्षा दिक्षा में लगा दिया।

समय गुजरता रहा और सुनयना का पुत्र १४ साल का हो गया, फिर एक दिन उसकी चाची ने उसको अपने परिवार का इतिहास बताया। इसको सुनने के बाद वह अपने पिता, अपनी माँ और अपने चाचओं को खोजने के लिये अत्यधिक उत्सुक होगया। और इसके साथ उसने दृढ़ संकल्प किया कि वह बाहर संसार में जाकर उन सब कि तलास करने करेगा। और इसके लिये उसने अपनी इस इच्छा को भी अपनी चाचियों के सामने जाहिर किया। और यदि वह अपने माता-पिता और चाचाओं को कही पर जीन्दा मिल गये तो उन सबको अपने घर पर वापिस लायेगा। उसकी चाचियों को उसके दृढ़संकल्प के बारें में जानकारी जब होगई, तो उन सब ने उसे रोकने के लिये प्रयाश करने लगी। और वह चाहती थी इसका यह विचार बदल जाये, इसके लिये उन्होंने राजकुमार से कहा हम सबने अपने पतियो को-खो दिया है। अपनी बहन को खोदिया, है और उसके पति को भी खो चुकी हूँ। अगर तुम यहाँ से बाहर गए, हो सकता तुम भी खो जाओ तो हम सब किसके सहारे यहाँ पर जीन्दा रहेगे, और क्या करेगे? लेकिन उस लड़के ने अपनी चाचियों उत्तर दिया, मैं तुम सब से प्रार्थना करता हूँ कि तुम सब लोग मुझे निरुत्साहित मत करो, मैं जल्दी ही वापिस आउंगा। अगर यह संभव हुआ तो मैं अपने साथ अपने माता पिता और चाचाओं को भी ले कर आउंगा। तो फिर इस तरह से वह अपनी यात्रा पर चल पड़ा, लेकिन कई महिनो तक वह कुछ भी नहीं समझ सका कि किस प्रकार से वह अपने सम्बंधियों को तालश कर सकता है।

और अंत में जब उसने हजारों किलोमिटर की थकाने वाली यात्राओ कों पुरा कर लिया। और पुरी तरह से लगभग जब वह निराश हो चुका था। उसको अपने माता-पिता और चाचाओं के बारें में किसी प्रकार कि कोई सुचना कही भी प्राप्त नहीं हूई। इसी बीच वह एक ऐसे देश में पहूंचा जो पुरी तरह से पत्थरों का देश था। वड़ी बड़ी चट्टाने, वृक्ष, इसके अतिरिक्त एक बहुत बड़ी पत्थर कि उंची कठोर इमारत थी, जिसके एक किनारे पर एक छोटा-सा मकान था जिसमें एक माली रहता था।

जब वह देख रहा था तभी माली की पत्नी ने उसको देख लिया, और भाग कर अपने घर से बाहर आई और कहा मेरे प्रिय बच्चे तुम कौन हो, और तुम ने इस खतरनाक स्थान पर आने कि हिम्मत के साथ साहस कैसे किया? उस लड़के ने कहा कि मैं एक राजा का बेटा हूँ। और मैं यहाँ अपने पिता और अपने चाचाओं की तलाश में आया हूँ, मेरी माँ को एक दुष्ट जादूगर ने डरा धमका कर कुत्ता बना कर अपने साथ ले गया है।

माली की पत्नी ने कहा कि यह देश और यह स्थान एक महान जादूगर का ही है। उसके पास हर प्रकार की शक्तीयाँ है जो भी व्यक्ती उसकी आज्ञा का उलंघन करता है, या उसका अपमान करता है, तो वह अपनी जादु की शक्ति से उसको पत्थर या वृक्ष बना देता है। यहाँ पर जो तुम सभी प्रकार के वृक्ष और पत्थर देख रहे हो, यह सब कभी जीवीत प्राणी हुआ करते थे। इन सबको हमारे मालिक जादुगर ने

अपने शक्ति से इस रूप में बना दिया है। कुछ समय पहले एक राजा यहाँ आया था। उसके कुछ समय के बाद उसके छः भाई भी यहाँ पर आये थे। और उन सब को जादुगर ने पत्थर और वृक्ष में परिवर्तित कर दिया है। और केवल यही दुर्भाग्यशाली लोग नहीं थे, इसके अतिरिक्त एक बहुत सुन्दर रानी भी है। जिसको इस बड़े इमारत में जादुगर ने कैद कर के रखा है। जिसको उस जादुगर ने पिछले बारह सालों से कैद किया है। क्योंकि वह जादुगर से नफरत करती है, और जादुगर उससे शादी करना चाहता है।

फिर छोटे राजकुमार ने विचार किया, अवश्य ही यह सब मेरे माता-पिता और मेरे चाचा ही है। मैंने उन सब को अन्त में पा हि लिया, जिसके लिये मैं भटक रहा था। इस तरह से उसने अपनी कहानी उस माली की पत्नी से कहा और उससे प्रार्थना के साथ उससे विनती की वह उसकी सहायता करे। इन सब वेकसुर और लाचार लोगों के बारें में और अधिक जानकारी को प्राप्त करने के लिये। और इस अप्रसन्न आदमी के बारे में जिसके बारे में अभी आपने बाताया है और उस माली की पत्नी ने उसका साथ देने का लिये वादा किया। इस तरह से वह दोनो आपस में मित्र बन गये। और माली की पत्नी ने उसको उसका रूप बदलने के लिये सुझाव दिया। क्योंकि जादुगर उसको देखते ही उसे पत्थर में बदल देगा। इस पर राजकुमार तैयार होगया, इस तरह से माली की पत्नी ने उस राज कुमार को अपनी साड़ी को पहना दिया और यह बहाना किया की वह उसकी पुत्री है।

इसके थोड़े समय के बाद ही एक दिन, जैसे ही जादुगर कालीया अपने सुन्दर बगिचे में घुम रहा था। उसने एक छोटी लड़की को देखा (ऐसा उसने विचार किया) जो वहाँ वगिचे में खेल रही थी। तब उस जादूगर ने माली कि पत्नी को अपने पास बुलाया और उससे पुछा कि वह लड़की कौन है? माली कि पत्नी ने कहा कि वह उसकी पुत्री है। इस तरह से जादुगर और उस राजकुमार की पहली मुलाकात होती है। जो एक लड़की के भेष में जादुगर से अपनी पहचान छुपा कर मिलता है। और जादुगर उसको देख कर उसके कहता है, कि तुम बहुत ही सुन्दर हो, कल सुबह तुम मेरा उपहार लेकर बड़ी इमारत में जाओगी, वहाँ रहने वाली सुन्दर औरत के लिये।

छोटा राजकुमार इसको सुनकर बहुत ही खुश हुआ और तुरंत ही वह माली की पत्नी के पास गया। और इसके बारे में उसको बताया। उसके साथ विचार विमर्श करने के बाद उसने निश्चय किया की उसके लिये छद्म भेष में रहना ही फायदेमन्द होगा। और इसी विश्वास के साथ अपनी माँ से कुछ सम्बंध, इसी तरह से स्थापित करने के लिए, अनुकूल अवसरों की संभावना को सुरक्षित रखने के लिए भी यही सुरक्षित होगा, कि वह वास्तव में मेरी माँ है।

जब सुनयना की शादी राजकुमार के साथ हुई थी, तो राजकुमार ने उसको एक छोटी-सी अंगुठी दी थी जिस पर उसका नाम लिखा हुआ था और उस अंगुठी को सुनयना ने अपने पुत्र की अंगुली में पहना दिया था। जब उसका पुत्र छोटा बच्चा था। जब उसका पुत्र समय के साथ बड़ा हुआ तो उसकी चाचियों ने उस अंगुठी का आकार राजकुमार के उंगली के साईज का बनवा कर उसकी उंगली में पहना दिया था। इस तरह से वह अंगुठी अब भी उस राज कुमार ने अपनी उंगलि में पहन रखी थी। माली की पत्नी ने राजकुमार को सुझाव दिया की कुछ ऐसा जो इस गुलदस्ते में छुपा कर रख दो, जिससे तुम्हारी माँ तुमको यथा सिघ्र पहचान जाये । यह सब बिना किसी समस्या या कठिनाइ के संभव

नहीं होगा। जैसा की एक कठोर दरवान हमेंशा वेचारी राजकुमारी की उपर नजर रखता है। (उसे अभी अपने दोस्तों के साथ संचार स्थापित करने का डर भी हो रहा था) यद्यपी माली के पुत्री के रूप में राजकुमार को रोज फुलों का गुलदस्ता अपनी माँ तक पहूंचाने का मौका मिल चुका था। जादुगर की एक दाशी हमेंशा उसकी माँ के कमरें में हर वक्त रहती थी। अन्त में एक दिन किस्मत ने उस राजकुमार का साथ दिया। और उसको एक ऐसा मौका मिल ही गया, जब कमरे में केवल उसकी माँ के अतिरिक्त और कोई दूसरा व्यक्ती नहीं था। और जब कोई भी उसको नहीं देख रहा था तो उसने अपनी उंगली से अंगुठी को निकाल कर उसे फुलों के गुच्छे में बांध कर अपनी माँ सुनयना के कदमो में डाल दिया। इस अंगुठी के जमिन पर गिरते ही एक ठन्न की आवाज हुई, जिसने सुनयना को निचे उस फुल के गुच्छे कि तरफ आकर्षित किया। सुनयना ने देखा ऐसा क्या इन फुलों के अन्दर है? जो यह विचित्र आवाज कर रहा है। जिसमें उसने एक छोटी-सी अंगुठी को फुलों के साथ बंधा हुआ पाया। उस अंगुठी को पहचाने ही उसको अपने पुत्र के द्वारा वताई गई कहानी पर तुरन्त विश्वाश हो गया। कि उसने कितना अधिक खोज करने के बाद उसको प्राप्त कर लिया है। उसे बचाने के लिए कोशिश किया। और अपने जीवन को खतरे में डाल के पुत्र ने अपनी माँ से कहा कि जो भी उसके लिये अच्छा और शुभ हो। जिसके द्वारा वह अपने माता-पिता और चाचाओं को दुष्ट जादुगर कालीये के काले जादु से मुक्त कराने में सफल हो सके। वह उसको बतायो, उसकी माँ ने उससे कहा कि पिछले लंबे बारह सालो सें उस जादुगर ने मुझे इस तरह से कैद कर के इस इमारत के सारे दरवाजो को बन्द कर के रखा है। क्योकि वह मुझसे विवाह करना चाहता है और मैंने उससे विवाह करने से मना कर दिया है। और उसकी दाशी इतनी निकटता से मेरी रक्षा कर रही है, कि उससे रिहाई की मुझे कोई उम्मीद नहीं दिखाई दे रही है।

यद्यपी सुनयना का पुत्र अब बहुत वुद्धिमान और चालाक था, इसलिये उसने अपनी माँ से कहा, जो पहली वस्तु तुमको करनी है, वह यह कि तुम यह पता कर के बताओ कि कालिया जादूगर के जादू की शक्ती का विस्तारा कहा तक है। केवल इसी तरह से हम अपने पिता और चाचा को इस दुष्ट कालीये के काले जादु से मुक्त कराने में सफलता प्राप्त कर सकते है। जो इस समय इसके कैद में पत्थर और वृक्ष के रूप में है। तुमने लंबे बारह सालो तक कालीया जादुगर से केवल क्रोध और कठोरता के साथ ही बात किया है। अब तुम उसके साथ उदारता और प्रेम के साथ बात करो। उसे बताओ कि अपने पति का मैंने इतने लंबे समय तक शोक किया और फिर अब मैं तुमसे शादी करने को तैयार हूँ। फिर पता लगावो की उसकी शक्ति क्या है और क्या वह अमर है? या उसे मार डाला जा सकता है।"

सुनयना ने अपने बेटे की सलाह लेने का निश्चय किया और अगले दिन कालीया जादुगर के लिए संदेश भेजा और उससे बात की, जैसा उसके पुत्र के द्वारा उसको सुझाव दिया गया था।

जादूगर, यह सुन कर बहुत प्रसन्न हुआ, शादी करने के लिए जल्द से जल्द कहा और इसके बाद महल में चलने के लिए अनुमति देने के लिए सुनयना से विनती की, लेकिन उससे सुनयना ने कहा कि इससे पहले कि वह उससे शादी करे, उसको-उसे थोड़े और अधिक समय देना चाहिए। जिससे वह आपस में परिचित हो सकते है और यह कि दुश्मनों के इतने लंबे होने के बाद, उनकी दोस्ती का स्तर भी और मजबूत हो सकता है। "और मुझे बताओ," उसने कहा, "क्या आप पूरी तरह से अमर हैं? क्या

मृत्यु आपको कभी नहीं छू सकती है? और क्या आप मानव जाति को महसूस करने के लिए एक महान जादूगर हैं?"

जादुगर ने कहा ऐसा "तुमने क्यों पूछा?"

"क्योंकि," उसने जवाब दिया, "अगर मैं आपकी पत्नी हूँ, तो मैं आपके बारे में सब कुछ जानना चाहुंगी, यदि कोई आपदा आपके उपर आधमकती है, तो उस पर काबू पाने के लिए, या यदि संभव हो तो इसे टालना।"

"यह सच है," कालीया जादुगर ने कहा, "मैं दूसरों के रूप में नहीं हूँ। दूर से दूर, यहां से सैकड़ों मील की दूरी पर, वहाँ एक जंगल वाला देश है जो घने जंगल से ढंका है। जंगल के बीच में एक गोला है। जहाँ पर केवल ताड़ के पेड़ विद्यमान हैं। और उस ताड़ के वृक्षों के घेरे के केंद्र में छह बड़े पानी से भरे हुए तालाब है, जो एक दूसरे के ऊपर गिरते है, छठे तालाब के नीचे एक छोटा पिंजरा है, जिसमें एक हल्का हरा रंग का तोता है। उसी तोते के जीवन पर मेरा जीवन निर्भर करता है। तोते के मर जाते ही मुझे मरना होगा। हालांकि, जादुगर ने कहा," यह असंभव है कि तोते को किसी भी प्रकार से चोट पहूंचाया जा सके। उस तोतो को सुरक्षित बनाए रखने लिये, मैने दोनों देश को एक दूसरे देश से बहुत दूर कर दिया है। इसके अतिरिक्त उस देश और तोते की रक्षा के लिये मैने हजारों जीन्नो को वहां पर नियुक्त कर दिया है। जो भी उसके पास नजर आयेगा तुरंत मार दिया जायेगा। वहां कोई पहूंच ही नहीं सकता है।

सुनयना ने अपने ने अपने बेटे को दुष्ट कालीया जादुगर के बारे में जो भी जाना था वह सब कुछ उससे बता दिया। लेकिन एक ही समय में उसे तोते को पाने के सभी विचार को छोड़ने के लिए भी अपने पुत्र को मजबूर किया।

राजकुमार ने जवाब दिया, "माँ, जब तक मैं उस तोते को पकड़ नहीं लेता, तुम और मेरे पिता और चाचा मुक्त नहीं हो सकते, डरो मत, मैं जल्द ही वापस आऊंगा। क्या आप इस बीच में जादूगर को अच्छे हास्य-के साथ अब भी तुम उसके साथ विवाह पर अपने विवाद चालु रख सकती हो? और इससे पहले कि वह देरी के कारण का पता लगाए, मैं यहाँ आ जाउंगा।" यह कह कर, वह चला गया।

थकाने वाले की सैकड़ों मिल की यात्रा करने के बाद राजकुमार, आखिर में एक बहुत घने जंगल में पहूंचा, तब तक वह बुरी तरह से थक चुका था। जिसके कारण वहीं पर एक बड़े छाया दार वृक्ष के निचे बैठ कर आराम करने लगा, जहाँ पर उसको कुछ ही समय में सुन्दर मनोरम हवावों के झोकों के कारण निद्रा आगई। उसकी निद एक मधुर स्वर ध्वनियों के सुनने कारण खुल गई। और वह राजकुमार जहाँ से ध्वनी आ रही थी उस तरफ देखा, जहाँ पर उसके निगाह के सामने एक विशाल सर्प जो उस पृक्ष पर चढ़ने का प्रयाश कर रहा था। जिस वृक्ष के निचे राजकुमार सोया हुआ था, उसी वृक्ष के उपर शाखाओं पर एक चिल जोड़े ने अपना घोसला बना रखा था। जिसमें उस चिल के दो छोटे बच्चे बैठे हुए थे। जब राजकुमार ने उन चिल के दो निर्दोष बच्चे पर आने वाले संभावित खतरें को देखा, तत्काल

राजकुमार ने अपनी तलवार को निकाला और सर्प के टुकड़े कर के मार दिया। ठीक उसी समय राजकुमार ने हवा में सरसराहट की आवाज को सुना। जिसके साथ दो वृद्ध चिल राजकुमार के सामने आकर खड़े हो गए। जो अपने बच्चों के लिये भोजन लाने के लिये शिकार पर गये थे, अपने बच्चों को घसलें में छोड़ कर, उन्होंने जल्दी ही मरे हुए सर्प को देखा और उसके ही समिप पर खड़े हुए राजकुमार को भी देखा। और उन चिलों में से वृद्ध चिलों की माँ ने राजकुमार से कहा प्रिय पुत्र यह क्रुर निर्दई सांप पिछले कई सालों से इसी तरह से मेरे निर्दोष बच्चों खा कर अपना पेट भरता था। लेकिन तुमने आज मेरे बच्चों का जीवन बचा लिया सांप को मार कर, जब भी तुमको किसी प्रकार कि ज़रूरत पड़े, तुम हमें याद करना और हम तुम्हारी सेवा के लिये अवश्य उपस्थित होगे। और तुम इन दोनो हमारे बच्चों को अपने साथ ले जाओ अपने सेवक की तरह से, इस पर राजकुमार बहुत अधिक प्रसन्न हुआ। और इसके बाद उन दो चिलो ने अपने पंखों को फैलाया कर उस पर राजकुमार को बैठा लिया। और उसे ले कर वह आकाश मार्ग से यात्रा करने लगे। वह उस राज कुमार को बहुत दूर तक अपने पंखो पर बैठा कर ले गये। जब वह उस घने जंगल में पहूंच गए, जहाँ पर गोल घेरे में उगे हुए बहुत सारे ताड़ के पेड़ कतार से खड़े हुऐ थे। आकाश में अपने सर को उठाये हुए. उनके मध्य में छः पानी से भरे तालाब भी थे। यह दिन के दोपहर का समय था और इस समय गर्मि बहुत अधिक पड़ रही थी। चारों तरफ वृक्षों पर बैठे सभी जीन, राक्षस और शैतान निर्द्वन्द निसंक हो कर गहरी निद्रा में सो रहे थे। वे सब अनगिनत हजारों की संख्या में थे, यह किसी भी व्यक्ती के लिये असंभव था कि कोई व्यक्ती इन दैत्यों और शैतानो से आमने सामने की लड़ाई करके इनको परास्थ कर पाये। इसी बिच चिल अपने मजबुत पंखों के साथ निचे कि तरफ उतरने लगे, जब वह जमिन से थोड़ा ही उपर थे तभी राजकुमार चिल के पंख से निचे जमिन पर कुद पड़ा। और चिलो के साथ मिलकर राजकुमार ने केवल एक ही प्रयाश में उन सभी छ पानी से भरे तालाबों को प्रदुषित कर दिया, औऱ उसके अन्दर से जाने वाली सिढ़ियों से हो कर राजकुमार उस हल्के रंग वाले सुग्गे के पास पहूंच गया। और उस सुग्गे को कपड़े में लपेट कर अपने लबादे की जेब में डाल लिया। और जैसे ही राजकुमार चिल के पंखों पर सवार हो कर आकाश मार्ग से अपनी यात्रा को चला, तभी निचे सभी जिन अपनी निद्रा से जाग गये। और वह सब चिल्लाने लगे, उन सब में अफर-तफरी मच गई। जब उन्होंने पाया की उनका खजाना गायब हो चुका है, जिसके साथ ही एक जंगली और उदासीन चीख़ की जंगल में स्थापना हुई।

बहुत दूर सैकड़ों मिल की यात्रा में उड़ने के बाद वह चिल अपने उस घर पर आगये। जहाँ पर वह विशाल वृक्ष था, जिस पर उनका घोसला बना हुआ था। फिर राजकुमार ने वृद्ध चिलों से कहा कि आप अपने इन छोटे चीलों को वापिस ले लीजिए। इन्होंने मेरे लिये बहुत अच्छा कार्य किया है। अगर मुझे कभी इनकी ज़रूरत पड़ी तो मैं अवश्य इनकी सेवा को लुगा। और आपसे सहायता लेने में कभी भी नहीं हीचकुंगा। फिर राजकुमार ने अपने पैरों के द्वारा अपनी यात्रा को शुरु कर दिया। और तब तक चलता रहा जब तक कि वह एक बार पुनः दुष्ट जादुगर कालीया के महल तक नहीं पहूंच गया। और वहाँ महल के दरवाजे के पास निचे वगिचे में बैठ कर सुग्गे के साथ खेलने लगा। जादूगर कालीया ने उसे अपने महल की खीड़की से देखा और तुरन्त भाग कर वह राज कुमार के पास आया। और कहा मेरे बच्चे तुम ने इस सुग्गे को कहा पर पाया? तुम इस सुग्गे को मुझको दे दो ,इसके लिये मैं तुमसे विनती करता हूँ।

लेकिन राजकुमार ने उत्तर दिया जादुगर को, ओह नहीं मैं अपने सुग्गे को तुमको नहीं दे सकता हूँ। यह कई सालों से मेरा प्रिय पालतु पक्षी है। फिर जादुगर ने कहा अगर यह तुम्हारा पुराना मनपसंद पक्षी है, तो मैं समझ सकता हूँ कि तुम इसको मुफ्त में नहीं दोगो, तो तुम स्वयं कि बताओ इस सुग्गे की क्या किमत लेना चाहते हो?

राजकुमार ने कहा साहब मैं अपने इस प्यारे सुग्गे को बेच भी नहीं सकता हू।

इससे जादुगर कालिया बहुत अधिक भयभित होगया, और कहा कि तुम इसके बदले में मुझसे कुछ भी ले सकते हो वश मुझे तुम यह सुग्गा दे दो। तब राज कुमार ने कहा ठीक है, तो सबसे पहले उन सात राजाओं को मुक्त करो जिसको तुमने पत्थल और वृक्ष बनाया है।

जादुगर ने कहा चलो ठिक तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो, तुम केवल मुझे यह सुग्गा दे दो, इसके साथ ही सुनयना के पति समेत और दूसरे उसके छः राजा भाई अपने प्राकृतिक रूप में वापिस आगये। फिर कालिया जादुगर ने कहा मुझे यह सुग्गा अब दे दो।

लेकिन राजकुमार ने कहा इतना जल्दी भी क्या है? पहले तुम उन सभी लोगों को आजाद करों जिसको भी तुमने अपने कैद में रखा। कालिया जादुगर ने कहा ठीक है, और उसने अपनी छड़ी को घुमाया सब के सब प्राणी जो कभी पत्थर और वृक्ष थे वह सब अपने-अपने प्राकृतिक शरीर में वापिस आगये।

फिर जादुगर ने अपने हाथ जोड़ कर रोते हुए विनती किया, राजकुमार से की अब तो तुम मुझे यह सुग्गा दे दे, इसके साथ वह पुरा का पुरा वगिचा जो कुछ समय पहले पत्थरों और वृक्षो से भरा था। वह चारो तरफ मानव जीवन की खुशबु से आलोकित होने लगा। सब कुछ जीवीत होगया था। और शांसे लेने लगा था, राजा, पंडित, नौकर, चाकर, सेवक, सरदार, घोड़े, हाथी, सैनिक इत्यादी और घोड़े चलाने के लिए ताकतवर पुरुष, आभुषणो से सुसज्जीत और सशस्त्र अभिकर्ताओं के साथ सैनिक टुकड़िया भी।

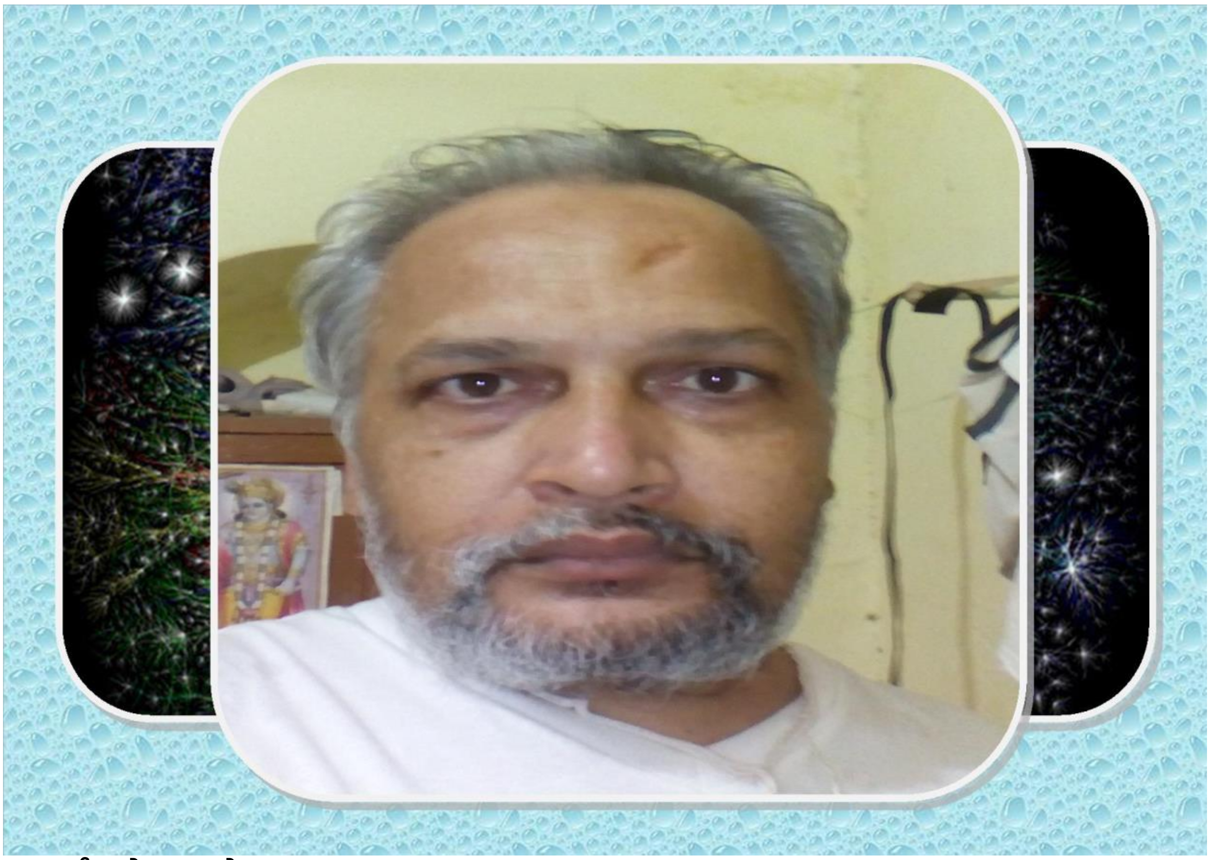
जादुगर ने रोते हुए फिर कहा कि मुझे यह सुग्गा अब दे दो, राजकुमार ने सुग्गे को और शक्ति से पकड़ लिया और उसके एक पंखे को जोर लगा कर उसके शरीर से अलग कर दिया, इसके साथ ही दाहिना हाथ जादुगर कालीया का भी उसके शरीर से अलग गया।

फिर जादूगर कालीया ने अपने बायें हाथ को फैला कर राजकुमार से विनती की मुझ यह सुग्गा दे दो, राजकुमार ने सुग्गे के बायें पंख को उसके शरीर से उखाड़ कर कालीया के समिप फेक दिया। जिसके साथ जादुगर का भी बायाँ हाथ उसके शरीर से उखड़ कर दूर जा गिरा।

मुझे मेरा सुग्गा दे दो यह कहते हुऐ कालिया जादुगर अपने घुटनों पर गिर पड़ा, राजकुमरा ने सुग्गे के पहेल दायें फिर बायें पैर को उसके शरीर से उखाड़ दिया, जिसके साथ कालीया जादुगर का भी दोनो पैर उसके शरीर से उखड़ कर उससे दूर जा पड़े।

जब कालीया जादूगर के शरीर का कोई अंग उसके साथ नहीं रहा तो वह अपनी आखों को घुमाते हुए, और रोतो हुऐ कहा कि मुझे मेरा सुग्गा मुझे दे दो, राजकुमार ने सुग्गे का सर पकड़ कर मरोड़ दिया, जिससे उस सुग्गे के प्राण पखेरु उसके शरीर से बाहर निकल गये। इसके साथ ही राजकुमार ने वह सुग्गा कालीया जादुगर के पास फेंक दिया लेकिन जादुगर कालिया के भी प्राण पखेरु भी एक भयंकर गुर्गुराहट के साथ उसके नस्वर शरीर को छोड़ कर जा चुके थे जिससे वह मर चुका था।

इसके बाद राजकुमार के पिता ने अपनी पत्नी सुनयना को बड़ी इमारत से मुक्त किया। और इस तरह से राजकुमार अपने सभी सम्बधियों के साथ अपने देश के लिये प्रस्थान किया और दूसरे सभी लोग भी अपने-अपने देश और नगर घर की तऱफ चल पड़े।



आचार्य मनोज पाण्डेय

Gyanvigyanbrhamgyan98@gmail.com

Manojpandey94@gmail.com

09467557954, 7084768943